वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
कोटा

एम.जे.एम.सी. 4
जनसंचार के सिद्धांत
(Principles of Mass Communication)

जनसंचार के सिद्धांत- 3

पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
(Master of Journalism & Mass Communication)

जनसंचार के सिद्धान्त

3

एम.जे.एम.सी.–4

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
कोटा

जनसंचार के सिद्धान्त
(Principles of Mass Communication)

पत्रकारिता एवं जनसंचार
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

जनसंचार के सिद्धान्त-3

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

* **प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा**
  कुलपति
  कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा
  (अध्यक्ष समिति)
* **प्रो. अब्दुल वहीद खान**
  निदेशक (विकास एवं प्रशिक्षण)
  काकॉमनवेल्थ ऑफ लर्निग 1285 वेस्ट ब्राइवे
  सूट 6000, वैंक्वर (कनाडा)
* **राधेश्याम शर्मा**
  पूर्व - महानिदेशक
  माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
  विश्वविद्यालय, भोपाल(म. प्र.)
* **डॉ. ओ.पी. केजरीवाल**
  निदेशक, नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एण् लाइब्रेरी
  तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली
* **प्रो. ए.के. बनर्जी**
  पूर्व - अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग
  बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
  वाराणसी
* **प्रो. जे.एस. यादव**
  निदेशक
  भारतीय जनसंचार संस्थान
  नई दिल्ली
* **डॉ. भंवर सुराणा**
  ब्यूरो चीफ/ विशेष संवाददाता
  दैनिक हिन्दुस्तान
  जयपुर
* **डॉ. रमेश जैन**
  अध्यक्ष - जनसंचार विभाग
  कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक

डॉ. रमेश जैन- अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ-संपादक एवं भाषा-संपादक

पाठ एवं भाषा संपादक
डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो.(डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो. (डॉ.) एम.के. घड़ोलिया**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक (अकादमिक)	प्रभारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : अप्रैल 2012

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा 'मिमियोग्राफी' (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है|

कुलसचिव व.म.खु.विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित ।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

एम. जे. एम. सी. -4

जनसंचार के सिद्धान्त

पाठ्यक्रम - चतुर्थ
खण्ड - (3)

3

इकाई 9 जनसंचार के सिद्धान्त भाग - 1	7–26
इकाई 10 जनसंचार के सिद्धान्त भाग - 2	27–44
इकाई 11 संचार की प्रकृति एवं विधि	45–64
इकाई 12 संचार के प्रकार, व्यक्ति और जनसंचार	65–83

पाठ लेखक

1. **डॉ. जवरीमल्ल पारख**
   रीडर, हिन्दी विभाग
   इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
2. **डॉ. पवन अग्रवाल**
   हिन्दी विभाग
   लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
3. **महेश्वरदयालु गंगवार**
   परिष्ठ पत्रकार
   सदस्य-भारतीय प्रेस परिषद,
   सचिव, नेशनल यूनियन आफ जर्नलिस्ट
   नई दिल्ली
4. **अतुल अथइया**
   स्वतंत्र पत्रकार
   मंडावा (राजस्थान)
5. **डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ**
   पूर्व सहआचार्य-हिन्दी विभाग
   सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
6. **डॉ. रमेश जैन**
   अध्यक्ष-जनसंचार विभाग
   कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा
7. **डॉ. मुक्तिनाथ झा**
   वाराणसी

खंड एवं इकाई परिचय

खंड परिचय

जनसंचार के खंड-3 में जनसंचार के सिद्धान्त भाग-1, जनसंचार के सिद्धान्त भाग-2, संचार की प्रकृति एवं विधि, संचार के प्रकार, व्यक्ति और जनसंचार इकाईयां हैं । ये चारों इकाइयां जनसंचार के सिद्धान्तों, प्रकृति, प्रकार, विधि, प्रकार आदि पर यथेष्ट एवं प्रमाणिक जानकारी देती हैं ।

इकाई परिचय

इकाई 9 'जनसंचार के सिद्धान्त भाग - 1' की है । प्रस्तुत इकाई जनसंचार के सिद्धान्त: आधार और विकास, जनसंचार की विद्युतीय प्रक्रिया, जनसंचार और माध्यम, जनसंचार की प्रक्रिया, जनसंचार के स्रोत, जनसंचार और संदेश आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डालती हैं ।

इकाई 10 'जनसंचार के सिद्धान्त - भाग - 2' से सबध्द है । इस इकाई में जनसंचार के विभिन्न सिद्धान्तों, संप्रेषणीय सिद्धान्त, अर्थगत सिद्धांत, सामाजिक सिद्धांत, सांस्कृतिक सिद्धांत आदि की विवेचना की गई है ।

इकाई 11 'संचार की प्रकृति एवं विधि' की है । प्रस्तुत इकाई में 'संचार की प्रकृति' के अंतर्गत-संचार का तात्पर्य, मानव संचार के तत्व, संचार से जनसंचार तक आदि तथ्यों के बारे में बताया गया है । इसके अतिरिक्त संचार का विकास, संचार की विधि, पर व्यापक प्रकाश डाला गया है ।

इकाई 12 'संचार के प्रकार, व्यक्ति और जनसंचार' है । इसमें संचार के प्रकार और व्यक्ति और जनसंचार के विभिन्न पहलुओं की विवेचना की गई है ।

आशा की जाती है की 'जनसंचार के सिद्धांत-3' की विभिन्न इकाइयों के अध्ययन के बाद आप जनसंचार के विभिन्न सिद्धांतों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

इकाई 9 जनसंचार के सिद्धांत (भाग-1)

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 जनसंचार के सिद्धान्त: आधार और विकास
9.3 जनसंचार की विद्युतीय प्रक्रिया
9.4 जनसंचार और माध्यम
9.5 जनसंचार की प्रक्रिया
9.6 जनसंचार के स्त्रोत
9.7 जनसंचार और संदेश
9.8 जनसंचार के श्रोता, पाठक और दर्शक
9.9 सारांश
9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
9.11 निबन्धात्मक प्रश्न

9.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप जनसंचार के सिद्धांतों का अध्ययन करेंगे । इकाई के अध्ययन के बाद आप

- जनसंचार के सिद्धान्तों के आधार और उनके विकास का परिचय प्राप्त करेंगे ।
- जनसंचार की विद्‌युतीय प्रक्रिया को समझ सकेंगे ।
- जनसंचार और उसके लिए आवश्यक माध्यमों का उल्लेख कर सकेंगे ।
- जनसंचार के विभिन्न स्त्रोतों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- जनसंचार और उससे संप्रेषित होने वाले संदेशों का अंत:संबंध समझ सकेंगे ।
- जनसंचार के साथ श्रोता, पाठक और दर्शक के संबंधों को समझ सकेंगे ।

9.1 प्रस्तावना

जनसंचार के सिद्धांतों के अध्ययन से संबंधित इकाई नौ में आप जनसंचार के सिद्धांतों के आधार और विकास का परिचय प्राप्त करेंगे । जनसंचार के सिद्धांत कैसे अस्तित्व में आते हैं । क्या उनमें परिवर्तन होता रहता है और अगर परिवर्तन होता है तो उसका आधार क्या होता है, ऐसे कई सवाल हैं जो जनसंचार के सिद्धांतों से संबंधित हैं और जिनके बारे में आप इस इकाई में अध्ययन करेंगे । जनसंचार के विभिन्न सिद्धांत कौन-कौन से हैं इसके बारे में आप इकाई- 10 में अध्ययन करेंगे ।

जनसंचार के सिद्धांतों के अध्ययन को जनसंचार के विभिन्न तत्वों और पक्षों के संदर्भ में ही समझना होता है । जनसंचार के विकास का संबंध उस तकनीकी विकास से है जिसका संबंध विद्‌युत ऊर्जा से । इसलिए जनसंचार के सिद्धांत के अध्ययन के लिए जरूरी है कि हम उस विद्‌युतीय प्रक्रिया को समझें जिसके बिना जनसंचार के आधुनिक माध्यमों का अस्तित्व संभव नहीं था ।

जनसंचार के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है । जनसंचार के संदर्भ में माध्यम का क्या तात्पर्य है ? क्या सभी जनसंचार में एक ही तरह के माध्यम की आवश्यकता होती है या माध्यमों की भिन्नता से जनसंचार में भिन्नता आती है ? माध्यम का निर्धारण कैसे होता है और उससे जनसंचार की अंतर्वस्तु पर क्या प्रभाव पडता है? ये और इसी तरह के कुछ सवालों का अध्ययन हम इस इकाई में करेंगे ।

जनसंचार के माध्यमों के फर्क के अनुसार उसकी प्रक्रिया में भी अंतर आता है । समाचारपत्र, रेडियो और सिनेमा में एक सी प्रक्रिया नहीं होती । हाँ उनमें कुछ बुनियादी एकता जरूर होती है लेकिन उनमें प्रक्रियागत भिन्नता भी होती है । ये भिन्नता किस तरह निर्धारित होती है और उससे जनसंचार माध्यमों पर क्या प्रभाव पडता है इस पर भी हम इस इकाई में विचार करेंगे ।

जनसंचार के सिद्धांतों के निर्धारण में उन स्त्रोतों की भी भूमिका होती है जो जनसंचार के स्वरूप को प्रभावित करते हैं । जनसंचार के ये स्त्रोत कौन-कौन से हैं और क्या अलग- अलग माध्यमों में ये स्त्रोत भी अलग-अलग होते हैं, इस पहलू पर भी विचार करने की जरूरत है । जनसंचार के विभिन्न स्त्रोतों की पड़ताल करते हुए जनसंचार के सामाजिक संदर्भो पर भी विचार करना होगा ।

जनसंचार के सभी माध्यम तभी तक अर्थवान है जब तक कि वे अपने ग्रहीताओं तक पहुँचते हैं। समाचारपत्र के पाठक, सिनेमा के दर्शक और रेडियो के श्रोता क्या जनसंचार के सिद्धांतों के निर्माण में भूमिका अदा करते हैं? क्या सभी तरह के माध्यमों के ग्रहीता एक से होते हैं । क्या प्रत्येक माध्यमों के पास एक ही तरह की जरूरत से प्रेरित होकर जाता है? इन सवालों के संदर्भ में ही हम जनसंचार माध्यमों के सिद्धांतों के अध्ययन का आधार प्राप्त कर सकेंगे ।

इस इकाई में जनसंचार के सिद्धांत के विभिन्न पहलुओं का हम परिचय प्राप्त करेंगे ताकि अगली इकाई में हम जिन सिद्धांतों की चर्चा करने जा रहे हैं उनको सही परिप्रेक्ष्य में समझ सकें ।

9.2 जनसंचार के सिद्धांत : आधार और विकास

जनसंचार के सिद्धांत पर विचार करने से पहले हमें यह समझना होगा कि जनसंचार के सिद्धांत का आधार क्या है ? जनसंचार के माध्यम में तीन शब्द महत्वपूर्ण हैं - जन, संचार और माध्यम । संचार का वह माध्यम जो व्यापक जनसमूह के लिए हो उन्हें हम, जनसंचार माध्यम कह सकते हैं। यहां यह प्रश्न उठ सकता है कि व्यापक जनसमूह से क्या तात्पर्य है? यहां एक उदाहरण से इस बात को समझ सकते हैं । जब रहमान रेडियो पर समाचार सुनता है, तो वह समाचार बुलेटिन सिर्फ रहमान के प्रति प्रसारित नहीं हो रहा है, वह उन लाखों लाख लोगों के लिए भी प्रसारित हो रहा है जो अपने-अपने रेडियो सेटों पर उस समाचार को सुन रहे हैं या नहीं सुन रहे हैं । लेकिन वही रहमान जब टेलीफोन पर अपने पिता से बात करता है तो वह बात सिर्फ उसके और उसके पिता के लिए है, वह उन लाखों लाख लोगों के लिए नहीं है जिनके घर पर भी टेलीफोन है । संचार के ये दोनों माध्यम व्यापक जनसमूह के लिए उपलब्ध होते हुए भी क्या दोनों को जनसंचार कह सकते हैं? नहीं । रेडियो जनसंचार का माध्यम है क्योंकि वहां से जो संदेश प्रसारित हो रहा है वह किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं है वह उन सभी के लिए है जिनके पास उस संदेश को ग्रहण करने के लिए जरूरी साधन उपलब्ध हैं । जब कोई दर्शक सिनेमाघर में फिल्म देखने आता है जब वह फिल्म सिर्फ उसके लिए नहीं बनाई गई होती वह उन सभी के लिए होती है जो उसे देखना चाहते हैं । यही बात टेलीविजन के कार्यक्रमों पर लागू होती है । इसका

तात्पर्य यही है कि जनसंचार माध्यम उसी को कहेंगे जो एक साथ व्यापक जनसमूह के लिए संदेशों का संप्रेषण करता हो । इस दृष्टि से विचार करने पर हमारे सामने कई तरह के जनसंचार माध्यम उपस्थित हो जाते हैं । मुद्रित माध्यय जिनमें समाचारपत्र, पत्रिकाएं और पुस्तकें आ जाती हैं । इनसे संप्रेषित संदेश को व्यक्ति पढ़कर ग्रहण करता है । दूसरा श्रव्य माध्यम रेडियो है जिसे व्यक्ति सुनकर ग्रहण करता है । तीसरा दृश्य माध्यम है, जिसके अंतर्गत सिनेमा और टेलीविजन आते हैं और जिनको व्यक्ति देखकर और सुनकर ग्रहण करता है । जनसंचार का आधुनिकतम माध्यम इंटरनेट है जिसमें उपर्युक्त तीनों तरह के माध्यमों को एक साथ ग्रहण किया जा सकता है । यही नहीं इंटरनेट पर संचार के वैयक्तिक माध्यम भी उपलब्ध हो जाते हैं ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जनसंचार माध्यम के लिए अनिवार्य शर्त उसका व्यापक जनसमूह के लिए उपलब्ध होना है । लेकिन उपर्युक्त बातचीत से ही हमारे सामने कुछ और बातें भी उभर कर आई है । हम देखते हैं कि सभी माध्यम संदेशों का प्रसारण करते हैं । दूसरे शब्दों में संदेशों का प्रसारण करने के कारण ही वे संचार के माध्यम हैं । मुद्रित माध्यम में यह लिखित शब्दों द्वारा, श्रव्य माध्यम में यह आवाज और ध्वनियों द्वारा और दृश्य माध्यम में दृश्य और आवाज दोनों माध्यमों से । क्या इससे संदेश की प्रकृति पर असर पड़ता है ? क्या एक ही संदेश को इन तीनों तरह के माध्यमों में एक ही तरह से भेजा जा सकता है ? यदि नहीं, तो माध्यम के अनुसार संदेश में परिवर्तन करने से संदेश के मूल मंत्वय पर भी असर पड़ेगा ?

जनसंचार माध्यमों के संदर्भ में तीसरा अहम् सवाल यह पैदा होता है कि क्या इन माध्यमों दारा कोई भी संदेश भेजा जा सकता है । समाचारपत्र हो या रेडियो या टेलीविजन हम जानते हैं कि इन माध्यमों के लिए कई तरह के यंत्रों की आवश्यकता होती है जिनके उपयोग के लिए कुशल तकनीशियनों की जरूरत होती है । यही नहीं संदेशों के उपयुक्त प्रसारण के लिए भी कुशल व्यावसायिकों की आवश्यकता होती है । क्या इनके बिना संदेश प्रसारित किया जा सकता है? फिर सवाल यह भी पैदा होता है कि इन यंत्रों को कौन उपलब्ध कराएगा? सरकार, उद्योगपति या कोई भी सामान्य नागरिक? इसके लिए आवश्यक धन जुटाना, कुशल तकनीशियनों और निष्पादनों (परफोर्मर) की सेवाएं प्राप्त करना और व्यापक प्रसारण क्षेत्र बनाने के लिए संजाल स्थापित करना जनसंचार के लिए जरूरी काम है । क्या इन सब बातों का जनसंचार की प्रकृति पर असर पड़ता है ।

जनसंचार से संप्रेषित होने वाले संदेश का तब तक कोई मतलब नहीं है जब तक कि वह ज्यादा से ज्यादा लोगों तक न पहुँचे और वे उस संदेश को प्राप्त करने के इच्छुक न हो । क्या संदेश की प्रकृति इस बात से निर्धारित होती है कि उसे किन लोगों तक पहुँचना है? या संदेश अपने में पूरी तरह स्वतन्त्र होते हैं? क्या संदेश के संप्रेषण में लगे निष्पादक उसके मूल मंतव्य को प्रभावित करते हैं ? क्या जिस माध्यम से संदेश भेजे जा रहे हैं वह प्रौद्योगिकी भी संदेश को प्रभावित करती है? ये और ऐसे कई सवाल है जो संदेश के ग्रहीता चाहे वह पाठक हो या श्रोता या दर्शक के संज्ञान पर निर्भर करती है ।

जनसंचार माध्यमों से प्रसारित होने वाले संदेश लोगों को किस हद तक प्रभावित करते हैं? क्या जनसंचार माध्यम इतने अपरिहार्य हो गये हैं कि लोगों का इसके बिना काम नहीं चल सकता? वे जनसंचार का उपयोग क्यों करते हैं? सूचना के लिए, शिक्षा के लिए या सिर्फ मनोरंजन के लिए? जो सूचना इन माध्यमों द्वारा भेजी जाती हैं क्या वे पूरी तरह वस्तुपरक और निष्पक्ष होती है? क्या

मनोरंजन स्वस्थ और समाज के लिए हितकारी होता है? क्या सभी नागरिकों को जनसंचार माध्यम समान रूप से उपलब्ध है ताकि वे उससे मिलने वाली सूचनाओं, शिक्षाओं और मनोरंजन में भागीदार बन सकें ? भारत जैसे देश में जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता की सीमाएं हमारे सामने उजागर है। समाचापत्र सिर्फ शिक्षित समाज को उपलब्ध है । टेलीविजन महंगा माध्यम है । टेलीविजन सेट खरीदना अभी भी अधिकांश आबादी के लिए स्वप्न की तरह है । ये साधन सिर्फ मध्यमवर्ग तक सीमित है । ऐसे में जनसंचार माध्यमों से प्रसारित संदेश सभी तक कैसे पहुँच सकते हैं?

उपर्युक्त विवेचन से साफ है कि जनसंचार माध्यम के बारे में कोई भी सिद्धांत तब तक महत्वपूर्ण नहीं हो सकता जब तक कि वे इन सवालों से दो-चार नहीं होते । ये सवाल निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित है -

1. जनसंचार किस तरह की प्रौद्योगिकी पर आधारित है?
2. जनसंचार से संबंधित यंत्रों, संस्थानों और सेवाओं पर किसका अधिकार है और उस अधिकार की प्रकृति क्या है?
3. जनसंचार से किस तरह के संदेश भेजे जाते हैं और किनके लिए?
4. जनसंचार लोगों पर किस तरह का प्रभाव डालते हैं? वह उनके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को कैसे प्रभावित करता है? क्या आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियां जनसंचार माध्यमों को प्रभावित करती है?
5. क्या जनसंचार भी अपने ग्रहीताओ से प्रभावित होता है?
6. जनसंचार माध्यमों से जो संदेश भेजा जाता है, उसे कौन निर्धारित करता है? प्रौद्योगिकी, निष्पादक, ग्रहीता और तत्कालीन राजनीतिक- आर्थिक व्यवस्था?

जनसंचार के सिद्धांतों पर विचार करते हुए ये सभी सवाल सहज ही उपस्थित हो जाते हैं । क्या सिद्धांत निर्माण की प्रक्रिया इन सवालों से टकराए बिना पूरी हो सकती है? प्रश्न सिर्फ यह है कि आप उपर्युक्त सवालों में से किन्हें ज्यादा जरूरी समझते हैं? अगर आपकी नजर में जनसंचार माध्यम संदेशों को भेजने के विभिन्न साधनों का समुच्च है और उसी नजर से इसे देखा जाना चाहिए तो आपके लिए इस बात का ज्यादा महत्व नहीं होगा कि संदेश किस तरह का है, उससे समाज और संस्कृति पर क्या असर पड़ेगा? अगर आपकी नजर में जनसंचार एक विकासमान उद्योग है तो आप सिर्फ इस पक्ष पर विचार करेंगे कि इन माध्यमों को एक व्यवसाय के रूप में कैसा सफल बनाया जा सकता है? तब भी आप सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक सवाल नहीं उठाएंगे । लेकिन आपके विचार में जनसंचार माध्यम एक सामाजिक माध्यम है तो आप इसके समाज पर पड़ने वाले प्रभावों पर अवश्य विचार करेंगे। इसी तरह अगर आपके विचार में जनसंचार माध्यमों से जो संदेश उत्पादित होते हैं वे सांस्कृतिक उत्पाद हैं तो आप उस पर सांस्कृतिक दृष्टि से विचार करेंगे । जनसंचार माध्यमों के अध्ययन के इन चारों पहलुओं का महत्व है और सिद्धांतों के अध्ययन को भी हम इन चार भागों में बांट सकते हैं ।

उपर्युक्त चार पहलुओं में से प्रत्येक पहलू अपने में कई प्रश्नों और पक्षों को अपने में समेटे होता है । उदाहरण के लिए यदि हम सिर्फ जनसंचार माध्यम को संदेश भेजने के साधन के रूप में देखते हैं तो भी उससे जुड़ी प्रौद्योगिकी, संदेश भेजने की पद्धति, तकनीशियनों और निष्पादकों की भूमिका संकेत प्रणाली, माध्यम की विशिष्टता आदि कई सवाल हमारे सामने आ खड़े होते हैं । मसलन, सिनेमा

और टेलीविजन दोनों दृश्य माध्यम हैं । लेकिन दोनों की प्रकृति एक सी नहीं है । फिल्म को हम सिनेमाघर में जाकर देखते हैं और टेलीविजन को हम घर पर देखते हैं । सिनेमाघर में फिल्म अंधेरे में एक बड़े से सफेद पर्दे पर देखते हैं जहां दृश्यों का आकार अपने वास्तविक आकार से बड़ा होता है जबकि टेलीविजन को हम घर के किसी भी कमरे में बिना अंधेरा किए टेलीविजन सेट पर देखते हैं और उसमें दृश्य अपने वास्तविक आकार से हमेशा छोटे होते हैं । क्या तकनीकी का यह फर्क दोनों के संदेश की प्रकृति और ग्रहीता पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रभावित नहीं करेगा?

जनसंचार के सिद्धांतों का निर्माण और विकास इन माध्यमों के विकास से जुड़ा है । जनसंचार माध्यमों के विकास का संबंध आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास से है । विद्युत ऊर्जा की खोज ने ही जनसंचार माध्यमों के विकास को संभव बनाया है । प्रेस की स्थापना हो या ब्रॉडकास्टिंग । इनका विकास का संबंध तकनीकी विकास से काफी गहरा है । इस क्षेत्र में जो परिवर्तन हुए उसने नए माध्यम भी विकसित किए और पुराने माध्यमों के स्वरूप को भी बदला । एक ओर जनसंचार माध्यमों में मुद्रित माध्यम, श्रव्य और दृश्य माध्यमों का विकास हुआ तो दूसरी ओर स्वयं प्रेस की तकनीकी आज पूरी तरह बदल चुकी है । इसी प्रकार सिनेमा वह नहीं रहा है जिसे ल्युमिए बंधुओं ने आरंभ किया था । कहने का तात्पर्य यह है कि जनसंचार माध्यमों के विकास ने उसके सिद्धांतों पर भी असर डाला । जनसंचार माध्यमों के फैलते प्रभाव और व्यापक होती भूमिका ने भी जनसंचार माध्यमों के सिद्धांतों को प्रभावित किया है । आज सूचना प्रौद्योगिकी, मनोरंजन और कंप्यूटर अपने स्वतंत्र उद्योग बन गए हैं । इसने कई सिद्धांतकारों को यह सोचने के लिए मजबूर किया है कि क्या इसका असर विश्व की आर्थिक-सामाजिक स्थिति पर भी पडेगा । भूमंडलीयकरण की जिस धारणा की आज चारों ओर चर्चा है उसका गहरा संबंध इस सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार से काफी गहरा है । सूचना प्रौद्योगिकी की नवीनतम उपलब्धियों ने दुनिया को गाँव में बदल दिया है और अब विश्व ग्राम की बात की जाने लगी है ।

लेकिन इसके साथ ही यह भी एक सच्चाई है कि इस नयी प्रौद्योगिकी की पहुंच सभी देशों और सभी समाजों के सभी लोगों तक समान रूप से नहीं है । दुनिया की अधिकांश आबादी इस विश्व ग्राम से बाहर है । ऐसी स्थिति में क्या जनसंचार माध्यमों पर कोई भी विमर्श इस अंतर्विरोधी स्थितियों की उपेक्षा करके संभव है । इस प्रकार जनसंचार माध्यम से प्रसारित होने वाले संदेश की अभिव्यक्ति से जुड़ा प्रश्न भी है । क्या इन माध्यमों के जरिए किसी भी व्यक्ति को कुछ भी संप्रेषित करने का अधिकार है? हम आमतौर पाते हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न इतना सरल नहीं होता । लोकतांत्रिक समाजों में भी किसी न किसी बहाने सरकारें लोगों की अभिव्यक्ति के अधिकारों को दबाती रहती हैं । ऐसे में जनसंचार माध्यमों को बाहरी दबावों से मुक्त रखकर लोगों की बौद्धिक और आत्मिक जरूरतों में किस हद तक सहायक हो सकता है इसे भी दृष्टि में रखना जरूरी हो जाता है । इन बातों को मद्देनजर रखते हुए ही हम जनसंचार के सिद्धांतों को निर्माण और विकास पर बातचीत कर सकते हैं । लेकिन इससे पहले उस तकनीकी विकास को समझना जरूरी है जिसने आधुनिक जनसंचार माध्यमों का अस्तित्व संभव बनाया ।

9.3 जनसंचार की विद्युतीय प्रक्रिया

संचार प्रौद्योगिकी वह प्रद्यौगिकी है जिसका संबंध संचार की प्रक्रियाओं से है । संचार की प्रक्रियाओं में संचार उत्पादों का निर्माण, प्रसंस्करण, पुनरुत्पादन और परावर्तन शामिल है । प्रौद्योगिकी

का तात्पर्य यंत्रों से ही नहीं है । हालांकि आमतौर पर प्रौद्योगिकी का प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता है । किसी काम को संपन्न करने के लिए प्रयुक्त विशेष प्रविधि जिससे कि उक्त काम को निश्चित तौर पर संपन्न किया जा सका है, प्रौद्योगिकी कहलाता है (एवरेट्ट एम. रोजर्स, कम्युनिकेशन टेक्नोलोजी, दि फ्री प्रेस, न्यूयार्क, 1986, पृ. 1) । उदाहरण के लिए, लिखने के लिए कागज, कलम और स्याही का प्रयोग करना एक विशेष प्रौद्योगिकी है तो बिना भाषा की जानकारी के भी नहीं लिखा जा सकता। इसलिए भाषा भी एक तरह की प्रौद्योगिकी ही है । भाषा में अक्षरों की विशेष ध्वनि, शब्दों का विशेष अर्थ और वाक्यों से निकलने वाले अर्थ से ही हम संदेश का संप्रेषण करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं । इस प्रयोग के अपने नियम और अपनी पद्धतियां हैं और इनका निरंतर विकास भी होता रहता है। प्रौद्योगिकी के ये दोनों रूप सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है । टेक्नोलोजी की भाषा में कागज, कलम और स्याही को हार्डवेयर और भाषा को सोफ्टवेयर कह सकते हैं । आमतौर पर कंप्यूटर के संदर्भ में इस शब्दावली का ज्यादा प्रयोग किया जाता है । कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में प्रयुक्त होने वाले उपकरण जैसे, हार्ड डिस्क, मॉनीटर, मोडेम, की बोर्ड और अन्य विद्युत और इलेक्टॉनिक उपकरण, हार्डवेयर के अन्तर्गत आएंगे जबकि कंप्यूटर में प्रयुक्त सांकेतिक निर्देश जिनके आधार पर हम इन उपकरणों को प्रयोग करते हैं, सोफ्टवेयर कहलाता है । एक मायने में टेक्नोलोजी के ये दोनों रूप एक दूसरे से जुड़े होते हैं और इनमें पारस्परिक निर्भरता होती है । टेक्नोलोजी कोई ऐसी स्वायत्त वस्तु भी नहीं है जिसे हम शेष समाज से अलग कर सकें (एवरेट्ट एम. रोजर्स, पृ. 1) । समाज की संरचना के आरम्भ से ही प्रौद्योगिकी का विकास होता रहा है । अगर हम यह कहें कि मानव सभ्यता के विकास का अर्थ है टेक्नोलोजी का विकास तो यह बहुत गलत न होगा । हालांकि मानव सभ्यता के विकास को टेक्नोलोजी के विकास में घटाकर देखना उचित नहीं है । यह मानव श्रम है जिसने मनुष्य को वानर से मनुष्य और आदिम मनुष्य से आधुनिक मनुष्य बनाया है ।

प्राक् औद्योगिक समाजों में संचार प्रौद्योगिकी के विकास की शक्ति यह थी कि उसने संदेशों को दूसरों तक संप्रेषित करने के लिए माध्यमों की तलाश की । ऐसे माध्यम जिससे संदेश की सही और पूरे रूप में तथा जल्दी से जल्दी भेजे जा सकें । दूसरा, उन्होंने संदेश को भंडारित करने और उसकी प्रतियां बनाने की कोशिश की ताकि संदेश को ज्यादा लोगों तक पहुँचाया जा सका । तीसरा प्रयास था समय की बचत करते हुए जल्दी से जल्दी संदेश को संप्रेषित करना । लेकिन औद्योगिक समाज में यही सारे काम और ज्यादा बड़े पैमाने पर और व्यापक जन समुदाय के लिए करने की आवश्यकता महसूस की गई । लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण काम इस दौर में किया गया था संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने के लिए ऐसे माध्यमों का प्रयोग करना जहां उनको सफर करने के लिए मानवीय माध्यम की जरूरत न पड़े और दूरी भी इतनी तीव्र गति से तय की जा सके कि समय के गुजरने का अनुभव ही समाप्त हो जाए । इसके साथ ही इन माध्यमों का सार्वजनिक इस्तेमाल व्यापक पैमाने पर हो सके और इसको व्यवसाय का रूप भी दिया जा सके । औद्योगिक युग में संचार प्रौद्योगिकी का विकास स्वतंत्र रूप से नहीं हुआ । इनका संबंध दूसरे आविष्कारों से है, जिसने उत्पादन के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया । इन साधनों ने ऊर्जा और यांत्रिक बल की उत्पत्ति की नयी प्रौद्योगिकी शामिल हैं । विद्युत और भाप से उत्पन्न का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है ।

विद्युत ऊर्जा ने संचार प्रौद्योगिकी के विकास में सबसे अहम् भूमिका निभाई । यह ऊर्जा का ऐसा रूप था जिसमें ऊर्जा को तारों के माध्यम से एक स्थान से दूसरा स्थान पहुँचाया जा सकता था।

विद्युत जिस धातु के तार से प्रवाहित होता है वह उसे आवेषित कर देता है, उससे करंट प्रवाहित होने लगता है । इससे कई तरह के काम लिए जा सकते हैं । संचार के क्षेत्र में विद्युत ऊर्जा के कारण जो सबसे बड़ा परिवर्तन हुआ वह यह था कि पहली बार संदेश और संदेश के माध्यम से अलगाव पैदा हुआ। अभी तक आमतौर पर जो संदेश होता था, उसे उसी रूप में भेजा जाता था । लिखकर, चित्र बनाकर या मौखिक रूप में । लेकिन अब विद्युत ऊर्जा के कारण ऐसी प्रौद्योगिकी खोजी जा सकी जिसमें भेजा गया संदेश उसी रूप में प्रेषित नहीं होता था, वह संकेतों की भाषा में प्रेषित किया जाने लगा । वैसे तो भाषा भी एक तरह का संकेत माध्यम भी है, लेकिन अब जो तकनीक अपनाई गई उसमें संकेतों की यह भाषा भी सांकेतिक रूपों में भेजे जानी लगी ।

स्टीफन सेक्सबी ने अपनी पुस्तक 'दि इन्फोर्मेशन एज' में टेलीग्राफ के आविष्कार का विवरण प्रस्तुत किया है । 1753 में, स्कॉट मेगजीन में चार्ल्स मारिसन ने विद्युत टेलिग्राफ की भविष्यवाणी की थी । उसके अनुसार अंग्रेजी के छब्बीस अक्षरों के लिए छब्बीस तार होंगे जो संदेश भेजने और प्राप्त करने वाले स्थलों को आपस में जोड़ेंगे । संदेश को एक-एक अक्षर के रूप में भेजा जाएगा । प्रत्येक तार एक मशीन से जुड़ा होगा जो विद्युत करेंट पैदा करेगा और जिसके द्वारा संदेश प्राप्त करने वाले स्थान पर विद्युत करेंट के रूप में संदेश को प्राप्त किया जा सकेगा । इस भविष्यवाणी के बीस साल बाद यह महसूस किया गया कि 26 अक्षरों का काम एक तार द्वारा किया जा सकता है, यदि प्रत्येक अक्षर के लिए संकेत का प्रयोग किया जाए । ये सभी विचार जिस एक चीज से जुडे थे, वह थी विद्युत की खोज और उससे संबद्ध चुम्बकीय शक्ति । विद्युत की खोज ने कई नई चीजों के आविष्कार का मार्ग प्रशस्त किया । विद्युत ऊर्जा के द्वारा पैदा की गई चुम्बकीय शक्ति के जरिए संदेश भेजने का काम उन्नीसवीं सदी के चौथे दशक में आरंभ हो गया । धीरे- धीरे इसका विस्तार यूरोप, अमरीका और एशिया में भी हो गया । भारत में इसको तार के नाम से पुकारा गया क्योंकि यह संदेश तारों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करते थे । तार द्वारा संदेश भेजने की तकनीक का असर व्यापारिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों पर दिखाई दिया । अब समाचारों को भी तार के जरिए एक जगह से दूसरी जगह विद्युत गति से भेजा जा सकता था । शुरू में विद्युत तार द्वारा प्राप्त संदेशों को हाथ से लिखना पड़ता था । लेकिन 1845 में संदेश को छापने की पद्धति का प्रयोग अमरीका में किया गया। 1880 में ब्रिटेन में संदेशों को सीधे छापने की पद्धति का प्रयोग तेजी से होने लगा था । सिर्फ एक मिनट में 180-190 शब्दों को यह यंत्र संप्रेषित कर देता था । इसने तारों की उपयोगिता इतनी बढ़ा दी कि उन्नीसवीं सदी के अंत तक लगभग नौ करोड़ टेलिग्राम भेजे गये थे । 1889 में तारों का प्रयोग मनी ऑर्डर भेजने के लिए भी किया जाने लगा । टेलिग्राम के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन तब आया जब बिना तारों की मदद के टेलिग्राम भेजना संभव हुआ ।

विद्युत की चुम्बकीय शक्ति का प्रयोग करके संदेश भेजने की पद्धति का प्रयोग सफलतापूर्वक करने के बाद सूचना प्रौद्योगिकी की एक और उपलब्धि थी - टेलीफोन का आविष्कार । तार के द्वारा संदेश को भेजने में संदेश भेजने वाला और संदेश प्राप्त करने वाला सीधे बात नहीं करते थे बल्कि संदेश लिखित रूप में भेजा जाता था । यह लिखित भाषा संकेतों की भाषा होती थी । लेकिन एलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने 1876 में टेलिफोन का आविष्कार किया जिसके माध्यम से आवाज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक तारों के माध्यम से भेजा जाना संभव हो सका । बेल को टेलिफोन की प्रेरणा तार से ही मिली। बेल ने विचार किया कि यदि इलेक्ट्रॉमेग्रेटिक माइक्रोफोन के साथ तार को जोड़ा दिया जाए और उसमें

विद्युत प्रवाहित की जाए तो आवाज को भेजा जा सकता है । उसने पाया कि आवाज हवा के दबाव में मामूली परिवर्तन करती है । उसने यह जानना चाहा कि यदि वह उन उन परिवर्तनों को विद्युत संकेतों के अंतर्गत दोहराए तो क्या उन्हें टेलिग्राप के साथ ट्रांसमिट किया जा सकता है । इस प्रक्रिया में लोहे की वृत्ताकार शीट का एक पतला डाइफ्रेम शामिल था जिस पर ध्वनि तरंगों को उछाला जाता था और तब वे ध्वनि तरंगें स्वर के रूप में कंपित होती थी । तब इनको विद्युत संवेगों में बदलकर संप्रेषित किया जा सकता था । इसी प्रक्रिया को ही वापस संदेश प्राप्त करने वाले उपकरण के जरिए उसी आवाज के रूप में सुना जा सकता था । बेल ने विद्युत तारों के जरिए यह प्रयोग आठ मील दूर बैठे अपने पिता की आवाज सुनकर सफलता पूर्वक संपन्न किया । आरंभ में इस प्रयोग में कई कठिनाइयां भी आईं । लेकिन शीघ्र ही यह यंत्र दो व्यक्तियों के बीच बातचीत का ऐसा जरिया बन गया जो एक दूसरे से सैंकडों मील दूर क्यों न बैठे हों । सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यह आविष्कार एक और मील का पत्थर साबित हुआ । कुछ ही सालों में टेलिफोन के तार एक शहर से दूसरे शहर तक फैलते चले गए । टेलिफोन अब ग्राहम बेल के समय से काफी बदल चुका है । अब दुनिया के किसी कोने में बैठा हुआ व्यक्ति बिना तारों की मदद के टेलिफोन द्वारा बात कर सकता है ।

तारों के दारा संदेश भेजने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयां थीं । सबसे भरी कठिनाई यह थी कि तारों को समुद्रों के बीच बिछाना आसान काम नहीं था । दूसरे, तारों का रख-रखाव भी अपने में बड़ी समस्या थी । इसलिए यह जरूरी था कि कोई ऐसा तरीका खोजा जाता जिसमें तारों के बिना ही संदेशों को दूर तक भेजना संभव हो सके । जर्मन वैज्ञानिक हेनरिक हेज ने अपनी प्रयोगशाला में विद्युतचुम्बकयि तरंगों के साथ कुछ प्रयोग किए और 1888 में उन्होंने जिसे हम आज रेडियो तरंगें कहते हैं, उसका प्रदर्शन किया । इटली के मार्कोनी में 1895 में पर्याप्त दूरी तक संदेश भेजने में सफलता प्राप्त की । रेडियो तरंगों ने संदेश भेजने के लिए प्रेषक और प्रेषिति स्थल के बीच तारों की जरूरत को समाप्त कर दिया । इन्हीं रेडियो तरंगों की खोज ने पहले बिना तार के टेलिग्राम, बाद में टेलिफोन और फिर रेडियो की शुरुआत की । जहां टेलिफोन ने यह संभव बनाया कि बिना तारों के भी दुनिया के एक हिस्से से दूसरे हिस्से के बीच सीधे बात बीत करना मुमकिन हो सकता है, वहीं रेडियो स्टेशन ने सार्वजनिक प्रसारण के एक नए युग की शुरुआत की । अभी तक सिर्फ समाचारपत्र, किताबें आदि ही ऐसे माध्यम थे जो जनता के बीच प्रसारण के सार्वजनिक माध्यम थे । समाचारपत्र या किताब में प्रकाशित बात उन सभी के लिए होती है जो उन्हें पढ़ना चाहते हैं । शिक्षा का प्रसार बढ़ने के बावजूद अभी विकसित देशों की आबादी भी पूरी तरह साक्षर नहीं हो पाई थी । ऐसे में रेडियो प्रसारण की शुरूआत ने सार्वजनिक प्रसार का बिल्कुल नया रूप ही प्रस्तुत कर दिया । अब रेडियो के द्वारा लोग सुनकर तरह-तरह की जानकारी हासिल कर सकते थे । उदाहरण के लिए किसी घटना के घटने के लगभग बारह से बीस घंटे बाद समाचार के रूप में लोग अखबार में उसे पढ़ते थे । लेकिन अब उसे रेडियो के जरिए तत्काल सुन सकते थे । रेडियो ने गीत, संगीत और नाटक को जनसाधारण के लिए भी उपलब्ध करा दिया । यह सब इसलिए संभव हो सका क्योंकि सैंकडों-हजारों मील दूर से प्रसारित होने वाली आवाजों को घर में रखा छोटा सा रेडियो पकड़ने की क्षमता रखता है । आरम्भ में यह समस्या जरूर सामने आई थी कि भिन्न-भिन्न आवाजों को कैसे पकड़ा जाए लेकिन इस समस्या का समाधान भी कर लिया गया । विभिन्न वेव और अलग- अलग फ़िक्वेंसी पर अलग- अलग जगह से प्रसारित हो वाली आवाजों को सुना जा सकता था । आज हम रेडियो को जितने साफ ढंग से सुन सकते हैं, वैसा आरंभ में नहीं

था । पहले रेडियो को हेडफोन लगाकर सुनना पड़ता था । बाद में बडे आकार के रेडियो आए लेकिन ट्रांजिस्टर ने रेडियो के क्षेत्र में गुणात्मक परिवर्तन ला दिया । ट्रांजिस्टर ने रेडियो का आकार छोटा कर दिया । अब उसे उठाकर ले जाया जा सकता था और बिना बिजली की मदद के भी चलाया जा सकता था । इसने इस यंत्र की कीमत को भी काफी कम कर दिया ।

जनसंचार की सबसे बड़ी उपलब्धि दृश्य माध्यम के क्षेत्र में हुई । गतिशील चित्रों के आविष्कार का श्रेय थामस एडिसन को जाता है । लेकिन शुरुआत में दूसरे कई लोगों ने इसमें सहयोग दिया था। इस तरह का पहला प्रयास एडवर्ड मुइब्रिज ने किया था । उन्होंने 1872-77 के मध्य ऐसे चित्रों का निर्माण किया था । मुइब्रिज ने घुड़दौड़ के मैदान में कई तार बांध दिए और प्रत्येक तार को एक स्थिर कैमरे के शटर से जोड़ दिया । दौड़ता हुआ घोड़ा तारों को गिरा देता था जिससे कई सारे चित्र लगातार कैमरे द्वारा लिए गए । इन स्थिर चित्रों को एक डिस्क पर लगाकर उन पर लालटेन की रोशनी डालकर दौड़ते हुए घोड़े का बिंब प्रदर्शित किया गया । मइब्रिज ने ऐसे कई प्रयोग किए थे उससे प्रेरित होकर फ्रांस के वैज्ञानिक मारे ने 1882 में एक कैमरे से बहुत से चित्रों की शूटिंग करने वाले उपकरणों की खोज की ।

मुइब्रिज का व्याख्यान सुनकर एडिसन की भी इसमें दिलचस्पी बढ़ी । एडिसन ने गतिशील तस्वीरों के प्रयोग 1888 में डब्ब्लू के. एल. डिक्सन के निर्देशन में शुरु किए जब उसने वेक्स सिलेंडर पर फोटोग्राफी को रिकार्ड करने का प्रयास किया । 1889 में डिक्सन ने इस क्षेत्र में जबर्दस्त पहल की जब उसने डॉर्ड ईस्टमेन की सेल्युलाइड फिल्म का इस्तेमाल किया । सेल्युलाइड फिल्म बाद में गतिशील छायांकन का श्रेष्ठ माध्यम बन गई । क्योंकि इसे रॉल किया जा सकता था और मनचाही लंबाई दी जा सकती थी । डिक्सन ने एडिसन के कैमरे का इस्तेमाल करते हुए 15 सैकिंड की कई फिल्मों का अंकन किया लेकिन एडिसन इन चित्रों के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए इनके प्रक्षेपण की समस्या नहीं सुलझा सका ।

इस समस्या को सुलझाया फ्रांस के लुई ल्युमिए और अगस्त ल्युमिए ने । उन्होंने आधुनिक पोर्टेबिल कैमरे का निर्माण किया जो प्रिंटर और प्रोजेक्टर के रूप में भी काम कर सकता था । ल्युमिए की सेनिमाटोग्राफी एडिसन के यंत्र पर ही आधारित थी । कह सकते हैं कि 28 दिसंबर, 1895 को फिल्मों को इतिहास की वास्तविक शुरुआत हुई जब ल्युमिए बंधुओं ने पेरिस के कैफे के बेसमेंट मे दर्शकों से पैसे लेकर गतिशील तस्वीरों का संक्षिप्त-सा प्रदर्शन किया । उन्नीसवीं सदी के अंत तक आते-आते दुनिया के कई हिस्सों में मुवी कैमरे का प्रयोग होने लगा था । इनके द्वारा दिखाई जाने वाली तस्वरीं प्राय: 35 मिमि की होती थी और प्रत्येक एक सैकिंड में सोल स्थिर चित्र होते थे जिन्हें फिल्मों की भाषा में फ्रेम कहा जाता है । शुरु में सिनेमा बिना आवाज का था । लेकिन लगभग तीन दशकों के बाद फिल्मों में आवाज का भी समावेश हो गया । इसके लिए वीटाफोन प्रणाली का प्रयोग शुरू किया गया जिसने अलग फोनोग्राफिक डिस्क के साथ चित्र का संयोजन किया । इस चित्रों के साथ संवादों और संगीत का सम्मिश्रण आरंभ हुआ । आरंभ में सिनेमा श्वेत-श्याम होता था लेकिन बाद में वह रंगीन हुआ । आज सिनेमा का तकनीकी विकास बहुत आगे बढ़ चुका है और यह अब भी सर्वाधिक लोकप्रिय जन माध्यम है जो जीवन को लगभग उसी रूप में प्रस्तुत कर देता है, जिस रूप में उसे जीते है । वास्तविक के नजदीक काल्पनिक सृष्टि को संभव सिनेमा ने ही बनाया ।

लेकिन सिनेमा के साथ कुछ समस्या भी थी । इसके निर्माण और प्रदर्शन दोनों में काफी धन खर्च करना पड़ता है । निर्माण के साथ-साथ प्रदर्शन के लिए सिनेमाघरों की जरूरत होती है जहां जाकर

लोगों को फिल्में देखनी होती है । इसमें समय और धन दोनों खर्च करने होते हैं । प्रभावशाली माध्यम होते हुए भी यह रेडियो की तरह सर्वसुलभ नहीं था । इस कमी को पूरा किया टेलिविजन ने । यानी रेडियो की तरह अब टेलिविजन के माध्यम से लोगों को घर में ही टेलीविजन पर सिनेमा का आनन्द मिल सकता है । टेलिविजन एक दृश्य- श्रव्य माध्यम है, जिसकी शुरुआत बहु त पुरानी नहीं है । ब्रिटेन के वैज्ञानिक जॉन लॉगी बेयर्ड ने 1926 में टेलिविजन का पहली बार प्रदर्शन किया । 1927 में फिलो फॉन्सवर्थ ने इलेक्ट्रॉनिक टेलिविजन संकेत प्रवाहित कर टेलिविजन की स्क्रीन पर छवि को साकार किया। इस काम में सफलता वैज्ञानिक ब्लादीमीर ज्वोरकिन द्वारा पिक्चर ट्यूब बनाने में कामयाबी से हासिल हु ई । यह पहली तकनीक थी जिससे बिजली की धारा को छवि के रूप में परिवर्तित किया जा सकता था । इसके बाद इस दिशा में लगातार प्रयोग होते रहे । टेलिविजन प्रसारण के लिए ध्वनि और चित्र (दृश्य) पहले विद्युत चुम्बकीय तंरगों में परिवर्तित की जाती है और बाद में टेलिविजन सेट इन तरंगो को वापस ध्वनि और दृश्य में बदल देता है । टेलिविजन कैमरे में एक आर्थिकॉन ट्यूब होती है जो लेंस से बनी छवि इस ट्यूब की चित्रसंवेदन प्लेट पर पड़ते ही प्लेट इलेक्ट्रान निकलते है जो स्केनिंग के बाद विद्युत तरंगों में बदल जाते हैं । इस प्रकार के विद्युत तरंगों को ही वीडियो संकेत कहते हैं। इन संकेतों को एंप्लीटयूड मॉडिफिकेशन के बाद प्रसारित किया जाता है । इसी प्रकार ध्वनि को भी माइक्रोफोन विद्युत तंरग में परिवर्तित करता है जिनकी फ्रिकवेंसी को बढ़ाकर बाद में प्रसारित किया जाता है । इन्हें ऑडियो संकेत कहा जाता है । दृश्यों और ध्वनियों की यह विद्युत चुम्बकयि तरंगे ही टीवी एंटिना से टकराती है जिन्हें टेलीविजन सेट वापस दृश्य और श्रव्य में बदल देती है ।

तकनीकी रूप में टेलिविजन की खोज तीसरे-चौथे दशक से शुरू होने के बावजूद जनमाध्यम के रूप में लोकप्रिय होने में टी वी को लगभग दो दशक और लगा । सिनेमा की तरह टेलिविजन का भी तकनीकी स्वरूप बदलता गाय । आरंभ में इसका प्रसारण क्षेत्र बहु त सीमित था, लेकिन कृत्रिम उपग्रह प्रणाली ने संचार की सभी प्रौद्योगिकी के प्रसारण का नया क्षेत्र खोल दिया । आज रेडियो और टेलिविजन सभी का प्रसारण उपग्रह के जरिए दुनिया के किसी भी हिस्से में किया जा सकता है । इसी प्रकार पहले टेलिविजन का प्रसारण सिर्फ श्वेत-श्याम में ही उपलब्ध था लेकिन अब टेलिविजन कार्यक्रमों को भी रंगीन देखा जा सकता था । इसी तरह पहले एक या दो चैनल ही उपलब्ध होते थे, लेकिन अब एक टीवी सेट पर सौ से ज्यादा चैनल उपलब्ध हो सकते हैं । 1876 में ग्राहम बेल ने जिस टेलीफोन यंत्र का आविष्कार किया था, आज उसके जरिए कंप्यूटर के माध्यम से उपर्युक्त सभी संचार माध्यमों को प्राप्त किया जा सकता है । इस नयी प्रौद्योगिकी को इंटरनेट के नाम से जाना जाता है । इसने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है । लेकिन यह क्रांति संभव नहीं होती यदि विद्युत ऊर्जा की खोज नहीं हु ई होती ।

विद्युत के महत्व पर प्रकाश डालते हु ए माशर्ल मैक्लुहान ने लिखा था, ‘विद्युत प्रसारर के बाद पृथ्वी इतनी संकुचित हो गई है कि अब पूरे विश्व को एक गाँव कहना ही उचित होगा । विद्युतीय गति ने उत्तरदायित्व के प्रति मनुष्य की जागरुकता को बहु त बढ़ा दिया है । आज लोगों में पूर्णता सहनुभूति और जागरुकता की जो लालसा हैं वह इस विद्युत-प्रोद्धिगिकी का ही परिमाप है ।' यह कहना तो मुश्किल है कि मैक्लुहान की बात किस हद तक सही है लेकिन इतना जरुर है कि संचारमाध्यमों के विकास की कुंजी यही ‘विद्युत ऊर्जा' है ।

9.4 जनसंचार और माध्यम

जनसंचार के द्वारा जब कोई देश प्रसारित किया जाता है, तो वह दो रूपों में प्रसारित होता है, या तो भाषा के द्वारा या दृश्य के द्वारा, या दोनों द्वारा । भाषा का माध्यम लिखे हुए या बोले हुए या दोनों रूपों में हो सकता है । इन माध्यमों का प्रयोग करते हुए जनसंचार माध्यम के रूप में काम करता है । यानी जनसंचार स्वयं भी माध्यम है और माध्यम को प्रसारित करने का माध्यम भी। रेडियो श्रव्य संदेश को संप्रेषित करने का माध्यम है, लेकिन यह श्रव्य संदेश स्वयं भाषा पर निर्भर है। इस प्रकार रेडियो के लिए भाषा संदेश ही है । रेडियो यह निर्धारित नहीं करता कि भाषा के माध्यम से क्या कहा जा रहा है । वह तो जो भी ध्वनियाँ, उसके द्वारा अंकित की जा रही हैं. उन्हें आगे संप्रेषित कर देता है । वह अर्थवान है या नहीं यह उसके द्वारा निर्धारित नहीं होता । इसी प्रकार सिनेमा या टेलिविजन द्वारा जो दृश्य प्रसारित हो रहा है, वह क्या अर्थ दे रहा है, या उसका देखने वाले पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, यह टेलिविजन तय नहीं कर रहा है । यह तो उस दृश्य द्वारा हो रहा है, जिसकी रचना की गई है । रेडियो में और टेलिविजन में जो कुछ हम सुनते हैं और देखते हैं, वह वह नहीं होता जो हमारे सामने सहज रूप से घटित होता रहता है और जिसके हम भी हिस्से होते हैं । रेडियो और टेलिविजन में सुना और देखा गया संदेश निर्मित (मेनुफेक्चर्ड) संदेश है । वह सुनाने और दिखाने के लिए गढा गया है । वह उसी तरह का निर्माण है जैसे एक चित्रकार अपने चित्र में चिड़िया का निर्माण करता है, वह सचमुच की चिड़िया को देखकर बनाया गया हो, लेकिन चित्र की चिड़िया सचमुच की चिड़िया नहीं होती । इसी तरह फिल्म और टेलिविजन पर देखे गए दृश्य वास्तविक लोगों के होते हुए भी उस अर्थ में वास्तविक नहीं होते जिस अर्थ में हम उन्हें बिना किसी माध्यम के देखते हैं । मसलन, टेलिविजन पर प्रधानमंत्री का भाषण इस अर्थ में एक निर्मित भाषण है कि हम उसे उस कोण से उस पिच पर और उतना ही सुनते हैं जितना कि टेलिविजन हमें सुनाता और दिखाता है । इस तरह के भाषण यथार्थ की यथावत प्रतिलिपि माने जाते हैं । लेकिन उन्हें हम एक निश्चित फ्रेम में ही देखते हैं । यह फ्रेम हमें इस बात का आभास करता है कि हमारे सामने कोई ऐसी चीज पेश की जा रही है जो निर्मित है और जिसका निर्माण इसी उद्देश्य के लिए किया गया है । कहने का अर्थ यह है कि जिस प्रकार भाषा हमारे भावों और विचारों को अभिव्यक्त करना का माध्यम होते हुए भी वह कभी भी भाव और विचार का स्थान नहीं ले पाती, सिर्फ उसका संकेत और प्रतिनिधित्व ही करती है । उसी प्रकार सिनेमा और टेलिविजन में देखा गया दृश्य वास्तविक दृश्य का संकेत और प्रतिनिधित्व करता है, जिसे कि हम वास्तविक जीवन में देखते और जीते हैं । इस प्रकार शब्द और दृश्य इसी अर्थ मैं माध्यम है कि वे उस वास्तविकता के संकेत और प्रतिनिधि होते हैं, जिसका वास्ता हमारा यथार्थ जीवन में पडता है ।

क्या सिनेमा और टेलिविजन में देखा गया दृश्य यथार्थ का पूरा प्रतिनिधित्व करता है, या उसको पूरा संकेतित करता है या कर सकता है? इस सवाल पर विचार करने से पहले माध्यम की क्षमता पर विचार करें । जब हम भाषा में फूल शब्द का प्रयोग करते हैं तबह हमारे सामने कोई विशिष्ट प्रकार का फूल नहीं आता । किसी के मानस में गुलाब का फूल आ सकता है, तो किसी के कमल और किसी के चंपा या चमेली । लेकिन जब हम गुलाब कहेंगे तो हमारे सामने कमल या चंपा का फूल नहीं आएगा। हां, यह संभव है कि सदर्भ स्पष्ट न हो तो गुलाब को फूल की बजाय किसी का नाम भी समझा जा सकता है, या कुछ और । यानी कोई शब्द किस वस्तु, विचार या भाव का संकेत करेगा, यह दूसरी

कई बातों पर निर्भर करता है । कई बार यह भी संभव है कि यह संकेत और प्रतिनिधित्व की अनिश्चितता विभिन्न श्रोता और पाठक को भिन्न-भिन्न अर्थों तक ले जा सकती है । वस्तुत: ये शब्द और दृश्य प्रतीक के रूप में काम करते हैं । प्रत्येक शब्द एक प्रतीक है, जो एक निश्चित अर्थ ध्वनित करता है । लेकिन इसी निश्चित अर्थ में ही वे दूसरे अर्थ भी छिपे होते हैं, जिन्हें उस रचना विशेष में प्रयुक्त शब्द व्यक्त करेगा । शब्दों में अर्थों की विभिन्न छवियाँ व्यक्त करने की क्षमता मौजूद होती है । इस क्षमता को इस्तेमाल करने की संभावना दो और बातों पर भी निर्भर होती है । एक, किस अंर्तवस्तु का हिस्सा बनकर वह शब्द प्रयुक्त हुआ है; दो, जनसंचार के किस माध्यम द्वारा इसे संप्रेषित होना है ।

कहने का मतलब यह है कि जनसंचार माध्यमों के हारा जब कोई प्रतीकात्मक रूप संकेतीकृत किया जाता है, तो यह सवाल भी उठता है कि क्या सभी माध्यमों से- एक ही तरह का अर्थ और प्रतिक्रिया पैदा होती है? यदि नहीं तो, अलग-अलग माध्यमों की विशिष्ट संप्रेषण पद्धति को विसंकेतीकृत करने की क्षमता ग्रहीता मैं कैसे उत्पन्न होती है? यानी कि जब किसी माध्यम द्वारा शब्दों और प्रतीकों को दूसरों तक संप्रेषित किया जाता है तो विसंकेतीकरण की प्रक्रिया कैसे संभव होती है? क्योंकि इसी प्रक्रिया से ग्रहीता प्रतीकात्माक रूप में निहित अर्थ तक पहुँचता है । इन प्रश्नों का आसान उत्तर यह है कि जब दर्शक या श्रोता किसी फिल्म या रेडियो कार्यक्रम को देखने या सुनने के लिए प्रस्तुत होता है तो वह जानता है कि कुछ ऐसा प्रस्तुत किया जाने वाला है जिसकी वह अपेक्षा करता है । दर्शक और श्रोता की इस पूर्वनिश्चित धारणा को ध्यान में रखते हुए कलाकार अपनी रचना को ढ़ग से निर्मित करता है कि वह दर्शक और श्रोता को मनोरंजक लगे । लेकिन बात इतनी आसान नहीं है । वस्तुत: प्रत्येक संप्रेषण माध्यम के कुछ अनकहे नियम होते हैं या कहना चाहिए कि माध्यम के अस्तित्व में आने के बाद धीरे- धीरे बनने लगते हैं और जनसंचार माध्यमों में काम करने वाले इन्हीं नियमों का पालन करने लगता है । प्रत्येक संचार माध्यम की अपनी संरचना होती है जिसके द्वारा विशिष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है । इस संरचना के दो महत्वपूर्ण अंग होते हैं - एक तो, माध्यम का विशिष्ट व्याकरण और दूसरा, अंतर्वस्तु को परिभाषित करने वाले नियम । ये दोनों बातें संरचना में अंतर्ग्रथित होती हैं।

माध्यम के व्याकरण का अर्थ है, नियमों की ऐसी व्यवस्था, जिसके कारण भाषा अर्थवान बनती है और जिस प्रकार प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है, उसी तरह प्रत्येक माध्यम का अपना व्याकरण होता है । हां, यह संभव है कि कुछ माध्यमों में वैसी ही निकटता हो जैसी निकटता कुछ भाषाओं में होती है । यह निकटता उनके व्याकरण में भी प्रतिबिंबित होती है । यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि जनसंचार माध्यमों का विशिष्ट व्याकरण सिर्फ उनके हार्डवेयर से ही तय नहीं होता है जैसा कि कई बार समझ लिया जाता है बल्कि इस बात से भी तय होता है कि वह माध्यम किस रूप में प्रयुक्त हो रहा है । उदाहरण के लिए किसी नेता के अबाधित भाषण को प्रसारित करने के लिए उनके सम्मुख स्थिर रखा कैमरा उनके भाषण को प्रसारित कर देगा । लेकिन यहां माध्यम में निहित अधिकतम संभावनाओं का पूरा इस्तेमाल नहीं किया गया है । इसके विपरीत अलग- अलग कोणों से, अलग- अलग शाट्स द्वारा भाषण को संपादित करते हुए, पार्श्व ध्वनियों को जोडते हुए तथा लोगों की प्रतिक्रियों को शामिल करते हुए यही भाषण प्रस्तुत किया जाता है तो उसका प्रभाव वहीं नहीं होगा, यद्यपि मूल रूप में भाषण की अंतर्वस्तु वही होगी । इस भाषण को पहले प्रकार से संप्रेषित करने से

दर्शकों पर एक तरह का असर होगा और दूसरे प्रकार से संप्रेषित करने से दूसरी तरह का असर होगा। लेकिन निर्माण में यह भिन्नता एक खास माध्यम में उसके व्याकरण में निहित अधिकतम संभावनाओं तक ही सीमित होगी, उसे दूसरे माध्यमों पर आरोपित नहीं किया जा सकता । यानी उसी भाषण को रेडियो या फिल्म के माध्यम से भी पेश किया जा सकता है, लेकिन अपने- अपने व्याकरण की सीमाओं और संभावनाओं के साथ ही । प्रत्येक माध्यम से जुड़े लोग अंतर्वस्तु की जरूरत के अनुसार, व्याकरण की अधिकतम संभावनों को ध्यान में रखते हुए उसे संकेतीकृत करते हैं । यहां यह ध्यान रखना हो कि अंतर्वस्तु की आवश्यकता को दो चीजें तय करेगी । एक, क्या संप्रेषित किया जाना है; और दो, उस विशिष्ट माध्यम में संप्रेष्य संकेतों का विसंकेतीकरण सफलतम रूप में कैसे संभव होगा ?

जनसंचार माध्यमों की कुछ ऐसी विशेषताओं का उल्लेख आवश्यक है जो उनके विशिष्ट स्वरूप को निर्धारित करते हैं । इन विशेषताओं को दो दृष्टियों से देखना होगा । एक कौन सा माध्यम अपने में क्या विशिष्टताएं रखता है । जैसे रेडियो एक श्रव्य माध्यम है इसलिए इसमें ध्वनि और शब्दों की अधिकतम संभाव्य क्षमता का प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन दृश्य माध्यमों में शब्दों से ज्यादा बल दृश्यों पर रहता है । यद्यपि टेलिविजन और सिनेमा के दृश्यांकन मे अंतर को समझना भी जरूरी है । इसी प्रकार प्रत्येक माध्यम प्रेक्षक के रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ खास तरह की जगह बनाता है। टेलिवजन का आस्वादन लेने के उसके सामने बैठना, बैठकर देखना जरूरी नहीं है, उसे आप काम करते हुए सुन सकते हैं यद्यपि किसी गंभीर वार्ता को सुनने के लिए अधिक सजगता की आवश्यकता होती है । इन बातों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों को प्रेक्षकों की जरूरत के मुताबिक प्रसारण करना जरूरी हो जाता है । कहने का तात्पर्य यही है कि जनसंचार माध्यम अपनी प्रकृति और स्वरूप के अनुसार संचार के अन्य माध्यमों के बीच अपनी जगह बनाता है और इसी प्रक्रिया में जनसंचार के सिद्धान्तों के विकास को प्रभावित करता है ।

बोध प्रश्न - 1

1. जनसंचार के सिद्धान्त के आधार क्या है?
2. जनसंचार माध्यमों से प्रसारित होने वाले संदेश लोगों को किस हद तक प्रभावित करते हैं?
3. जनसंचार की विद्युतीय प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं?
4. 'प्रत्येक व्याकरण का अपना माध्यम होता है ।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए ।

9.5 जनसंचार की प्रक्रिया

जनसंचार की प्रक्रिया पर विचार करने पर हमारे सामने कुछ बाते साफ तौर पर उभर आती हैं । संचार की प्रक्रिया तब तक संभव नहीं है जब तक संचार करने के लिए कोई संदेश न हो । यह संदेश प्रेषक को ग्रहीता तक भेजना होगा और संदेश भेजने के लिए किसी माध्यम की जरूरत होगी। अगर प्रश्नों के रूप में कहें तो इस तरह कह सकते हैं -

- क्या संप्रेषित किया जाना है?
- संप्रेषित करने वाला कौन है?
- किसे संप्रेषित करना है?
- किस माध्यम से संप्रेषित किया जाना है?
- संदेश को किस रूप में कहा गया है?

संचार की सम्पूर्ण प्रक्रिया इन पाँच सवालों के उत्तर में निहित होती है । वैसे तो यह सभी माध्यमों में घटित होती है । न सिर्फ जनसंचार माध्यमों में बल्कि संचार के उन माध्यमों में भी जिन्हें अंतवैयक्तिक माध्यम कहा जाता है । इस पूरी प्रक्रिया में केंद्रीय महत्व संदेश का है । संदेश की मौजूदगी ही संप्रेषण की प्रक्रिया के लिए अवसर प्रदान करती है । लेकिन किसी संदेश को किस माध्यम से भेजा जाना है उसी के अनुसार उस संदेश का स्वरूप तय होगा । जैसे रेडियो से दृश्य का संप्रेषण संभव नहीं है और सामाचारपत्र आवाज को संप्रेषित नहीं कर सकता । किस संदेश के लिए कौन सा माध्यम उपयुक्त रहेगा और कौन से माध्यम किन संदेशों के लिए उपयुक्त रहेंगे यह संप्रेषण की प्रक्रिया संगठित करने के लिए तय करना जरूरी है ।

जनसंचार की प्रक्रिया के संदर्भ में इस पर भी विचार करने जरूरी है कि संदेशों का संप्रेषण कौन कर रहा है और किस के लिए कर रहा है । सूचना, शिक्षा और मनोरंजन सभी क्षेत्रों में इस बात को जानने की जरूरत है । एक फिल्मकार फिल्म का निर्माण किसलिए करता है? लोगों के मनोरंजन के लिए, उनमें सामाजिक जागरूकता लाने के लिए या उनको फिल्म कला की उत्कर्षता का दिग्दर्शन कराने के लिए । वह फिल्म का निर्माण लाभ कमाने के लिए कर रहा है, या सामाजिक दायित्वबोध के लिए या फिल्म कला के प्रति अपनी गंभीर अभिरुचि के लिए । इनमें से प्रत्येक बात से यह तय होगा कि वह किस तरह की फिल्म बनाएगा । इसी प्रकार कोई व्यक्ति फिल्म देखने क्यों जा रहा है। मनोरंजन के लिए, अपने कलाबोध को परिष्कृत और संपन्न करने के लिए या अपने को सामाजिक रूप से अधिक जागरूक बनाने के लिए । इस प्रकार जनसंचार की प्रक्रिया अपने लक्ष्य और अपनी प्रविधि दोनों से निधारित होती है ।

जब हम जनसंचार को सिर्फ एक संचार प्रविधि समझते हैं तो हम उसका अध्ययन भी प्रविधि तक सीमित रखते हैं । तब हम इस बात पर ध्यान नहीं देते कि उसके माध्यम से क्या संप्रेषित किया जा रहा है और उसका क्या प्रभाव होगा । हम संचार की प्रक्रिया को एक तकनीकी कौशल मानकर उसी के अनुसार उसका विश्लेषण करेंगे । यह विश्लेषण संरचनात्मक विश्लेषण कहलाएगा क्योंकि उसमें बल संचार माध्यम की संरचना पर होगा । लेकिन जैसे ही हम उसे मानव संचार की प्रक्रिया के रूप में देखेंगे तो हमारा बल उससे जुड़े लोगों के व्यवहार के विश्लेषण पर होगा । जनसंचार माध्यम से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार उससे संबंधों से तय होगा । एक निष्पादक माध्यम से वहीं अपेक्षा नहीं रखेगा जो ग्रहीता रखता है । इसी प्रकार संचार माध्यम को उद्योग समझने वाले व्यापारी के लिए वह एक व्यवसाय है जिसके साथ उसका संबंध लाभ और हानि का है । लेकिन जनसंचार को सांस्कृतिक प्रक्रिया समझने वाले के लिए महत्वपूर्ण होता है उस माध्यम से व्यक्त होने वाले संदेश की अंतर्वस्तु । यह अंतर्वस्तु के प्रभाव की समीक्षा करेगा । यह जानना चाहेगा कि उक्त संदेश का लोगों पर क्या असर होगा और वे वैयक्तिक और सामूहिक रूप से तत्काल और दूरगामी रूप में क्या प्रतिक्रिया करेंगे ।

जनसंचार की प्रक्रिया एक गतिशील प्रक्रिया है । वह सदैव एक सी नहीं रहती । ग्रहीता सदैव एक से संदेशों को बारबार दोहराए जाने को स्वीकार नहीं कर सकते । वे नए संदेश की अपेक्षा करते हैं । लेकिन यह नया संदेश ऐसा न हो जिसे ग्रहण करने में उसे बौद्धिक और मानसिक स्तर पर कठिनाइयों का सामना करना पड़े और अंतत: संदेश के प्रति अरुचि जागृत हो जाए । यहीं संदेश की प्रभावशाली अभिव्यक्ति का प्रश्न उपस्थित होता है । यह अवश्य है कि प्रत्येक संदेश सभी माध्यमों पर संप्रेषण के अनुकूल नहीं होता लेकिन यह भी सही है कि प्रत्येक संदेश कई रूपों में संप्रेषित किया जा सकता

है और ये सभी रूप एक से प्रभावी और संप्रेष्य नहीं होते । इसलिए संचार प्रक्रिया की सफलता इस बात में भी होती है कि निष्पादन संदेश को अपने सर्वाधिक प्रभावी रूप से संप्रेषित करे । प्रभावी संप्रेषण निष्पादकों की कुशलता के अलावा अन्य कई बातों पर निर्भर करता है । इनमें प्रौद्योगिकी, माध्यम, भाषा, परिवेश, ग्रहीता, जनसंचार से जुड़े संस्थान और व्यवसाय आदि शामिल है ।

9.6 जनसंचार के स्रोत

जनसंचार के सिद्धांत पक्ष के अध्ययन के दौरान उसके विभिन्न स्त्रोतों की चर्चा भी आवश्यक हो जाती है । जनसंचार के वैसे तो कई स्त्रोत हो सकते हैं लेकिन जनसंचार का मुख्य स्त्रोत स्वयं जन है । जनसंचार के माध्यमों की जरूरत ही इसलिए होती है क्योंकि लोगों को इसकी आवश्यकता है । संचार माध्यमों की आवश्यकता समाज में लोगों की गतिविधियों की प्रकृति पर निर्भर करता है । प्राक् आधुनिक समाजों में लोगों की गतिविधियां काफी सीमित होती थी । लेकिन आधुनिक समाजों में या कहना चाहिए कि लोकतांत्रिक समाजों में लोगों की गतिविधियों में पहले से गुना विस्तार हुआ है । ये विस्तार जीवन के हर क्षेत्र में हुआ है । राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में। लोकतांत्रिक समाजों में राजनीति व्यवस्था के निर्माण में प्रत्येक नागरिक की भूमिका होती है ।

इसी तरह अब आर्थिक जीवन से संबंधित औद्योगिक और व्यावसायिक गतिविधियाँ भी छोटे समुदायों या राष्ट्रों तक सीमित नहीं रही है बल्कि उसने वैश्विक स्वरूप ग्रहण कर लिया है । इसी प्रकार लोगों का एक जगह से दूसरी जगह आना-जाना पहले की तुलना में कही ज्यादा विस्तारित हुआ है । इससे उनके समाज की संरचना और सांस्कृतिक परिदृश्य पर भी असर पड़ा है । वे दूसरे समाजों और संस्कृतियों के संपर्क में ज्यादा आ रहे हैं । उनकी अपनी शैक्षिक, आत्मिक और रचनात्मक जरूरतों का विस्तार हुआ है । इन सब गतिविधियों के बढ़ने के साथ जनसंचार के माध्यमों की जरूरत भी बढ़ी है और नए माध्यमों की आवश्यकता भी महसूस की गई है । वस्तुत: मनुष्य की सामाजिक और वैयक्तिक जरूरतों से जनसंचार माध्यमों की इतना गहरा रिश्ता है कि उसके बिना उनका विकास संभव ही नहीं था । आज हम इस बात की कल्पना नहीं कर सकते कि हम वापस ऐसे युग में जा सकते है जहां न रेडियो हो, न अखबार हो, न सिनेमा हो और न टेलीविजन हो ।

9.7 जनसंचार और संदेश

जनसंचार में केन्द्रीय भूमिका संदेश की होता है । यह संदेश ही है जिसे संचारित या संप्रेषित करना होता है । संदेश का तात्पर्य सूचना मात्र से नहीं है । अगर हम रेडियो पर पंडित रविशंकर का सितार वादन सुन रह रहे हैं तो यह भी तकनीकी भाषा में एक संदेश ही है । इसी प्रकार अखबार के समाचार और थियेटर में नाटक और सिनेमाघर में फिल्म भी संदेश है । संदेश का तात्पर्य वह अंतर्वस्तु है जिसे ग्रहीता तक भेजा जाना है । वह संदेश लिखित शब्दों के रूप में हो सकता है, वह आवाज और ध्वनि के रूप में हो सकता है और वह दृश्यों के रूप में हो सकता है । लेकिन प्रत्येक संदेश जनसंचार माध्यम के लिए उपयुक्त हो यह आवश्यक नहीं है । संदेश को अगर जनसंचार माध्यमों के द्वारा व्यापक जनसमूह तक पहुंचना है तो यह जरूरी है कि उसे ऐसा होना चाहिए जिसमें ज्यादा से ज्यादा लोगों की रुचि हो । उदाहरण के लिए अखबार या टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले समाचारों का चयन इस बात से तय होता है कि क्या लोग उनको जानना चाहेंगे । जिस दिन दक्षिण अफ्रीका के क्रिकेट खिलाड़ी और कप्तान हांसी क्रोनि का नाम मैच फिक्सिंग के मामले में पहली बार सामने आया तो वह पहले

पृष्ठ की खबर इसलिए बन गया क्योंकि आज क्रिकेट भारत में सबसे ज्यादा लोकप्रिय खेल है और क्रिकेट खिलाड़ियों की लोकप्रियता राष्ट्रीय स्तर के नेताओं और फिल्मी सितारों से कम नहीं है । जाहिर है कि इस लोकप्रियता ने ही इस खबर को इतना महत्वपूर्ण बना दिया ।

इसका यह मतलब भी नहीं है कि संचार माध्यमों से सिर्फ वही संदेश प्रसारित होते हैं जिसे जनता जानना चाहती है । वे संदेश भी जगह बाते हैं जिसे वे लोग और वर्ग संप्रेषित करना चाहते हैं जिनके हाथ में जनसंचार माध्यम हैं यानी जो जनसंचार माध्यम पर अधिकार रखते हैं । संदेश का प्रसारण लोगों की जरूरतों से नहीं बल्कि इस बात से भी होता है कि वे उन संदेशों से लोगों को प्रभावित करना चाहते हैं । लेकिन अपने महत्व के अनुसार माध्यम में अपनी जगह बनाता है ।

जनसंचार माध्यमों में संदेश सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त होते हैं । संदेश को संप्रेषित करने वाला अपनी बात संकेतीकृत करता है और उसे माध्यम के द्वारा संप्रेषित करता है जिसे संदेश को ग्रहण करने वाला विसंकेतीकृत करके उसका अर्थ ग्रहण करता है । लेकिन इस प्रक्रिया में संदेश से वही अर्थ संप्रेषित होता है जो प्रेषक संप्रेषित करना चाहता है, यह जरूरी नहीं है । वस्तुत: संदेश और अर्थ के बीच का संबंध कई बाहरी कारकों से प्रभावित होता है । वह माध्यम और ग्रहीता की क्षमता पर भी निर्भर करता है । माध्यम से तात्पर्य दोनों तरह के माध्यम से है । प्रौद्योगिकी जो उस संदेश के एक स्थान से दूसरे स्थान पर संप्रेषित करने की वाहक है और वह भाषा जो संदेश को संकेतीकृत करती है और जिसे दुबारा ग्रहीता विसंकेतीकृत करता है । यह हम आमतौर पर बढ़ते सुनते हैं कि लेखक, कलाकार आमतौर पर इस बात की शिकायत करते हैं कि उनकी रचना को सही नहीं समझा गया । संचार माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषा का विशेष सांस्कृतिक संदर्भ होता है । उस सांस्कृतिक संदर्भ को जिस रूप में कलाकार ने आत्मसात् किया है क्या उसी रूप में पाठक या दर्शक ने भी किया है कहना मुश्किल होता है । कई बार संदेश को ग्रहण करने में उसके अपने संस्कार और अपनी अभिरुचियां बाधक बन उपस्थित हो जाती हैं या उस माध्यम की विशिष्ट भाषा के समझने की उसकी क्षमता सीमित हो सकती है । दूसरी ओर यह भी मुमकिन है कि कलाकार जिस माध्यम और जिस भाषा के जरिए अपना संदेश प्रसारित कर रहा है उसका अपने संदेश के अनुरूप इस्तेमाल करने में वह सफल नहीं रहा है । तात्पर्य यही है कि संदेश का संप्रेषण सिर्फ एक तकनीकी मसला नहीं है, एक सांस्कृतिक और सौंदर्यबोधीय मसला भी है । उत्तर आधुनिक शब्दावली का उपयोग करें तो संदेश एक पाठ की तरह है जिसे प्रत्येक ग्रहीता अपने- अपने ढंग से पढ़ता है ।

स्टुआर्ट हाल का यह कथन इस दृष्टि से उव्रेखनीय है - 'हमें यह स्वीकार करना होगा कि संदेश का सांकेतिक रूप संचार विनिमय में एक विशेषाधिकृत स्थिति है और संपूर्ण संचार प्रक्रिया के संबंध में 'संकेतीकरण' और विसंकेतीकरण के क्षण यद्यपि सापेक्ष रूप में ही स्वायत्त होते हैं, लेकिन ये निर्धारक क्षण भी है ।' कहने का तात्पर्य यह है कि संदेश में निहित अर्थ संदेश पर न तो पूरी तरह निर्भर होता है और न ही पूरी तरह स्वतंत्र । अगर ऐसा हो तो संदेश की जरूरत ही समाप्त हो जाएगी और अगर संदेश सिर्फ एक ही निश्चित अर्थ तक सीमित रहेगा तो ग्रहीता के लिए उस संदेश के साथ रचनात्मक संबंध नहीं बन पाएगा ।

संदेश में अर्थ की व्यंजनाएँ कितनी है यह संदेश की प्रकृति पर ही निर्भर करेगा । मसलन, सूचना आधारित संदेशों में अर्थ की व्यंजनाएँ न्यूनतम हागी और सौंदर्यबोधीय संदेशों में अधिकतम। लेकिन सूचना आधारित संदेशों के बारे में यह कहना सही नहीं होगा और न ही सौदर्यबोधीय संदेशों

के बारे में । कई बौद्धिक संदेश दिक् काल की सीमाओं को लांघते हुए नई अर्थ व्यंजनाएं करते हैं । मसलन, मार्क्स से लेकर महात्मा गांधी तक ऐसे कई विचारक हैं जिनके बौद्धिक कार्यों के नए अर्थ नयी चुनौतियों के संदर्भ में सामने आए । साहित्य और कला के अन्य रूपों के बारे में यह एक जाना पहचाना सत्य है ।

9.8 जनसंचार के पाठक, श्रोता और दर्शक

जनसंचार माध्यमों में जन से तात्पर्य उन माध्यमों के ग्रहीता से होता है । मुद्रित माध्यमों के संदर्भ में वह पाठक है, श्रव्य माध्यमों के संदर्भ में वह श्रोता है और दृश्य माध्यमों के संदर्भ में वह दर्शक है । आमतौर पर जनसंचार माध्यमों की पूरी संकल्पना एकतरफा संचार पर कायम है और मान लिया गया है कि यह उसकी प्रकृति में ही है कि वे एकतरफा हो जबकि जरूरत उनको दोतरफा बनाने की है । प्रसिद्ध जर्मन लेखक और चिंतक ब्रतोल्त ब्रेख्त ने इस बात की जरूरत को रेडियो के संदर्भ में रेखांकित करते हुए लिखा है - 'रेडियो के काम करने का तरीका एकतरफा है जबकि इसे दोतरफा होना चाहिए । यह विशुद्ध रूप से ऐसी चीज है जिससे किसी के विचारों का सिर्फ वितरण किया जाता है । यह अच्छा सुझाव है कि इसे वितरण की बजाए संवाद का माध्यम बनाया जाए । रेडियो लोगों के जीवन की सबसे उपयोगी चीज हो सकती है बशर्ते इसके जरिए सिर्फ विचारों का प्रेषण न किया जाए । इसे दूसरे के विचारों को सुनने का माध्यम भी बनाया जाना चाहिए । इसका इस्तेमाल ऐसे किया जाना चाहिए जिससे श्रोता सिर्फ सुनना नहीं बोलना भी सीखे । इसका इस्तेमाल ऐसे ही हो कि जनता अलग-अलग न पड़े ।' (ब्रतोल्ल ब्रेख्त का कथन, पीसी. जोशी की पुस्तक 'कल्चर, कम्युनिकेशन एंड सोशल चेंज' से उद्धृत, पृ. 46) । जनसंचार माध्यमों ने समाज को दो भागों में बांट रखा है । एक वे हैं जिनका जनसंचार के माध्यमों पर अधिकार है और दूसरे वे जो इसका उपयोग करते हैं । जनसंचार माध्यमों के लिए संदेश का उत्पादन करने वाले और उनका उपभोग करने वाले भी आमतौर पर अलग-अलग होते हैं । नतीजतन, आम आदमी इनका उपभोक्ता बनकर रह गया है । उसकी संदेश के निर्माण और उसके प्रसार में कोई भूमिका नहीं है । यही कारण है कि ये माध्यम ग्रहीता की रचनात्मकता के विकास में कोई मदद नहीं कर पाते । जनसंचार माध्यमों के साथ लोगों का रिश्ता समानता के लोकतांत्रिक सिद्धांत पर आधारित नहीं है । आज किसी व्यक्ति के लिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि उसका इन माध्यमों के साथ किस तरह का रिश्ता है बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि उसके पास ये सब माध्यम उपलब्ध है या नहीं । जाहिर है इस दृष्टि से भारत में स्थिति अत्यंत चिंताजनक है । साक्षरता और आर्थिक क्षमता के अत्यंत निम्नस्तर के कारण अब भी एक तिहाई से ज्यादा आबादी मुद्रित माध्यमों के साथ नहीं जुड़ पाई है । कहने का तात्पर्य यही है कि जनसंचार माध्यमों में ग्रहीता का रिश्ता किस तरह का बनेगा यह इस पर निर्भर करता है कि सामाजिक व्यवस्था उसे किस तरह के संबंध बनाने का अवसर प्रदान करती है ।

जनसंचार माध्यमों के साथ ग्रहीता का रिश्ता उपभोक्ता के रूप में है तो जाहिर है कि इन माध्यमों पर अधिकार रखने वाले उसके द्वारा ऐसे माल की ही आपूर्ति करने का प्रयत्न करेंगे जिसे आसानी से और बड़ी मात्रा में बेचा जा सके । ऐसी स्थिति में जनसंचार माध्यम ऐसे सांस्कृतिक उत्पादों को फैलाने से ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं जिसके साथ ग्रहीता का रिश्ता सतही हो और जो उनके बौद्धिक और आत्मिक विकास में नहीं बल्कि भावनात्मक उत्तेजना बढ़ाने में सहायक हो । यही कारण है कि जनसंचार माध्यमों पर मनोरंजन कार्यक्रमों के उद्योग बन जाने के कारण उसका मकसद ही ऐसे

मनबहलाव कार्यक्रमों को पैदा करना हो गया है जो तत्काल और तेजी के साथ असर पैदा करे चाहे वह असर न तो स्वस्थ हो और न ही स्थायी । यही नहीं सूचना और शिक्षा के क्षेत्र में भी मनोरंजन उत्पादों वाली दृष्टि हावी होती जा रही है । लोगों की ऐसी सूचनों में दिलचस्पी बढती जा रही है जो उनमें सनसनी पैदा करे और लोग उसमें वैसी ही दिलचस्पी ले जैसे कोई जासूसी उपन्यास या फिल्म के आस्वादन से उनमें पैदा होती है । क्रिकेट का विश्व कप हो या कारगिल या आम चुनाव या मैच फिक्सिंग का मामला, इन सब मामलों में माध्यमों और ग्रहीता की प्रतिक्रिया इसी तरह रही है । ग्रहीता को भारतीय परंपरा में सहृदय माना जाता है । लेकिन आज जनसंचार माध्यम उसे सहृदय की बजाय रसिक ही बनाए रखना चाहता है ।

पाठक, श्रोता और दर्शक की अभिरुचियों के निर्माण में बहु त सी बातों की भूमिका होती है- आर्थिक-सामाजिक स्थिति, राजनीतिक-सांस्कृतिक संस्कार, माध्यम विशेष में उसकी दिलचस्पी और उसकी विशिष्टताओं को समझने की उसकी बौद्धिक क्षमता आदि । इन सभी के मिलेजुले असर से ही ग्रहीता की अभिरुचियों का निर्माण होता है । ये सभी बातें स्थिर नहीं रहती और व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ परिवर्तित होती रहती है । इस परिवर्तन में इन माध्यमों की अपनी भूमिका भी होती है। अगर किसी माध्यम द्वारा कुछ खास तरह के उत्पादों के प्रसारण को ही प्रमुखता दी जाती रहेगी तो उसका ग्रहीता के मानस पर अनुकूल असर नहीं होगा । उदाहरण के लिए, भारत में लगभग सभी प्रमुख राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समाचारपत्र राजनीति और राजनोतिज्ञो की जो तस्वीर पेश करते हैं उससे आम आदमी के मन में उनके प्रति नकारात्मक रवैया विकसित होता है । नतीजा यह होता है कि वे राजनीति के प्रति बहु त ही अलोकतांत्रिक और दायित्वहीन रवैया विकसित कर लेते हैं । खासतौर पर यह रवैया उन शिक्षित लोगों से ज्यादा दिखाई देता है जो जनसंचार माध्यमों के ज्यादा संपर्क में आते है और उन लोगों में कम जो इन सबसे वंचित है । चूंकि जनसंचार माध्यमों का सारा ढ़ांचा शहर केंद्रित और मध्यवर्ग केंद्रित है इसलिए वे आमतौर पर उनकी अभिरुचियों को ही ध्यान में रखते हैं और उनसे भी संवाद न करते हु ए सिर्फ उनके सम्मुख लगातार और तीव्र गति से नए्नए उत्पाद परोसते रहते हैं कि वे उनके साथ सहज संबंध नहीं बना पाते । वे महज उससे मिलने वाले आस्वाद के एडिक्ट होकर रह जाते हैं।

जनसंचार माध्यमों और ग्रहीता के बीच संबंधों का एक पहलू यह भी है कि प्रत्येक माध्यम एक खास तरह का ऐंद्रिक आस्वाद प्रदान करता है । मसलन, मुद्रित माध्यम में हम लिखी हु ई बातों के जरिए संदेश प्राप्त करते हैं । लिखी हु ई बातों को समझने की प्रक्रिया में हम शब्द और उसमें निहित अर्थ वैशिष्टय को समझने की क्षमता को विकसित करते हैं ' इसी प्रकार रेडियो के जरिए हम आवाज और ध्वनि को सुनकर उसमें निहित अर्थ को ग्रहण करते हैं । अर्थ ग्रहण की हमारी क्षमता का विस्तार और विकास इस बात पर निर्भर करता है कि उस आवाज और ध्वनि में अर्थ व्यंजना की कितनी संभावना निहित होती है । आमतौर पर जो सांस्कृतिक उत्पाद ग्रहीताओं की बौद्धिकता और कल्पनाशीलता को प्रेरित नहीं करते वे उनमें कुछ भी नया जोड़ने में कामयाब रहते हैं । इसका अर्थ यह भी नहीं है कि जो सांस्कृतिक उत्पाद ग्रहीता की भावनाओं को स्पर्श करते हैं, वे सदैव कल्पनाविहिन और अरचनात्मक होते है । भावना शून्य उत्पादन किसी भी ग्रहीता को आकृष्ट नहीं करते लेकिन बुद्धि और कल्पना शून्य संदेश की ग्रहिता के लिए उपयुक्त नहीं माने जा सकते ।

बोध प्रश्न - 2

1. जनसंचार की प्रक्रिया किन प्रश्नों में निहित है?

2. 'जनसंचार की प्रक्रिया एक गतिशील प्रक्रिया है ।' इस कथन की व्याख्या कीजिए ।
3. जनसंचार के स्रोत क्या है?
4. संदेश किसे कहते हैं?
5. पाठक, श्रोता और दर्शक जनसंचार माध्यमों से कैसे जुड़े हुए है?

9.9 सारांश

जनसंचार माध्यमों से सबंधित इस इकाई में आपने कई महत्वपूर्ण पहलुओं का अध्ययन किया है । सबसे पहले अपने इस बात को समझा कि जनसंचार के सिद्धांतों के निर्माण का आधार क्या है और उनका विकास कैसे होता है । जनसंचार माध्यमों के कई घटक हैं जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । इनमें जनसंचार की प्रौद्योगिकी, माध्यम, संदेश, संदेश को भेजने वाला और संदेश को प्राप्त करने वाला ये महत्वपूर्ण घटक हैं । इनमें से प्रत्येक घटक के भी कई पथ हो सकते हैं । मसलन प्रौद्योगिकी में निरंतर होने वाले परिवर्तन प्रौद्योगिकों को नियंत्रित करने वाली शक्तियां, उससे जुड़े व्यावसायिक और संस्थागत ढ़ाचे और उनकी प्रकृति और कार्यविधि । इसी प्रकार माध्यम, संदेश, प्रेषिति के भी कई पक्ष होते हैं। इन सभी घटकों और पहलुओं से जनसंचार माध्यमों के सिद्धांत पक्ष का निर्धारण होता है ।

जनसंचार माध्यम की दूरी संकलपाना संभव हुई नहीं होती यदि प्रौद्योगिकी में विद्वितीय प्रक्रिया का समावेश नहीं हुआ होता। विद्युत ऊर्जा ने ही आधुनिक संचार माध्यमों के विकास के मार्ग को प्रशस्त किया है । मुद्रण, तार, टेलीफोन, रेडियो, सिनेमा, टेलिविजन और अब कंप्यूटर और उपग्रह संचार प्रणाली का विकास भी इसलिए हो सका । जनसंचार माध्यम का एक महत्वपूर्ण घटक माध्यम है । जनसंचार के मुख्य रूप से तीन माध्यम है- मुद्रित, श्रव्य और दृश्य । इन तीनों की माध्यमों की विशिष्टता और संचार में इनकी भूमिका पर इकाई में प्रकाश डाला गया है ।

जनसंचार माध्यमों में जनसंचार की प्रक्रिया को समझना जरूरी है । जनसंचार की प्रक्रिया को पाँच सवालों के जरिए समझा जा सकता है । क्या संप्रेषित होना है, कैसे संप्रेषित होना है, किसे संप्रेषित होना है, कौन संप्रेषित करने वाला है किस रूप में संप्रेषित की प्रक्रिया में ये सभी पक्ष जरूर होते है । अगर हमें यह नहीं मालूम कि क्या संप्रेषित किया जाना है तो हम संप्रेषण कि प्रक्रिया कि शुरुआत ही नहीं कर सकते । इसी प्रकार यदि हमें यह नहीं मालूम कि किसे संप्रेषण करना है तो भी हमारी संचार प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकती । कहने का तात्पर्य यह है कि किसी माध्यम से संचार प्रक्रिया क्यों न घटित हो रही हो, इन सभी पक्षों को हल किए बिना वह संभव नहीं है ।

जनसंचार माध्यम के स्त्रोतों का भी उसके अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान है । इन माध्यमों में सबसे बड़ा स्त्रोत तो स्वयं जनता ही है जिनके लिए संचार माध्यमों का विकास होता है। लेकिन इसके अलावा जिस मकसद से जनसंचार किया जाता है कि वे भी इसके स्त्रोत है । जनसंचार माध्यम में उसके संदेशों कि प्रकृति और स्वरूप को समझना भी जरूरी है संदेश को प्रभावित करने वाले कई तत्व होते है । उदाहरण के लिए, किनकों संदेश संप्रेषित किया जाना, किस माध्यम से संप्रेषित किया जाना है, संदेश के निर्माण में किसकी क्या-क्या भूमिका है आदि। जनसंचार माध्यम का सबसे बुनियादी आधार वह ग्रहीता है जिस तक संचार किया जाता है । जनसंचार माध्यम का ढांचा विकसित हुआ है वह एकतरफा जनसंचार का है जिसमें पाठक, दर्शक और श्रोता कि भूमिका एक तरफ होती है यानि

वह सिर्फ उपभोक्ता होता है । अगर ग्रहीता को उपभोक्ता ही माना जा रहा है और उसके मानसिक और बौद्धिक जुड़ाव को जनसंचार का उद्देश्य नहीं माना जाता तो वह कभी प्रभावी नहीं हो सकता ।

जनसंचार माध्यम के इन विभिन्न पहलुओं कि चर्चा से आपको जनसंचार के सिद्धांतों को समझने में मदद मिलेगी जिसका अध्ययन आप आगे कि इकाई में करेंगे ।

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. देवेंद्र इस्सर, जनमाध्यम संप्रेषण और विकास, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-110051.
2. जवरीमल्ल पारख, जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली -110052.
3. पूरनचंद जोशी, संस्कृति और जनसंचार माध्यम, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली-110092
4. जवरीमल्ल पारख, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली-110092
5. डा. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002

9.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. जनसंचार माध्यमों के सिद्धांतों का निर्माण किन-किन बातों से निर्धारित होता है? इनका उल्लेख करते हुए जनसंचार की प्रक्रिया में इनकी भूमिका पर प्रकाश डालिए ।
2. जनसंचार माध्यम की विद्युतीय प्रक्रिया से क्या तात्पर्य है? जनसंचार के आधुनिक माध्यमों के विकास में इसके योगदान का उल्लेख कीजिए ।
3. जनसंचार माध्यमों में संदेश और ग्रहीता के अंतःसंबंधों की सोदाहरण विवेचना कीजिए ।
4. टेलीविजन के एक स्थाई दर्शक के रूप में आप किस तरह के कार्यक्रम देखते हैं? क्या आप इन कार्यक्रमों से संतुष्ट हैं और आप इनमें किस तरह का परिवर्तन चाहेंगे?
5. जनसंचार माध्यमों से प्रसारित होने वाले संदेशों को कौन निर्धारित करता है? इसमें ग्रहीता की क्या भूमिका है? समाचारपत्र या सिनेमा का उदाहरण लेते हुए मत को प्रस्तुत कीजिए ।

इकाई-10 जनसंचार के सिद्धांत (भाग-2)

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 संप्रेषणीय सिद्धांत
10.3 अर्थगत सिद्धांत
10.4 सामाजिक सिद्धांत
10.5 सांस्कृतिक सिद्धांत
10.6 सारांश
10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें
10.8 निबंधात्मक प्रश्न

10.0 उद्देश्य

जनसंचार के सिद्धांत से संबंधित यह दूसरी इकाई है । इस इकाई में आपको जनसंचार के विभिन्न सिद्धांतों से परिचय कराया जाएगा । इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- जनसंचार के संप्रेषणीय सिद्धांत का विवेचन कर सकेंगे ।
- जनसंचार के अर्थगत सिद्धांत को समझा सकेंगे ।
- जनसंचार के सामाजिक सिद्धांत का परिचय प्राप्त करेंगे और उनके स्पष्ट कर सकेंगे ।
- जनसंचार के सांस्कृतिक सिद्धांत की व्याख्या कर सकेंगे ।

10.1 प्रस्तावना

जनसंचार के सिद्धांत से संबंधित यह दसवीं इकाई है । इससे पूर्व की इकाई में हमने जनसंचार के सिद्धांतों से जुड़े विभिन्न घटकों और पहलुओं पर सौदाहरण विचार किया था । अब हम उन कुछ सिद्धांतों की चर्चा करेंगे जिन्हें हम जनसंचार के सिद्धांत के नाम से जानते हैं । जनसंचार का अध्याय लगभग उतना ही पुराना है जितने पुराने ये जनसंचार माध्यम । लेकिन स्वतंत्र अनुशासन और अध्ययन क्षेत्र के रूप में जनसंचार माध्यम बहु त पुराने नहीं है । आज दुनिया भर में यह एक स्वतंत्र अनुशासन बन चुका है और जिससे संबंधित विभाग, संस्थान यहां तक कि विश्वविद्यालयों की भी स्थापना हो चुकी है । जनसंचार माध्यम के अध्ययन का जैसे- जैसे विस्तार हु आ है वैसे-वैसे इसको सैद्धांतिक स्वरूप प्रदान करने का काम भी होता गया है । सैद्धांतिकिकरण की यह कोशिशें यूरोप और अमरीका में ही ज्यादा हु ई है जहां इन माध्यमों का विस्तार तीसरी दुनिया के देशों से कहीं ज्यादा है । वहां जनसंचार माध्यमों ने उद्योग का रूप ले लिया है । आज इसमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर और इंटरनेट तथा मनोरंजन उद्योग शामिल है । इस प्रकार जनसंचार के सिद्धांतों के निर्माण की प्रक्रिया में उसकी प्रौद्योगिकी, संस्थानीकरण, व्यवसायीकरण, उत्पादकीय और पुनरुत्पादकयि प्रक्रियाएं, संप्रेषण की प्रक्रिया, संदेश और ग्रहीता के अंत:संबंध के विभिन्न स्तर और रूप शामिल हैं । जाहिर

है इस छोटी सी इकाई में इन सभी पक्षों से संबंधित सिद्धांत पक्षों के उल्लेख संभव नहीं है । लेकिन यहां ऐसे कुछ सिद्धांतों की चर्चा करेंगे जिससे संचार की प्रक्रिया और प्रविधि को समझने में मदद मिलेगी।

इस इकाई में हम जिन सिद्धांतों का उल्लेख करने जा रहे हैं वे सभी सिद्धांत जनसंचार के द्वारा संदेशों के प्रसारण और ग्रहण की प्रक्रिया से संबंधित हैं । जनमाध्यम कैसे संदेश का प्रसारण करते हैं और ग्रहीता उसे किस रूप में ग्रहण करते हैं । इसके तकनीकी पहलू के अलावा भी कई बातें हैं जिन पर विचार करने की जरूरत है । जनसंचार माध्यम के द्वारा जो संदेश प्रसारित होते हैं वे ठीक उसी रूप में नहीं होते जिस रूप में वह संदेश की अंतर्वस्तु का निर्माण करने वाला तय करता है । प्रत्येक संदेश पहले सांकेतिक रूप में परिवर्तित होता है और बाद में वह संप्रेषित होता है । यही सांकेतिक रूप दुबारा संदेश में परिवर्तित होकर ग्रहीता तक पहुंचता है । लेकिन क्या वह वही संदेश होता है जिसे प्रेषित किया गया था? संदेश के संकेतित होने और उसके पुन: संदेश में परिवर्तित होने की प्रक्रिया जिसे कोडिंग और डिकोडिंग कहा जाता है, की सिद्धांतकारों ने भिन्न-भिन्न ढंग से व्याख्या की है । इसके साथ ही संप्रेषण के लिए जो संदेश है उसका निर्धारण कैसे होता है और उनको निर्धारित करने में कौन से कारक अपनी भूमिका निभाते हैं । साथ ही उनके ग्रहण करने की प्रक्रिया से कौन सी बाहरी और आतंरिक बातें प्रभावित करती हैं, इस इकाई में हमने उन्हीं से संबंधित पहलुओं पर विचार करेंगे ।

जनसंचार का क्षेत्र हमारे समाज से निरपेक्ष नहीं होता । संचार की जरूरत मनुष्यों को होती है, दूसरे मनुष्यों से संवाद करने के लिए । यह संवाद कई कारणों और कई रूपों में होता है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है लेकिन वह एक सांस्कृतिक इकाई भी है । वह जिन समाजों में रहता है उनकी अपनी विशिष्टता होती है । उनकी भाषा, उनका खानपान, उनकी वेशभूषा, उनका रहन-सहन और उनके रीतिरिवाज एक दूसरे से अलग भी होते हैं और एक दूसरे से प्रभावित भी होते हैं । मनुष्य जीवन के ये पक्ष मिलकर ही उसका सांस्कृतिक जीवन निर्मित होता है जिसका संचार माध्यमों की अंतर्वस्तु को निर्धारित करने में अहम् भूमिका होती है । जनसंचार की प्रक्रिया खास राजनीतिक- आर्थिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत आकार लेती है । इस प्रकार ये सभी पक्ष जनसंचार के सिद्धांतों के निर्माण को प्रभावित करते हैं । हम इन सभी पहलुओं के परिप्रेक्ष्य में जनसंचार सिद्धांतों पर विचार करेंगे ।

10.2 संप्रेषण सिद्धांत

सबसे पहले हम संप्रेषण सिद्धांतों की चर्चा करेंगे । इनमें मुख्य बल प्रेक्षपण या प्रेषण पर होता है । प्रक्षेपण और प्रेषण दो भिन्न तरह की प्रक्रियाएं हैं । जब किसी जनसंचार माध्यम से कोई संदेश प्रसारित किया जाता है तो उसे प्रक्षेपित कहना कहते हैं । जब हम सिनेमाघर में कोई फिल्म देखने जाते है तो हमारे सामने एक सफेद पर्दा होता है जिस पर प्रोजेक्टर द्वारा किरणें फैंकी जाती हैं । ये किरणें ही गतिशील चित्रों के रूप में पर्दे पर परिवर्तित होती हैं । प्रोजेक्टर पर फिल्म की रील चल रही होती है जिसका एक-एक फ्रेम निरंतर और एक निश्चित गति के साथ पर्दे पर प्रक्षेपित होता रहता है। हम फिल्म को इस फ्रेम के अंदर ही देखते हैं । यानी फिल्म हमें जो दिखाना चाहती है वह इस फ्रेम की सीमा में ही पेश करेगी । हम फिल्म की भाषा में इसे पैंतीस मिमि या सत्तर मिमि या सिनेमास्कोप आदि कई नामों से जानते है । एक फिल्म में फ्रेम की लंबाई और चौड़ाई स्थिर रहने के बावजूद भी हमारे सामने आने वाले दृश्य गतिशील होते हैं । वे दाए से बाए, बाए से दाए, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, आगे से पीछे और पीछे से आगे फ्रेम के अंदर गतिशील रहते हैं । फिल्मकार के सामने यह विकल्प रहता है कि वह दृश्य जिस रूप में दिखाना चाहे दिखा सकता है । लेकिन उसका यह चयन इस बात

पर निर्भर करता है कि वह इस तरह का प्रभाव पैदा करना चाहता है? प्रभाव से यहां तात्पर्य संदेश की अर्थ व्यंजना से है । यह प्रेक्षपण अच्छा या बुरा हो सकता है, रुचिकर और अरुचिकर हो सकता है और सुंदर और असुंदर हो सकता है तथा उसी के अनुसार अर्थ व्यंजना भी प्रभावित होती है । अगर हम एच. लासवल के शब्दों में इस बात को रखें तो इस तरह कह सकते है- 'कौन किसे क्या कह रहा है और किस तरह से और कितने प्रभावशाली ढंग से कह रहा है ।

दूसरे माध्यमों में भी हम इसे घटित होता हुआ देख सकते हैं । रेडियो में जो आवाजें और ध्वनियां प्रक्षेपित होती हैं वे ठीक उसी रूप में नहीं होती जिस रूप में सिनेमा में होती है । इसी तरह के दूसरे माध्यम या एक ही माध्यम की अलग- अलग विधाएं हैं । मसलन, टेलीविजन में क्रिकेट का सीधा प्रसारण और टेलीफिल्म का प्रसारण एक माध्यम से होते हुए भी एक सा नहीं होता । टेलीफिल्म या धारावाहिक में रिकार्डिंग की प्रक्रिया प्रसारण के साथ-साथ नहीं बल्कि पहले होती है । यह रिकार्डिंग अलग-अलग दृश्यों में होती हैं जिसे बाद में संपादन के द्वारा पटकथा के अनुरूप संयोजित किया जाता है । आवश्यकता के अनुसार उनमें काट-छांट की जाती है । दृश्यों की मिक्सिंग की जाती है और उनमें विशेष प्रभाव के लिए संगीत और ध्वनियों को जोड़ा जाता है ।

लेकिन इन दोनों तरह के संप्रेषण में संदेश का निर्धारण कौन करता है? क्या जो प्रक्षेपित होता है उसको लोग सिर्फ ग्रहण करते हैं या वे उसे निर्धारित भी करते हैं । क्या जनसंचार माध्यमों से वह भी संप्रेषित होता है जिसे ग्रहण करने की इच्छा लोगों में नहीं है? अब तक यह माना जाता रहा है कि भेजने वाले के पास एक संदेश होता है जो किसी माध्यम के जरिए ग्रहीताओं तक भेजता है । लेकिन अब यह माना जाने लगा है कि समाज में भिन्न-भिन्न तरह के संदेश पहले से मौजूद होते हैं, घटनाओं, गतिविधियों और विचारों के रूप में । जिसे प्रेषक संदेश का रूप प्रदान करते हैं और उन्हें किसी माध्यम द्वारा ग्रहीताओं तक संप्रेषित करते हैं । इसका अर्थ यह है कि प्रेषक जिन संदेशों को संप्रेषित करता है वह उसकी मौलिक रचना नहीं होती बल्कि वह सिर्फ संदेश का रूप प्रदान कर संप्रेषित करता है । संप्रेषित करने की प्रक्रिया में बी. वेस्ले और एम. मेक्लियन के अनुसार इन बातों को निर्धारित करने में कई बातों का महत्व होता है । मसलन, जन प्रेषक की चयन भूमिका । वह चयन करता है इसलिए उसकी भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है कि वह क्या चुनता है और क्या छोड़ता है । चयन की यह प्रक्रिया इस बात से तय होती है कि लोग किस संदेश को पसंद करेंगे । यहीं संप्रेषण से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख किया जा सकता है ।

इसमें सबसे प्रमुख है, शेनन और विवर द्वारा विवर प्रस्तुत गणितीय मॉडल (जॉन फिस्क: इंट्रोडक्शन टू कम्युनिकेशन स्टडीज) । आमतौर पर संप्रेषण को रेखिक रूप में समझा जाता है जिसे नीचे दिए गए चित्र में समझाया गया है ।

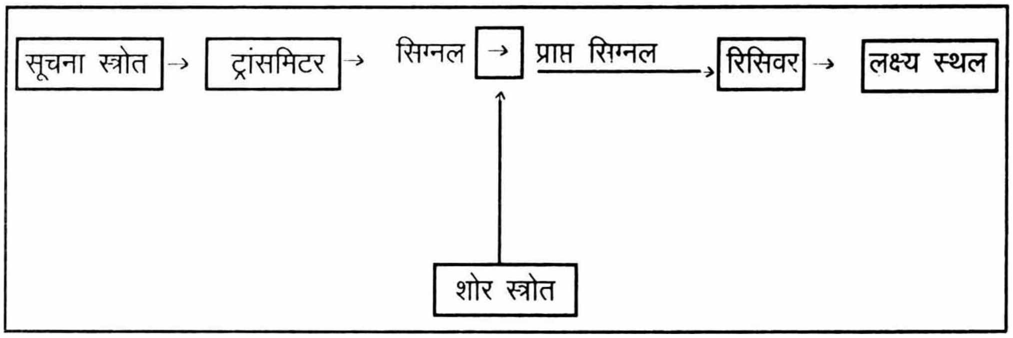

संप्रेषण की इस रेखिक प्रक्रिया में शेनन और विवर को तीन स्तरों पर कठिनाइयां नजर आती हैं । ये हैं -

स्तर क- तकनीकी समस्याएं	संप्रेषण के संकेतों को किस हद तक सही-सही प्रेक्षित किया जा सकता है ।
स्तर ख- अर्थगत समस्याएं	संप्रेषित संकेत वांछित अर्थ को किस हद तक ठीक-ठीक संप्रेषित करता है ।
स्तर न- प्रभाव संबंधी समस्याएं	प्राप्त अर्थ जिस हद तक आचरण को वांछित रूप में प्रभावित करता है ।

जॉन फिस्क के अनुसार तकनीकी समस्याओं को समझने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती । तकनीक के क्षेत्र में होने वाले नए-नए प्रयोगों का मकसद यही होता है कि संप्रेषण को ज्यादा से ज्यादा सही रूप में प्रक्षेपित किया जा सके । लेकिन अर्थगत समस्यों को हल करना अपेक्षाकृत मुश्किल होता है । इसमें कई बाहरी घटक भी अपनी भूमिका अदा करते हैं । मसलन, संकेतों से जुड़े संदर्भ । यदि लोग उन संदर्भों से परिचित नहीं है तो उनके लिए अर्थ ग्रहण करने में कठिनाइयां आ सकती है । शेनन और विवर का मानना है कि अर्थ संदेश में निहित होता है । इस प्रकार विसंकेतीकरण को सुधारकर अर्थ को काफी हद तक ठीक-ठीक संप्रेषित किया जा सकता है । अर्थ-व्यंजना में सांस्कृतिक घटकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है और संदेश का विसंकेतीकरण उस सांस्कृतिक परिधि के अंतर्गत होता ही जिससे वह संबंधित होता है । लेकिन जहां तक प्रभाव संबंधी समस्याओं का प्रश्न है यह इस बात पर निर्भर करता है कि पहले दो स्तरों पर संप्रेषण किस हद तक सफल रहा है । लेकिन इस सफलता का यह अर्थ नहीं है कि संदेश वांछित प्रभाव डालेगा । ग्रहीता पर संदेश की भावनात्मक और सौंदर्यबोधीय प्रक्रिया किस तरह की होगी उससे संप्रेषम के प्रभाव को जांचा जा सकता है, इस बारे में कुछ भी निश्चित रूप में कहना कठिन है ।

अब हम ऊपर दिए गए चित्र पर विचार करें । आमतौर पर दृश्य माध्यमों में इस प्रक्रिया को समझना आसान होता है जबकि यह प्रक्रिया सभी प्रकार के संप्रेषण में विद्यमान होती है । हमने जिस सूचना स्त्रोत की बात कही है यह उस प्रक्रिया का वह बिंदू है जो यह तय करता है कि कौन सा संदेश भेजा जाना है या जो विभिन्न संभावित संदेशों में से भेजे जाने योग्य संदेशों का चुनाव करता है । इस चयनित संदेश को ट्रांसमिटर द्वारा सिग्नल में बदला जाता है और जिसे चैनल के जरिए रिसिवर तक भेजा जाता है (जॉन फिस्क, पृ. 8) । उदाहरण के लिए समाचारपत्र के माध्यम से जो संदेश भेजा जाता है उसमें भी यही प्रक्रिया घटित होती है । सूचनाओं का जो भंडारण होता है उसमें से संपादक मंडल के लोग भेजे जाने योग्य संदेशों का चयन करते हैं । मुद्रण की पूरी तकनीकी प्रक्रिया वह ट्रांसमिटर है जो संदेशों को संकेतों में तब्दील करता है और उसे अखबार के माध्यम से ग्रहीताओं तक भेजता है। जॉन फिस्क ने बातचीत को भी इसी प्रक्रिया के रूप में समझाया है । बातचीत में मेरा मुँह ट्रांसमिटर है ध्वनि तरंगें संकेत हैं जो वायु के जरिए ग्रहीता तक पहुंचता है जिसके कान रिसिवर का काम करते हैं । हम निर्वात में बातचीत नही कर सकते । यहां यह बात जरूर ध्यान रखने की है कि अलग- अलग संचार माध्यमों में यह प्रक्रिया और इसके विभिन्न चरण कम या ज्यादा काम कर सकते हैं ।

इस मॉडल में शोर की महत्वपूर्ण भूमिका है । शोर से तात्पर्य यह है कि जो भी संदेश हम संप्रेषित करते हैं उसके अलावा जो संप्रेषित होता है और ग्रहण किया जाता है और जिसे संप्रेषित करना प्रेषक का लक्ष्य नहीं होता वह शोर है । यह कई कारणों से और कई रूपों में हो सकता है । मसलन,

यह तकनीकी खराबी के कारण हो सकता है । यह आसपास के माहौल के कारण हो सकता है । लेकिन जिस किसी कारण से भी हो यह संदेश के ग्रहण को प्रभावित करता है और प्रेषक के वांछित लक्ष्य को विकृत करता है ।

इस सिद्धांत में सूचना की अवधारणा का भी महत्वपूर्ण स्थान है । जब संकेत द्वारा किसी सूचना को संप्रेषित किया जाता है तो उसमें दोहरी अर्थ संभावना निहित होती है । ग्रहीता उसमे से अधिकतम संभाव्यता वाला अर्थ ग्रहण करता है । जो संदेश भेजा जाता है हम उसकी उपयुक्तता को सदैव अपने अनुभव के आधार पर तय करते हैं यानी संकेतों को जब हम विसंकेतित करते हैं तो उसका आधार वह अनुभव और संदर्भ होते हैं जिसकी मदद से विसंकेतीकरण की प्रक्रिया घटित होती है । अनुभव से तात्पर्य उस परंपरा से है जो संकेतों के विसंकेतीकरण में मदद करती है । उदाहरण के लिए जीवन कल आएगा और जीवन मुश्किल होता जा रहा है । इन दो वाक्यों में जीवन का अर्थ एक ही नहीं है। पहले वाक्य में यह एक व्यक्ति के नाम का संकेत है और दूसरे में जीवन लाइफ के अर्थ में है । इन दोनों अर्थों को समझने में गृहिताओं को इसलिए मुश्किल नहीं होगी क्योंकि वाक्य की रचना ही उसके सामने यह जाहिर कर देगी कि किस वाक्य में जीवन का क्या अर्थ है । लेकिन कई बार वाक्य रचना ऐसी होती है जिससे यह तय करना मुश्किल होता है कि इसे किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया है । मसलन, यह जीवन है क्या? अब यहां जीवन पहले और दूसरे दोनों अर्थों में प्रयुक्त हो सकता है । ऐसी स्थिति में संदर्भ से तय होगा कि जीवन को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया है और तब विसंकेतीकरण की प्रक्रिया घटित होगी ।

इस संदर्भ में माध्यम की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । माध्यम यानी भाषा या वह तकनीकी जरिया जिसके द्वारा संदेश को भेजा जाता है । मसलन, मुद्रित संप्रेषण या रेडियो या टेलीविजन में संप्रेषण की प्रक्रिया अलग-अलग ढंग से प्रभावित होती है । एक जगह लिखित शब्द दूसरी जगह आवाज और ध्वनियां और तीसरी जगह दृश्य संप्रेषण के माध्यम बनते हैं । माध्यम में और भी कई चीजें शामिल हो सकती है । मसलन, आवाज का उतार-चढ़ाव और अभिनय । फिल्म देखते हुए अभिनेता या अभिनेत्री की भाव प्रदर्शन क्षमता संप्रेषण को प्रभावित करती है । यह ऐसा सत्य है जिससे हम सभी वाकिफ हैं । इसी प्रकार छात्र के रूप में हम जानते है कि कई अध्यापक काफी रोचक ढंग से बोलते हैं और उनकी कही हुई बात आसानी से समझ में आ जाती है जबकि कई लोग इतने बोरियत भरे ढ़ंग से पढ़ाते हैं कि उनकी कही बात समझना आसान नहीं होता । उपर्युक्त आधार पर माध्यम को तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं (जॉन फिस्क पृ. 18)

1. प्रदर्शक माध्यम (प्रेजेंटेशनल मीडियम) - आवाज, चेहरा, देह आदि प्रदर्शक माध्यम हैं इनका बोले जाने वाले शब्दों. अभिव्यक्तियों, मुद्राओं आदि में 'स्वाभाविक' भाषाओं के रूप में इस्तेमाल होता है । इसके लिए प्रस्तोता की जरूरत होती है ।

2. प्रातिनिधिक माध्यम (रिप्रेजेंटेशनल मीडियम) - इसके अंतर्गत पुस्तकें, चित्र, छायाचित्र लेखन, वास्तुकला, आंतरिक साजसज्जा, बागवानी आदि आते हैं । इस तरह के कई माध्यम हो सकते है जिनका उपयोग सांस्कृतिक और सौंदर्यबोधीय परंपराओं को 'पाठ' के रूप में सृजित करने के किया जाता है ।

3. यांत्रिक माध्यम - इसके अंतर्गत टेलीफोन, टेलीविजन, रेडियो आदि आते हैं । ये पहले दो माध्यमों को संप्रेषित करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं । लेकिन अपनी तकनीकी सीमाओं में हुए

प्रत्येक माध्यम की अपनी विशेषताएं होती हैं । मसलन, किसी किताब में शब्दों के ऐसे संसार की सृष्टि की जा सकती है जिसे हम टेलीविजन और सिनेमा में भी देख सकते हैं । लेकिन किताब में जो संसार शब्दों के रूप में आता है उसे हम अपनी कल्पना के द्वारा अपने मानस में दृश्य और ध्वनि के रूप में पुनःसृजित करते हैं । इसके विपरीत रेडियो में ध्वनि की विशेषताएं तो समाहित हो जाता है लेकिन दृस्य बिंबों को वहां भी ग्रहीता को कल्पना से ही रूपांतरित करना होता है ।

संकेत: संकेत अर्थ की ऐसी व्यवस्था है जो किसी खास संस्कृति से जुड़े लोगों के लिए एक सी होती है । इसमें भौतिक संकेत और उसके नियम और परंपराएं दोनों अंतनिर्हित होते हैं जो इन संकेतों के संदर्भों को निर्धारित करते हैं । लिखित भाषा या वाचिक भाषा के संकेत मूल रूप में एक से होते हुए भी अपने माध्यम के कारण भिन्न हो जाते हैं । मसलन, जाओ शब्द लिखे जाकर एक ही तरह के अर्थ को ध्वनित करेगा । लेकिन बोले जाने पर वह भिन्न-भिन्न अर्थ व्यक्त कर सकता है । यह बोले जाने के ढंग पर निर्भर करेगा । जाहिर है कि अर्थ की इन नई संभावनाओं को जिन्हें बोले जाने पर ही प्रकट किया जा सकता है । अगर उसे लिखित भाषा के माध्यम से प्रकट किया जाना है तो उसके साथ अन्य शब्दों और ध्वनि संकेतों को जोड़ना होगा ।

प्रक्षेपीय या प्रेषणीय सिद्धांत की सीमा यह है कि यह एक तरफा रेखिक संप्रेषण को ही सामने लाता है । यहां यह मान लिया गया है कि जो संप्रेषित किया जाना है उसे सफलतापूर्वक संप्रेषित करना ही प्रेषक का मकसद है और वही ग्रहीता का भी । यह एक भौतिक समस्या है जिसे भौतिक स्तर पर ही हल किया जा सकता है । यहां इस बात को भी ध्यान में नहीं रखा गया है कि ग्रहीता का मानस संदर्भ विहीन नहीं होता और वह संप्रेष्य संदेश को ग्रहण करने में अपने संस्कार, अनुभव और विवेक का प्रयोग करता है । संप्रेषण की पूरी प्रक्रिया एक सामाजिक प्रक्रिया भी है और सांस्कृतिक प्रक्रिया भी ।

संप्रेषण की प्रक्रिया से संबंधित एक अन्य सिद्धांत की चर्चा जॉन फिस्क ने की है । इसे जॉर्ज गेर्बनेर के सिद्धांत के रूप में जाना जाता है । इस सिद्धांत में संचार की प्रक्रिया की जटिलता को समझने का प्रयास किया गया है । इस सिद्धांत में संदेश को यथार्थ के साथ जोड़कर देखा गया है जिससे कि हम उस यथार्थ की अभिव्यक्ति के द्वारा जो अनुबोधन होता है उसके अर्थ को समझ सकें । इस सिद्धान्त में माना गया है कि जो बाहरी यथार्थ है उसके ही एक हिस्से के तौर उस वस्तु की अभिव्यक्ति होती है जिसे मीडिया संप्रेषित कर रहा है । लेकिन संप्रेषण से पूर्व ग्रहण किए जाने पर यह वस्तु एक सी नहीं रहती । यानी जो संप्रेषित किया जाता है और जो ग्रहण किया जाता है वह अलग- अलग है । प्रश्न यह भी उपस्थित होता है कि ग्रहण करने वाला कौन है? यदि वह कोई यंत्र है जैसे कैमरा या माइक्रोफोन तो अनुबोधन (पर्सेप्शन) को वह यंत्र निर्धारित ग्रहण करने वाला मनुष्य तो यह अनुबोधन और भी जटिल होगा । यंत्र के द्वारा संदेश का ग्रहण उसकी तकनीकी विशिष्टता निर्धारित और नियंत्रित होगा लेकिन मनुष्य में यह प्रक्रिया संदेश और मनुष्य के बीच अंतक्रिया संवाद द्वारा तय होगी । यह अपेक्षाकृत जटिल प्रक्रिया है क्योंकि इसमें मनुष्य के विचार और अवधारणाओं की भूमिका होती है जो यंत्र की तरह नियत नहीं होती । इस प्रक्रिया में मनुष्य जो कुछ ग्रहण करेगा उसी से वह उस संदेश को अर्थ देगा । (जॉन फिस्क पृ. 26) । इस प्रक्रिया से यह साफ हो जाता है कि संदेश के अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया एक ओर बाहरी यथार्थ और दूसरी और आंतरिक अवधारणाओं के बीच सादृश्य बैठाने की कोशिश का परिणाम होती है । यह सादृश्य बैठाने का काम उस सांस्कृतिक ढांचे के अंतर्गत होता है जिसमें हमारे विचार और धारणाएं निर्मित होती है । इसका अर्थ यह भी है कि विभिन्न संस्कृतियों

के लोग एक ही संदेश को भिन्न-भिन्न ढंग से ग्रहण करेंगे । (जॉन फिस्क, पृ. 27) । गेर्बनेर के सिद्धांत का यह पहला चरण है जिसे क्षैतिज आयाम (हारिजेंटल डजाइमेंशन) कहा जा सकता है ।

गेर्बनेर के सिद्धांत का दूसरा चरण उर्ध्वगामी आयाम (वर्टिकल डाइमेंशन) कहा जा सकता है। पहले चरण में जिस वस्तु को ग्रहण करने की बात हमने कही थी उसे अभिव्यक्त करने के लिए संकेतित किया जाता है । गेर्बनेर के अनुसार जिसे हम आमतौर पर संदेश कहते हैं वह वस्तु के बारे में संकेत या वक्तव्य होता है । यह संदेश दो भागों में विभाजित होता है । एक संकेत और दूसरा वस्तु । वस्तु तो वही रहती है लेकिन संकेत को कई रूपों में और कई तरीके से संप्रेषित किया जा सकता है । संप्रेषक के लिए सबसे बड़ी समस्या यही होती है कि वह वस्तु के लिए किस संकेत का इस्तेमाल करे जो सबसे उपयुक्त हो । इससे यह भी स्पष्ट है कि वस्तु के लिए जो भी संकेत चुनेंगे उसका प्रभाव वस्तु की प्रस्तुति पर भी पड़ेगा । संकेत और वस्तु के बीच इस सिद्धांत मे जो भी कहा जा रहा है वह साहित्य के अंतर्गत वस्तु और रूप के सवाल की तरह ही है ।

शेनान और विवर के सिद्धांत से इसका अंतर यह है कि जहां उनके यहां संदेश स्वतंत्र रूप से मौजूद रहता है । संकेत सिर्फ उस सिद्धांत पर आवरण की तरह लिपटा होता है और ग्रहीता उस संकेत के आवरण को हटाकर संदेश को ग्रहण कर लेता है जबकि गेर्बनेर के यहां संदेश और संकेत दोनों अंतर्ग्रथित होते हैं । वस्तु बिना रूप के विद्‍यमान नहीं रह सकती और संकेत का चयन बहु त महत्वपूर्ण होता है क्योंकि उसका प्रभाव वस्तु के अर्थ के निर्धारित करने पर पड़ता है । यहां यह महत्वपूर्ण सवाल उठता है कि चयन की प्रक्रिया को कौन निर्धारित करता है । मसलन, समाचारपत्रों या टेलीविजन के समाचारों को निर्धारित कौन करता है । यहां मीडिया के स्वामित्व और वर्चस्व तथा उसमें काम करने वाले निष्पादकों की भूमिका का प्रश्न उपस्थित हो जाता है । हम इस बात को अपने रोजमर्रा के अनुभव से जानते हैं कि एक ही घटना को अलग- अलग ढ़ंग से पेश किया जाता है और उसे ग्रहीता अलग-अलग अर्थ में ग्रहण करता है । संदेश की प्रस्तुति को निर्धारित करने वाले घटकों में सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना का भी महत्वपूर्ण हाथ होता है । यहां इन पहलुओं पर विस्तार से जाने की आवश्यकता नहीं है ।

इस सिद्धांत के उर्ध्वगामी आयाम का एक घटक उपलब्धता का प्रश्न है । यानी कि संदेश को किन लोगों तक पहु ंचाया जाना है । क्या संदेश सबके लिए समान रूप से उपयोगी है? क्या फिल्म को बच्चों और बड़ों दोनों को दिखाया जाना है या उसे बच्चो से बचाया जाना है? संदेश के लिए उपयुक्त संकेत की तलाश करते हु ए ही नहीं बल्कि यथार्थ में से वस्तु का निर्धारण करते हु ए इस बात को ध्यान रखना होता है । यहां निष्पादक और वे सभी लोग और संस्थाएं जो इस प्रक्रिया पर नियंत्रण रखती है इसमें हस्तक्षेप करती है ।

गेर्बनेर के इस सिद्धांत का अपना महत्व है । वह शेनान और विवर के सिद्धांत का विकास करते हैं । लेकिन वे संप्रेषण तक ही अपने को सीमित रखते हैं । वे इस सवाल का जवाब देने में कामयाब नहीं होते कि अर्थ कहां से पैदा होता है ।

न्यूकॉब का सिद्धांत

शेनान और विवर के सिद्धांत और गेर्बनेर के सिद्धांत दोनों रेखिक हैं और मूलरूप से प्रेषण के प्रश्न को ही संबोधित करते हैं लेकिन न्यूकॉब के सिद्धांत में संचार की प्रक्रिया रेखिक रूप में नहीं घटित होती है । अगर आकार में ही इसे समझना चाहें तो इसे त्रिकोणीय सिद्धांत कह सकते हैं । जॉन फिस्क के अनुसार इस सिद्धांत का महत्व यह है कि यह संप्रेषण की भूमिका को समाज और सामाजिक संबंधों

के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखता है । न्यूकॉब का मानना है कि संप्रेषण सामाजिक व्यवस्था में एक तरह का संतुलन कायम करता है । इस सिद्धांत के अनुसार इस त्रिकोण के तीन बिंदू प्रेषक, प्रेषिति और सामाजिक परिवेश से मिलकर बनता है । प्रेषक और प्रेषिति कोई व्यक्ति भी हो सकता है, कोई समुदाय, संगठन या प्रबंधन हो सकता है । न्यूकॉब का मानना है कि यदि प्रेषक का प्रेषिति के साथ संबंधों में परिवर्तन होता है तो प्रेषक से प्रेषिति का संबंध भी बदलेगा और जब दोनों के संबंधों में बदलाव आएगा तो सामाजिक परिवेश जिससे न दोनों का संबंध है उसमे भी बदलाव आएगा । इसी प्रकार सामाजिक परिवेश में कोई बदलाव आता है तो प्रेषक और प्रेषिति में और उनके पारस्परिक संबंधों में बदलाव आना भी लाजमी है । यदि प्रेषक और प्रेषिति में संबंध मित्रतापूर्ण है तो उनका सामाजिक परिवेश एक सा और मित्रतापूर्ण होगा । लेकिन यदि उनके संबंध मित्रतापूर्ण नहीं है तो सामाजिक परिवेश से संबंध भी भिन्न-भिन्न होगा और इसका असर उस संदेश के प्रति रवैये में नजर आएगा जो दोनों का भिन्न होगा और उनमें तनाव की सृष्टि करेगा ।

इस सिद्धांत में यह माना गया है कि लोगों को सूचना की जरूरत होती है । जॉन फिस्क के अनुसार लोकतंत्र में सूचना को आमतौर एक अधिकार के रूप में देखा जाता है लेकिन यह नहीं समझ पाते कि सूचना हमेशा अधिकार ही नहीं है बल्कि जरूरत भी है । इसके बिना हम अपने को समाज का अंग नहीं समझ सकते ।

वेस्ले और मेक्लीयन सिद्धान्त

इस सिद्धांत में सामाजिक जरूरत के प्रश्न को और आगे बढाया गया है । न्यूकांब के सिद्धांत में जो बातें कही गई है उसमें दो परिवर्तन किए गए हैं । उन्होंने संप्रेषण क्या और कैसे घटित होता है, इसका निर्णय करने वाली प्रक्रिया को भी इसमें शामिल किया है । इसके साथ ही उन्होंने प्रेषक को सामाजिक परिवेश के साथ जोड़ा है । उनका दावा है कि जन माध्यम सामाजिक परिवेश का विस्तार करते हैं जिसके साथ जुड़ने की जरूरत प्रेषिति को होती है । जनमाध्यम उन साधनों को भी मुहैया कराता है जिससे प्रेषिति और सामाजिक परिवेश के बीच संबंध निष्पादित होते हैं । लेकिन इस सिद्धांत की सीमा यह है कि सामाजिक परिवेश और संप्रेषक महत्वपूर्ण हो जाते हैं और प्रेषित बहुत कुछ उन पर निर्भर हो जाता है । संप्रेषण के सिद्धांत के कई और पहलू हो सकते हैं । लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि संचार माध्यमों के सिद्धांत को संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में समझे बिना नहीं समझा जा सकता। लेकिन यह प्रक्रिया अंततः एक अर्थ ग्रहीता तक संप्रेषित करती है जिससे जानना और समझना भी जरूरी है ।

10.3 अर्थगत सिद्धांत

जनसंचार का कोई भी माध्यम हो वह प्रेषक द्वारा प्रेषिति तक संदेश भेजने का काम जरूर करता है । संदेशों को भेजने के क्रम में माध्यम, चैनल, ट्रांसमिटर, रिसिवर, नाइज और फीडबैक पदों को समझने की जरूरत होती है । अब तक हमने संचार की प्रक्रिया पर ही विचार किया है लेकिन यहां अब हम संचार को अर्थ उत्पन्न करने वाले माध्यम के रूप में विचार करेंगे । जब हम किसी दूसरे को कोई बात कहते हैं तो हमें उम्मीद होती है कि वह हमारी बात को कमोबेश उसी अर्थ में ग्रहण करेगा जिस अर्थ से हम दूसरे तक पहुंचाना चाहते हैं । लेकिन संप्रेषण के लिए मैं अपने संदेश को. कुछ चिन्हों (साइंस) के जरिए उत्पन्न करता हूँ । यह चिन्ह शब्द हो सकते हैं, ध्वनि हो सकती है, दृश्य हो सकते हैं । लेकिन हम जो भी चिन्ह इस्तेमाल करें वे दूसरे तक जिस तक हम संदेश को संप्रेषित करना चाहते

हैं उसको उनका समझ में आना चाहिए । यानी कि चिन्हों की व्यवस्था ऐसी होगी जहां प्रेषक और प्रेषिति दोनों के लिए उनका अर्थ एक ही होगा ।

चिन्ह किस रूप में काम करते हैं यह जनसंचार के संबंध में अत्यंत महत्वपूर्ण है । हालांकि इसका संबंध भाषा विज्ञान से है लेकिन यह सिर्फ भाषा तक सीमित नहीं है । जॉन फिस्क ने इसके तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र माने हैं ।

1. पहला क्षेत्र संकेतों का है । चिन्ह कई तरह के हो सकते है जो कई तरह से अर्थो को अभिव्यक्त करते हैं और लोग जो इन चिन्हों का इस्तेमाल करते है उनसे ये कई रूपों में जुड़े हो सकते हैं । चिन्ह मनुष्य की रचना है उनको उसी अर्थ में समझा जा सकता है जिस अर्थ में मनुष्य उन्हें समझना चाहते है ।

2. दूसरा क्षेत्र संकेतों (कोड्स) या चिन्हों की प्रणाली से संबंधित हैं जिनमें ये चिन्ह संगठित होते हैं । इसके अंतर्गत समाज या संस्कृति की जरूरत को पूरा करने के लिए या उनके संप्रेषण के लिए उपलब्ध संप्रेषण चैनलों का दोहन करने के लिए विभिन्न संकेतों के विकास का अध्ययन किया जाता है ।

3. तीसरा क्षेत्र वह संस्कृति है जिसके अंतर्गत चिन्ह (साइन) और संकेत (कोड) कार्य करते हैं । अपने अस्तित्व और रूप के लिए संस्कृतिक इन संकेतों और चिन्हों के उपयोग पर निर्भर करती हैं ।

जाहिर है कि चिन्हों और संकेतों के अध्ययन के लिए इस विधि में पाठ (टेक्स्ट) पर ध्यान दिया जाता है । पाठ का अर्थ ग्रहीता अपने ढंग से पढ़ता है । वह पाठ का अर्थ प्राप्त करने के लिए उसे अपने अनुभव, प्रवृत्तियों और संवेदनाओं के नजदीक लाता है ।

चिन्ह (साइन) कुछ-कुछ भौतिक वस्तु है जिसे हमारी इंद्रियां महसूस कर सकती है । यह अपने अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु के बारे में बताती है और अपने प्रयोक्ताओं की पहचान पर निर्भर करती है कि यह एक चिन्ह है । मसलन, रोटी शब्द जिस वस्तु का चिन्ह है उसका अर्थ सिर्फ वे ही समझ सकते हैं जिनकी भाषा में यह चिन्ह शामिल है । इस संबंध में जॉन फिस्क ने दो सिद्धांतों का उल्लेख किया है । पहला सिद्धांत दार्शनिक सी. एस. पियर्स का है और दूसरा सिद्धांत भाषा वैज्ञानिक फार्डिनांड डि. सुसरी का है ।

पियर्स के अनुसार चिन्ह जिस वस्तु के बारे में बताता है और प्रयोक्ता जिस अर्थ में समझता है उनसे एक त्रिकोण का निर्माण होता है । इनमें से प्रत्येक शेष दो से गहरे रूप में जुड़ा होता है और इसे दूसरों के संदर्भ में ही समझा जा सकता है । जबकि सुसरो इससे थोड़ा अलग विचार रखते हैं । चिन्ह का एक भौतिक रूप होता है, साथ ही उसके बारे में एक मानसिक अवधारणा होती है और यह अवधारणा बाहरी यथार्थ की एक समझ पर निर्भर करती है । चिन्ह यथार्थ से अपना संबंध उन लोगों की अवधारणाओं के जरीए ही निर्मित करता है जो उसका प्रयोग करते हैं । उदाहरण के लिए रोटी शब्द जिसके साथ एक मानसिक अवधारणा जुडी है वह आमतौर पर उन सभी को समान अर्थ ध्वनित करेगा जो उसका उपयोग करते हैं । लेकिन इसके साथ कुछ समस्याएं भी जुड़ी होती हैं । कई बार इस बारे में विवाद भी उठ खड़ा होता है । जैसा कि जॉन फिस्क ने उदाहरण दिया है कि एक ही व्यक्ति एक वस्तु को हरा और दूसरा नीला बता सकता है । इसका अर्थ यह नहीं है कि दोनों के लिए वे अलग-अलग हैं या उन्हें अलग- अलग ढंग से देख रहे हैं । वस्तुत: उनकी हरेपन और नीलेपन की अवधारणा

में फर्क है । यानी चिन्ह साथ जुडी मानसिक अवधारणा उसके अर्थ को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण निभाती है ।

पियर्स के सिद्धांत को हम जॉन फिस्क के शब्दों में इस तरह प्रस्तुत कर सकते हैं- चिन्ह किसी व्यक्ति के लिए किसी संदर्भ और क्षमता के अनुसार किसी वस्तु को बताता है । यह व्यक्ति को कुछ संकेतित करता है जिसके आधार पर वह व्यक्ति अपने मस्तिष्क में उसका समकक्ष चिन्ह उत्पन्न करता है जो शायद विकसित चिन्ह होता है । यह दूसरा चिन्ह पहले चिन्ह की व्याख्या होता है और चिन्ह जिसके बारे में बताता है वह वस्तु होती है । इस प्रकार वस्तु भौतिक और मानसिक चिन्ह तीनों अर्थ के लिए एक दूसरे पर निर्भर होते हैं । पियर्स की अवधारणा को बाद में आग्डेन और रचिडर्स ने विकसित किया । पियर्स की अवधारणा से इनकी अवधारणा इस रूप में भिन्न है कि उनके अनुसार वस्तु (जिसे वे संदर्भित-रेफरेंट कहते हैं) और मानसिक अवधारणा (जिसे वे संदर्भ कहते हैं) के बीच सीधा संबंध होता है । लेकिन प्रतीक और संदर्भित के बीच सीधा संबंध नहीं होता । प्रतीक (इनके यहां चिन्ह प्रतीक के रूप में है) मानसिक अवधारणा पर निर्भर होता है और संदर्भित से वह अप्रत्यक्ष रूप में ही संबद्ध होता है । इस प्रकार आग्डेन और रिचर्ड्स के विचार सुसरो के विचार नजदीक पहुंच जाते हैं ।

पियर्स की रुचि मुख्य रूप से अर्थ में थी लेकिन सुसरो की दिलचस्पी भाषा में थी क्योंकि वह भाषा विज्ञानी था । वह एक तरह के चिन्हों (उसके संदर्भ में शब्दों) से दूसरी तरह के चिन्हों (जो पियर्स के यहां वस्तु हैं) के पारस्परिक संबंधों पर विचार करना चाहता था । सुसरो के यहां चिन्ह एक भौतिक वस्तु है जिसका अर्थ होता है या उसकी शब्दावली में चिन्ह सिग्निपायर और सिग्निफाइड से मिलकर बना होता है । सिग्निफायर चिन्ह का वह बिम्ब है जिसे हम ग्रहण करते हैं । उदाहरण के लिए कागज पर लिखा गया निशान या बोली गई ध्वनि । जबकि सिग्निफाइड वह मानसिक अवधारणा है जिसके बारे मे यह बताता है । यह मानसिक अवधारणा एक ही संस्कृति के सभी लोगों के लिए व्यापकत: समान होती है जो एक ही भाषा का इस्तेमाल करते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि सुसरो के यहां बाहरी यथार्थ का उतना महत्व नहीं है । वह बाहरी यथार्थ या अर्थ के चिन्ह के साथ संबंध को चिन्हीकरण की प्रक्रिया द्वारा स्पष्ट करता है । उदाहरण के लिए जब मैं कागज पर रोटी शब्द लिखता हूं तो यह एक चिन्ह होता है जो जिस रूप में उसकी सिंग्निफायर के रूप में प्रतीत होती है उसी के अनुसार हमारे मस्तिष्क में उसकी निर्मित अवधारणा (सिग्निफाइड) होती है यानी कि हमारे मानस मे जो रोटीपन है उससे उसका संबंध जुड़ जाता है । मेरे मानस में जो रोटीपन की अवधारणा है और जो वास्तविक रोटी है उनका पारस्परिक संबंध चिन्हिकरण (सिग्निफिकेशन) है जिसके आधार पर ही मैं उस रोटी शब्द के अर्थ तक पहुंचता हूं ।

सुसरो यहां एक और प्रश्न उठाते हैं । रोटी क्या है या हम रोटी से क्या समझते हैं? सुसरो का कहना है कि इसका अर्थ हम इस रूप में ग्रहण करते हैं कि रोटी क्या नहीं है । यानी कि हम एक चिन्ह को एक निश्चित मानसिक अवधारणा से इसलिए जोड़ते हैं क्योंकि दूसरे चिन्ह दूसरी मानसिक अवधारणाओं से जुड़े होते हैं । इस प्रकार हम रोटी के वास्तविक अर्थ को पहचान जाते हैं । यानी के चिन्हों की मानसिक अवधारणाओं (सिग्निफाइड) की ऐसी व्यवस्था होती है जिनका उपयोग चिन्हों को विभाजित कर विभिन्न श्रेणियों में रखकर उनको समझने के लिए किया जाता है । यह सिग्निफाइड मनुष्य निर्मित व्यवस्था है जो मानव विकास और सांस्कृतिक विकास से जुड़ी होती है जिसके द्वारा हम अपने लोगों के साथ संवाद स्थापित करते हैं ।

अर्थगत सिद्धांत के और भी कई पहलू हैं लेकिन यहां मूल अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है ताकि संप्रेषण की अर्थगत अवधारणा को समझा जा सके । यहा यह जरूर ध्यान रखें कि इसका संबंध सिर्फ भाषा तक ही सीमित नहीं है बल्कि दृश्य और अन्य माध्यमों पर भी इन्हें लागू किया जा सकता है ।

10.4 सामाजिक सिद्धांत

जनसंचार के सिद्धांतों का एक बड़ा हिस्सा उसको एक सामाजिक परिघटना मानकर विचार करता है । जनसंचार की जरूरत लोगों को होती है । वे ही संदेश का निर्माण करते हैं, उसके प्रेषण करते हैं और उसको ग्रहण करते हैं । इसमें विभिन्न तरह के यंत्रों की आवश्यकता होती है । लेकिन उन यंत्रों का उपयोग भी लोग ही करते हैं । सच तो यह है कि इन यंत्रों का कोई उपयोग और महत्व नहीं है जब तक कि लोग संदेश के संप्रेषण और ग्रहण करने के लिए उसका इस्तेमाल न करें । इससे यह तो नतीजा निकलता ही कि संदेश मनुष्यों द्वारा निर्मित होते हैं, मनुष्यों द्वारा संप्रेषित होते हैं और मनुष्यों द्वारा ग्रहण किए जाते हैं । अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि संदेश और मनुष्य के बीच यह अंतक्रिया किस तरह की होती है? क्या उसमें किसी तरह का उलझाव किसी तरह की जटलिता नहीं होती । संदेश के निर्माण और ग्रहण तक की प्रक्रिया को निर्धारित करने वाला मनुष्य का किसी सरल परिभाषा, में बांधा जा सकता है? वर्ग, जाति, नस्ल, धर्म, लिंग, भाषा, क्षेत्र आदि विभिन्न तरह के विभागों में बांट कर देखा जाने वाला मनुष्य और उसके द्वारा उत्पन्न और उसके लिए उत्पन्न संदेश पर इन विभाजनों का कोई प्रभाव नहीं होता? संप्रेषण के सिद्धांत संबंधी अध्ययन का यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसे जानना जरूरी है ।

जब हम जनसंचार और समाज के बीच संबंधों की बात करते हैं तो यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जनसंचार माध्यम संदेशों का प्रसारण किस रूप में करता है? क्या वह एक माध्यम भर है जो संदेश को प्रेषक से प्रेषित तक पहुंचा देता है या उससे कुछ भिन्न । डेनिस मेक्वेल के अनुसार इस संबंध में कई तरह की अवधारणाएं काम करती हैं जो जनसंचार को एक माध्यम के रूप में देखते हैं, वे उसे प्राय: निम्नलिखित रूपों में देखते है-

- जनसंचार एक खिड़की की तरह है जो घटनाओं और अनुभवों को समझने की दृष्टि देता है और बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के वह हमें इस बात में समर्थ बनाता है कि समाज में क्या चल रहा है ।
- जनसंचार समाज और विश्व में चलने वाली घटनाओं का दर्पण है जो पूरी ईमानदारी से हमें यथार्थ से परिचित करा देता है । हालांकि दर्पण की दिशा और कोण दूसरे लोग तय करते हैं और यथार्थ को हम पूरी तरह अपनी इच्छानुसार नहीं जान सकते ।
- जनसंचार एक छलनी या द्वारपालक का काम भी करता है जो घटनाओं और अनुभवों में से कुछ को चुनकर हम तक भेजता है और शेष को रोक लेता है । ऐसा जान-बूझकर भी किया जा सकता है और अनजाने में भी ।
- जनसंचार एक मार्गदर्शक या पथचिन्ह या दुभाषिए का काम करता है जो हमें बताता है कि यथार्थ में क्या ग्रहण करने योग्य है और क्या नहीं और किस बात का क्या अर्थ है।

- जनसंचार एक मंच की तरह है जहां सूचना और विचार को लोगों के सामने पेश किया जाता है, प्राय: इस संभावनाओं के साथ कि उनका प्रत्युत्तर भी प्राप्त होगा ।
- जनसंचार एक अवरोधक या पर्दे की तरह है जिसमें यह संभावना निहित है कि वह हमें यथार्थ से विलग कर दे और या तो पलायनवादी फैंटेसी द्वारा या प्रचार द्वारा विश्व की एक झुठी तस्वीर पेश करे ।

यहां यह कहना तो मुश्किल है कि कौन सा दृष्टिकोण सही है । लेकिन इतना सच है कि जनसंचार और समाज के बीच संबंधों को आमतौर पर इनमें से ही किसी एक या अधिक रूप में पेश किया जा सकता है । ये न तो अपने में पूर्ण न ही पूरी तरह सकारात्मक और नकारात्मक । उपर्युक्त सभी रूपों में एक बात सामान्य है कि जनसंचार समाज और संदेश के बीच एक ऐसे घटक के रूप में उपस्थित होता है जिसके जरिए यथार्थ का ज्ञान हासिल करते हैं ।

जनसंचार और समाज के बीच संबंधों के सैद्धांतिकरण को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम उसके विभिन्न घटको और उसके पारस्परिक संबंधों को भी समझें । डेनिस मेक्वेल ने इसका एक ढांचा प्रस्तुत किया है । इसमें तीन घटक सबसे अहम् होते हैं : मीडिया संस्थान, सामाजिक संस्थान और दर्शक ।

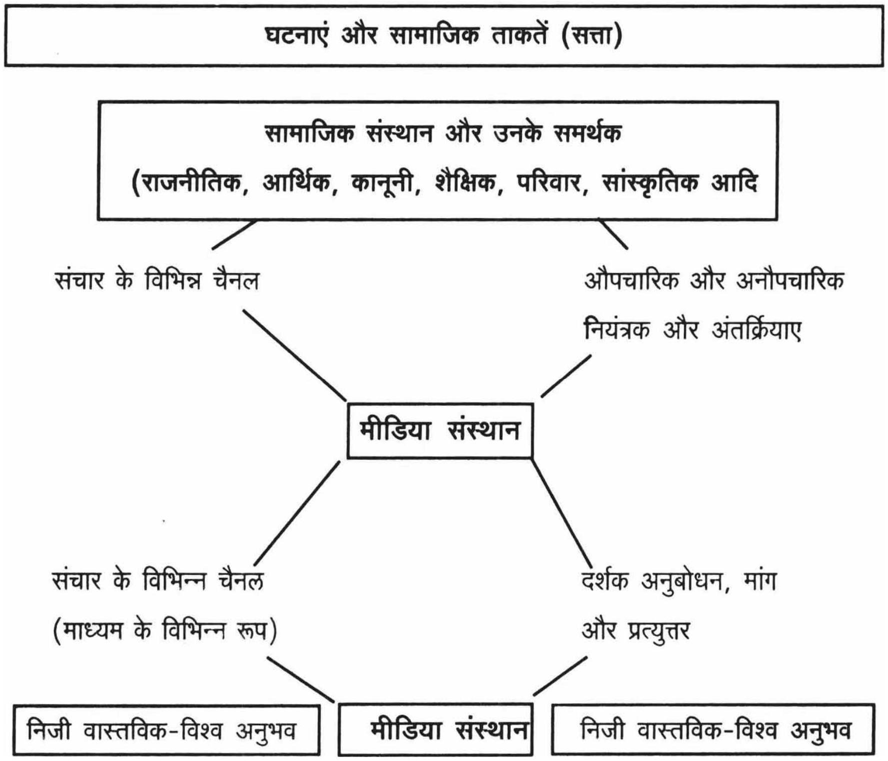

जनसंचार माध्यम के सामाजिक सिद्धांतों से संबंधित जितनी भी अवधारणाएं सामने आई है वे उपर्युक्त ढांचे मे ही अपने मत को पेश करती हैं और ग्रहीता भी इसी ढ़ांचे में संप्रेष्य संदेश का अर्थ ग्रहण करता है । समाज में जो भी घटनाएं घटित होती हैं वे राजनीतिक, आर्थिक, कानूनी, शैक्षिक, पारिवारिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से संबंधित होती हैं । मीडिया से संबंधित संस्थाएं संचार के विभिन्न चैनलों के द्वारा ग्रहीता तक संप्रेषित करती है । यहां इस प्रक्रिया में दो महत्वपूर्ण बातें हैं जिसे समझना जरूरी है । सामाजिक संस्थानों और मीडिया संस्थानों पर औपचारिक और अनौपचारिक नियंत्रण होता

है । ये नियंत्रण किनका है और उसकी प्रकृति क्या है इसे समझना जरूरी है । इसी प्रकार सामाजिक संस्थानों और मीडिया में अंतर्क्रिया का स्वरूप क्या है इसे जानना भी जरूरी है । जब मीडिया संस्थान संदेश को संप्रेषित करते हैं तो वहां भी दो बातों को समझना जरूरी होता है । पहला तो यह है कि इसके लिए किस माध्यम का उपयोग किया जा रहा है । दूसरा, स्वयं दर्शक किस तरह के संदेश की मांग कर रहा है । उसकी संदेश के बारे में समझ किस तरह की है और संदेश प्रेषित होने के बाद वह किस तरह का प्रत्युतर देगा । संदेश को ग्रहण करते हुए स्वयं ग्रहीता का वास्तविक दुनिया के बारे में जो निजी अनुभव है वे किस तरह ग्रहण करने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, यह भी एक महत्वपूर्ण पहलू है ।

जनसंचार माध्यमों के सिद्धांत पक्ष पर विचार करते हुए समाज और जनसंचार दोनों पर वर्चस्व का प्रश्न अवश्य उपस्थित होता है । मीडिया पर किसका नियंत्रण है और किनके हितों के समर्थन में यह नियंत्रण काम करता है । समाज और विश्व की कौन सी तस्वीर को मीडिया प्रस्तुत करता है । अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में मीडिया कितना प्रभावी होता है और मीडिया क्या समाज में बराबरी को प्रोत्साहित करने में कम या ज्यादा समर्थ होता है । इन सवालों का कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता । मीडिया विशेषज्ञ इनके बारे में अपनी राजनीतिक-सामाजिक दृष्टि के अनुसार उत्तर देते हैं ।

जनसंचार के सामाजिक प्रभावों का उत्तर इस बात से तय होगा कि स्वयं समाज के बारे में किस संकल्पना को विशेषज्ञ स्वीकार करता है । जनसंचार का गहरा संबंध जन समाज की अवधारणा से भी है । जनसंचार के साथ जनसमाज की अवधारणा का भी विकास हुआ । जन संबंधी अवधारणा पर हम अन्य इकाई में विचार कर चुके हैं । जनसमाज की अवधारणा का संबंध जनता के प्रति रवैये से है । जनसमाज में समाज की वह अवधारणा निहित है जहां समाज पर नियंत्रण रखने वाला वर्ग लोगों को ऐसे समूह के रूप में संगठित करता है जो उनके हितों को पूरा करने में मददगार हो । उपभोक्ततों के रूप में, दर्शकों के रूप में, पाठकों के रूप में, मतदाताओं के रूप में, बाजारों के रूप में आदि । जनसमाज एक व्यापक समाज होता है जहां मीडिया केंन्द्रीकृत होता है और आमतौर पर वह एकतरफा भी होता है । लोग सूचना और अन्य संदेशों के लिए उन पर निर्भर होते है और मीडिया का उपयोग उस पर नियंत्रण रखने वाले जनता पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए करते हैं ।

जनसंचार और समाज के पारस्परिक संबंधों को समझने के लिए मार्क्सवादी विचारधारा काफी मददगार साबित होती है । हालांकि स्वयं मार्क्स और एंगेल्स के समय तक जनसंचार माध्यमों का ऐसा विस्तार नहीं हुआ था लेकिन उन्होंने जो विचार पेश किए हैं उसका प्रयोग करते हुए कई विचारकों ने जनसंचार संबंधी सिद्धांतों को प्रस्तुत किया है । इन सिद्धांतों का आधार यह है कि एक बुर्जूआ समाज में मीडिया पर अधिकार भी बूर्जूआ वर्ग का ही होता है, वही उसका स्वामी होता है । मीडिया उनके हितों के लिए उपयोग में लाया जाता है । मीडिया मजदूर वर्ग में मिथ्या चेतना को निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और मीडिया अपने राजनीतिक विरोधियों को अपनी बात लोगों तक पहुंचाने से रोकता है । लेकिन इन बातों का यह अर्थ नहीं है कि जनसंचार माध्यम और समाज का संबंध सरल और उलझाव रहित होता है । वस्तुत: वह काफी जटिल होता है । यही कारण है कि स्वयं मार्क्सवादियों ने जनसंचार की तरह-तरह से व्याख्या की है ।

मार्क्सवाद से प्रभावित विचारकों ने जनसंचार और समाज के पारस्परिक संबंधों को राजनीतिक-आर्थिक सिद्धांतों की रोशनी में समझने का प्रयास किया है । मीडिया का जिस तरह से विस्तार हो रहा

है और आज वह एक बड़े भूमंडलीय उद्योग और व्यापार का रूप ले चुका है, ऐसे में मीडिया को इस दृष्टि से देखना जरूरी हो जाता है । आज मीडिया राष्ट्रीय और स्थानीय सीमाओं से बाहर जाकर भूमंडलीय रूप ले चुका है ।

माना जा रहा है कि दुनिया की लगभग पचास मीडिया कम्पनियों का विश्व के मीडिया बाजार पर नियंत्रण हैं और इनमें से ज्यादातर कंपनियां अमरीका, यूरोप के विकसित पूंजीवाद देशों की है उन्होंने राष्ट्रीय और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में ही निष्प्रभावी नहीं बना दिया है बल्कि लघु समझी जाने वाली कंपनियां भी इन बहुराष्ट्रीय मीडिया निगमों के सामने अपने को बचा नहीं पा रही है मीडिया पर इन निगमों के आर्थिक नियंत्रण ने उनके कार्यक्रमों पर असर डाला है वहीं दशर्क अब उपभोक्ता में घटकर रह गया है मीडिया में जो विविधता है उसको नुकसान पहुंच रहा है तथा ऐसी आवाजें जो इस प्रणाली का समथर्न नहीं करती हो या उसका विरोध और विकल्प प्रस्तुत करती हो उनके हाशिए पर डाल दिया जाता है मीडिया सार्वजनिक हितों को निजी हितों के आगे गौण कर देता है इस प्रकार मीडिया जो एक रचनात्मक अनुभव के संप्रेष्ण का माध्यम हो सकता है बाजार में आनंद बेचने और खरीदने की वस्तु हो गया है ।

मीडिया को वर्गीय और व्यापक सामाजिक हितों की रोशनी में जो नहीं देखते उनके लिए मीडिया का विकास अपने आप में महत्वपूर्ण है । वे मीडिया प्रौद्योगिकी के विकास को ही सामाजिक विकास के रूप में देखते हैं और मान लेते हैं कि समाज के प्रभुत्वशाली हिस्सों के हितों को पूरा करने में कामयाब होना ही उसकी कामयाबी है । इस प्रकार मीडिया के क्षेत्र में होने वाला कोई भी नया विकास वस्तुत: आम जनता और मीडिया दोनों को एक दूसरे से दूर ले जाता है । समाज और जनसंचार के सिद्धांतों को प्राय : इसी परिप्रेक्ष्य में देखने की जरूरत होती है ।

10.5 सांस्कृतिक सिद्धांत

जनसंचार और संस्कृति का बहुत गहरा संबंध है । जनसंचार माध्यमों के द्वारा जो संदेश संप्रेषित होते हैं उनका संबंध संस्कृति के क्षेत्र में होता है । संस्कृति को ऐसी प्रक्रिया के रूप में भी परिभाषित किया जाता है जो हमारा सामाजिक अनुभवों को अर्थ देती है और जिससे अर्थ निःसृत होता है । संस्कृति मानव गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त होती है । संस्कृति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे जीवन और जीवन से जुड़ी गतिविधियों से काटकर देखा जा सकता है । जेम्स केरी ने ठीक ही कहा है कि सामाजिक जीवन सत्ता और व्यापार से ज्यादा बड़ी चीज है । इसमें हमारे सौंदर्यबोधीय अनुभव, धार्मिक विचार, निजी मूल्य और संवेदनाएं और बौद्धिक विमर्श शामिल होते हैं । संस्कृति वस्तुत एक प्रक्रिया है, लेकिन ऐसी प्रक्रिया जिसे मनुष्य दूसरे मनुष्यों के साथ भागीदार बनकर अर्जित करता है। संस्कृति अपने को कई रूपों में व्यक्त करती है और इनमें से जनसंचार माध्यम एक महत्वपूर्ण रूप है । संक्षेप में, कह सकते हैं कि संस्कृति का निर्माण सामूहिक रूप में होता है और वह सामूहिक रूप में ही जीवित रहती है । वह अपने को सांकेतिक रूपों में अभिव्यक्त करती है । वह गतिशील और परिवर्तनशील होती है और दिक् और काल में संप्रेष्य होती है । वह विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ अंतर्क्रिया करती हुई अपने को व्यवस्थित रूप प्रदान करती है ।यहां यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि विभिन्न जातीय समुदायों की अपनी सांस्कृतिक परंपरा होती है और इन जातीय समुदायों से राष्ट्रीय संस्कृति का और इनके समुचय से मानव संस्कृति का विकास होता है ।

जनसंचार के संदर्भ में सांस्कृतिक प्रश्नों पर विचार करते है तो कई मुद्दे उभर कर सामने आते हैं । जनसंचार का जिस तरह से जनसमाज से संबंध पर विचार कर चुके हैं उसी तरह जनसंस्कृति का सवाल भी उठता है । जनसंस्कृति और लोकप्रिय संस्कृति क्या एक ही है या वे भिन्न-भिन्न हैं । जनसंचार के माध्यम से व्यक्त होने वाले सांस्कृतिक रूपों पर संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव किस रूप में पडता है । क्या जनसंचार संस्कृति को उपभोक्ता वस्तु में बदल देता है । भूमंडलीयकरण के चलते क्या संस्कृति के स्थानीय रूपों की पहचान के खत्म होने का खतरा पैदा हो गया । जब हम जनसंचार के संदर्भ में संस्कृति की बात करते हैं तो अपसंस्कृति का सवाल भी सामने आता है । साथ ही लिंग, नस्ल, जाति, अल्पसख्यक आदि समूहों में संबंधित सवाल भी महत्वपूर्ण बन जाते हैं ।

जनसंचार के संदर्भ में सांस्कृतिक सिद्धांत में फ्रेंकफर्ट स्कूल की विचारधारा का उल्लेख आमतौर पर किया जाता है । फ्रेंकफर्ट स्कूल से संबंधित विचारकों ने ही सबसे पहले जनसंचार के संदर्भ में सांस्कृतिक प्रश्नों पर गहनता से विचार किया था । इन विचारकों में सबसे महत्त्वपूर्ण हैं - मेक्स होर्किमीर और थ्योडोर एडोर्नो । इसके साथ ही वाल्टर बेंजामिन और हर्यट मार्क्यूज की भी गणना की जाती है। इसके अनुसार, इजारेदार पूंजी अपनी कामयाबी के लिए जिन प्रमुख साधनों का इस्तेमाल करती है उनमें जनसंस्कृति का स्थान सबसे ऊपर है । वस्तुओं, सेवाओं और विचारों के जनोत्पादन की संपूर्ण प्रणाली पूंजीवादी व्यवस्था में बेचे और खरीदे जाने के लिए होती है । यह व्यवस्था प्रत्येक वस्तु और विचार को जिस में बदल देती है और जो यह मानती है कि ललित कलाओं की सर्वोत्तम अभिव्यक्तियां हो या विरोधी या आलोचनात्मक संस्कृति सभी को बेचा जा सकता है । पूंजीवादी समाज में संस्कृति को जिस में बदल दिए जाने की धारणा में चाहे कितनी ही सच्चाई क्यों न हो यह मत इस अर्थ में पूरी तरह सच नहीं है कि समाज में सभी ने इस अवधारणा को स्वीकार कर लिया है । वस्तुत: यहां यह मान लिया गया है कि इजारेदार पूंजी इतनी बलवती है कि इसे संस्कृति के क्षेत्र में चुनौती दी ही नहीं जा सकती है ।

जनसंचार के संदर्भ में सांस्कृतिक सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण पक्ष वर्चस्व के सवाल का है । मीडिया पर शासक वर्ग की विचाराधारा का वर्चस्व होता है । यह वर्चस्व आरोपित नहीं होता बल्कि वह इस रूप में मौजूद होता है कि जैसे वह अत्यंत स्वाभाविक, सर्वस्वीकृत और आम अमनुभव का हिस्सा है । उसके प्रति आम सहमति कायम हुई प्रतीत होती है । यह विचारधारात्मक वर्चस्व का सिद्धांत मूल रूप में मार्क्सवादी विचारक ग्राम्सी ने प्रस्तुत किया है । वर्चस्व में यह निहित होता है कि जो भी यथास्थिति का विरोध करता है वह एक तरह का विरोध और विचलन है । जनसंचार यथार्थ को अपने ढंग से परिभाषित नहीं करता बल्कि वह सत्ता द्वारा दी गई परिभाषाओं को ही प्राथमिकता देता है । वर्चस्व के विचार को आगे विकसित करते हुए मीडिया विशेषज्ञ स्तुअर्ट हाल इसको तीन रूपों में प्रस्तुत करते हैं -पहला सत्ता के साथ जुड़ा वर्चस्ववादी संकेत, दूसरा समझौतापरस्त संकेत जो अनिवार्यत: मीडिया का अपना संकेत है जो उसकी भूमिका को सूचना के निष्पक्ष और व्यावसायिक वाहक के रूप में प्रस्तुत करता है । तीसरा विपक्षी संकेत है जो उनको प्राप्य होता है जो इस बात का चुनाव करते है या परिस्थितियां उन्हें इस दिशा में ले जाती है कि वे यथार्थ के बारे में संदेश को भिन्न दृष्टि से देखे और घटनाओं के सरकारी अर्थो में निहित वास्तविक अर्थ को पढ़ने का प्रयास करते है। यह मॉडल विचारधारा को जिस रूप में भेजा जाता है उसी रूप में उसे ग्रहण नहीं करता ।

संस्कृति के संदर्भ में हमने पहले जनसंस्कृति और पापुलर संस्कृति का प्रश्न उठाया था । जन के लिए अंग्रेजी में मास शब्द का प्रयोग किया जाता है । मास शब्द जनता और लोक से भिन्न अर्थ देता है । आमतौर पर मास शब्द लोगों के ऐसे समूह के लिए प्रयुक्त होता है जो किसी विवेकपूर्ण ढंग से और बहु त परिभाषित रूप में व्याख्यायित न की जा सकती हो । मसलन, किसी मेले को देखने के लिए उमड़ी भीड़ या किसी फिल्म के लिए उमडी भीड़ वस्तुत: मास के रूप में व्याख्यायित की जाती है । जाहिर है मास शब्द में जनता के प्रति एक तरह का हिकारत का भाव मौजूद रहता है । जनसंस्कृति का अर्थ ही यह है कि ऐसी संस्कृति जो ऐसे जनसमूह के लिए हो जिनकी रुचियां निम्नस्तर की हो और जो संस्कारित न हो । जनसंस्कृति के विपरीत अभिजात संस्कृति को रखा जाता है जिनकी रुचियां उच्चस्तरीय होती है और जिनके संस्कार शिष्ट होते हैं । जनसंस्कृति और अभिजात संस्कृति के बीच यह भेद स्वयं अभिजात वर्ग द्वारा किया जाता है जो इस तरह अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता को स्थापित करता है । यहां प्राय: दो तरह की धारणाएं देखने को मिलती हैं । एक तो यह कि साधारण लोगों को जनसंस्कृति के ऐसे रूपों में ही आनंद आता है जो निम्न स्तर की होती हैं । यानी अभिजात संस्कृति और जनसंस्कृति का फर्क अपरिहार्य है क्योंकि दोनों वर्गों की अभिरुचियां एक सी नहीं हो सकती । दूसरा दृष्टिकोण यह है कि जनसंस्कृति निम्न या विकृत होती हैं लेकिन इसके लिए लोग उत्तरदायी नहीं होते बल्कि वे जिम्मेदार होते हैं जो अपने लाभ और छलपूर्ण उद्देश्यों के लिए साधारण लोगों पर इसे थोपते हैं ।

जनसंस्कृति के साथ-साथ लोकप्रिय संस्कृति का प्रश्न उपस्थित हो जाता है । आमातौर पर लोकप्रिय संस्कृति को इस रूप में परिभाषित किया जाता है कि जो संस्कृति लोकप्रिय हो वह लोकप्रिय संस्कृति है । लोकप्रियता से यहां तात्पर्य यह है कि जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग आनंद प्राप्त करते हैं । लेकिन लोकप्रियता को परिभाषित करना इतना सरल नहीं है । यह मान लिया जाता है कि आज जिसे लोग सबसे ज्यादा पंसद करते हैं और जिसकी सबसे ज्यादा मांग करते है वहीं लोकप्रिय हैं । लेकिन यह हमारा सामान्य अनुभव है कि जो आज अत्यंत लोकप्रिय है उसकी मांग कल बिल्कुल खत्म हो सकती है । क्या तब भी उसे लोकप्रिय कहा जा सका है । आमतौर पर लतीफे सुनना सबको पसंद होता है लेकिन क्या वे रचनात्मक कहानी का स्थान ले सकते हैं? लोकप्रियता में आनंद पर बल रहता है और नए से बचने का प्रयत्न किया जाता है । यह माना जाता है कि जो नया होगा वह लोकप्रिय नहीं होगा लेकिन जो पुराना होगा वह भी लोकप्रिय हो यह आवश्यक नहीं है । इसलिए जनसंचार में लोकप्रियता के लिए लोगों की सोच को बिना किसी तरह से आघात पहु ंचाए और भावनाओं को उद्वेलित किए ऐसे सांकेतिक रूपों का इस्तेमाल किया जाता है जो ग्रहीताओं को सहज ही संप्रेष्य हो । यहां तक कि वे उन रचनात्मक सांकेतिक रूपों को भी लोकप्रियता के ऐसे ढ़ांचे में पेश करने की कोशिश करते हैं जिनसे वे ज्यादा से, ज्यादा लोगों को आनंद पहु ंचाए भले ही इस क्रम में वे सांकेतिक रूप विकृत हो जाएं।

जनसंस्कृति और लोक प्रिय संस्कृति की यह सारी संभावनाएं जनसंचार की वजह से उत्पन्न हु ई हैं । जनसंचार ने ऐसी प्रौद्योगिकी को विकसित किया है जिसके कारण सांकेतिक रूपों का जनोत्पादन संभव हु आ है । जॉन बी थाम्पसन ने इस संबंध में उचित ही कहा है कि आधु निक समाजों में सांकेतिक रूपों का उत्पादन और प्रसार जनमाध्यम उद्योगों की गतिविधियों से अलग नहीं किया जा सकता । मीडिया संस्थानों की भूमिका इतनी बुनियादी है कि यह कल्पना करना भी मुश्किल है कि हम अपने रोजमर्रा के जीवन से उन्हें अलग कर सकें । जनसंस्कृति के विभिन्न रूपों का प्रसार इसीलिए संभव हु आ है कि वह उनका बारबार पुनरूत्पादन कर सकती है । सांकेतिक रूपों की पुनरात्पादिकता ने ही

जनसंचार के व्यावसायिक दोहन की व्यापक संभावना पैदा की है और इसी वजह से सांकेतिक रूपों का उपभोगीकरण हु आ है । जनसंचार के संस्थान इस संभावना को बढ़ावा भी देते हैं । जनसंचार के ज्यादातर रूप ऐसे है जिनमें लोगों की भागीदारी सामूहिक रूप से होती है । इनमें निष्पादक, तकनीशियन और दूसरे गतिविधियों से जुड़े लोग होते हैं जो किसी-किसी रूप में संदेशों के संकेतीकरण और विसंकेतीकरण में भूमिका निभाते हैं । इसी प्रकार संदेशों का ग्रहण आमतौर पर सामाजिक संदर्भ में होता है । लोग उन्हें समूह में या परिवार वालों के साथ देखते हैं । इस प्रकार एक सामूहिकता जनसंचार के सांस्कृतिक पहलू को प्रभावित करते हैं और उनमें कोशिश यह होती है कि वह जितने बड़े पैमाने पर संप्रेषित होनी है उतना ही वह सब तरह के लोगों की विशिष्टता को आहत किए स्वीकार्य बन सके । इस प्रक्रिया में जनसंचार संस्कृति का एक ऐसा रूप विकसित करता है जो अपनी निजी विशिष्टता नहीं खोता बल्कि वह विरोध और असहमति के स्वरों को भी या दो हटने के लिए मजबूर कर देता है या उसे डाइल्युट कर देता है ।

जनसंचार का नया क्षेत्र सिद्धांतों का नया क्षेत्र उन प्रश्नों से जुड़ा है जिनकी अब तक उपेक्षा होती रही है । इनमें लिंग (जेंडर) जाति अल्पसंख्यक आदि सवालों को लिया जा सकता है । पिछले कुछ सालों में नारीवादी अध्ययनों ने इस बात को रेखांकित किया है कि जनसंचार के क्षेत्र में भी नारीवादी विमर्श के अनुसार जनसंचार के उत्पादों को विश्लेषित और मूल्यांकित करने पर जोर दिया जाने लगा है भारत में यद्‌यपि इसकी अभी ठोस परंपरा नहीं बन पाई है लेकिन इस तरह के प्रयास यदा-कदा देखने को मिल जाते हैं ।

इस प्रकार जनसंचार के बारे में अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र सांस्कृतिक सिद्धांतों पर आधारित है और उनकी उपेक्षा करके हम जनसंचार के सिद्धांतों को नहीं समझ सकते ।

10.6 सारांश

जनसंचार के सिद्धांतों से संबंधित इस दूसरी इकाई में आपने जनसंचार से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों का अध्ययन किया है । ये सिद्धान्त चार क्षेत्रों से संबंधित है- संप्रेष्ण संबंधी, अर्थ संबंधी, सामाजिक और सांस्कृतिक ।

संप्रेषण संबंधी सिद्धांतों के अंतर्गत आपने शेनान और विवर, गेर्बनर और न्यूकांब के मॉडलों का अध्ययन मुख्य रूप से सी बात पर बल देते है की संप्रेषण की प्रक्रिया किस रूप में घटित होती है और उन्हें प्रभावित करने वाले तत्व कौन-कौन से है । जनसंचार से संबंधित दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र अर्थगत सिद्धान्तों का है । इस अध्ययन में माध्यम के बारे में अध्ययन किया जाता है । आमतौर पर जनसंचार के माध्यमों के शब्द, ध्वनि और दृश्यों का प्रयोग किया जाता है । इन्हें हम जनसंचार की भाषा कहा जाता है जनसंचार अपने संदेश को संप्रेषित करने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग करता है, उसके माध्यम से अर्थ कैसे संप्रेषित होते है यह एक महत्वपूर्ण सवाल है । इस पर दो विचारकों ने विचार किया है- प्रियर्स और सुमारो । इस सिद्धान्त में चिन्ह और उसकी मानसिक अवधारणा, बाहरी यथार्थ और किसी भाषाई समाज की सांकृतिक परंपरा आदि का विश्लेषण किया गया है । चिन्ह के अर्थ को निर्धारित करने में इन सबकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

तीसरे क्षेत्र में सामाजिक जनसंचार और समाज के पारस्परिक संबन्धों को व्याख्यायित को करने की कोशिश की गई है । जनसंचार की सारी प्रक्रिया समाज में ही घटित होती है और वह मनुष्य द्‌वारा मनुष्यों के लिए होती है । इसलिए समाज में उसकी भूमिका और उसके विकास को ही नहीं उसके

प्रभाव को भी समझने की जरूरत होती है प्रत्येक समाज की संरचना बड़ी जटिल होती है और उसके आर्थिक, राजनीतिक पक्ष उसके स्वरूप को निर्धारित करते है। मीडिया से संबंधित संस्थानों का निर्माण भी इसी सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत होता है। इसलिए यह जरूरी है की उसका अध्ययन सावधानीपूर्वक किया जाए। एसी प्रकार निष्पादक, स्वामी और ग्रहीता के रूप में लोगों की जनसंचार में भूमिका को भी कई बातें प्रभावित करती है। यह जनसंचार का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसका अध्ययन बहुत विस्तृत रूप में किया जा सकता है।

चौथा क्षेत्र संस्कृति का है। जनसंचार के उत्पादों को सांस्कृतिक उत्पादों की श्रेणी में परिगणित की जा सकता है। संस्कृति में मनुष्य के जीवन की प्रत्येक गतिविधि को शामिल किया जा सकता है। जनसंचार के विकास ने क्या विभिन्न संस्कृतियों के स्वाभाविक विकास को प्रभावित किया है ? क्या सांकेतिक रूपों के जनोत्पाद ने संस्कृति को जनसंस्कृति में बादल कर उसे विकृत किया है ? जनसंस्कृति और लोकप्रिय संस्कृति में क्या अंतर है? लोकप्रियता क्या एक नकारात्मक मूल्य है? जनसंचार ने मनुष्य को किस तरह के सांस्कृतिक जीवन के लिए प्रेरित किया है ? क्या इसके द्वारा अपसंस्कृति का विकास हो रहा है ? क्या इसका समाज के सामंजस्यपूर्ण जीवन पर बुरा असर पड़ रहा है। संस्कृति के उद्योग में बदलने लोगों की रचनात्मक को कुंठित किया है ? जनसंचार के उत्पादों का समाज के उत्पीड़ित वर्गों और समुदायों पर किस तरह का असर पड़ा है ? ये और ऐसे कई सवाल जनसंचार के सांस्कृतिक सिद्धान्त पक्ष को उजाकर करते है।

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

जॉन फिस्क, इंट्रोडक्शन टु कम्युनिशन स्टडीज, मेथ्यून, लंदन, 1992.

डेनिस मेक्वेल, मास कम्युनिकेशन थियरी, एन इट्रोडेक्शन सेज पब्लिकेशन, लंदन, 1998

जॉन बी. थाम्पसन, आइडियोलोजी एंड मोडर्न कल्चर, पोलिटी प्रेस, 1990

देवेंद्र इस्सर, जनमाध्यम संप्रेषण और विकास, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995

जवरीमल्ल पारख, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, ग्रंथशिल्पी, दिल्ली, 2000

10.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. जनसंचार के संप्रेषण सिद्धांतों का महत्व बताते हुए उनकी व्याख्या कीजिए।
2. जनसंचार के अर्थगत सिद्धांतों के सुसरों और पियर्स के विचारों तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
3. जनसंचार को सामाजिक परिघटना के रूप में अध्ययन करना क्यों आवश्यक है? भारतीय संदर्भ में इस पर विचार कीजिए।
4. जनसंचार के सांस्कृतिक सिद्धांत के आधारभूत सवालों को प्रस्तुत कीजिए और उनके बारे में अपने मत को भी रखिए।
5. किसी फिल्म या टेलीविजन के कार्यक्रम की सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में व्याख्या कीजिए।

इकाई 11 संचार की प्रकृति एवं विधि

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 संचार की प्रकृति

11.2.1 संचार का तात्पर्य

11.2.2 मानव संचार के तत्व

11.2.3 संचार से जनसंचार तक

11.3 संचार का विकास

11.3.1 मुद्रित माध्यम

11.3.2 श्रव्य माध्यम

11.3.3 दृश्य माध्यम

11.4 संचार की विधि

11.4.1 संचार की नई प्रौद्योगिकी

11.4.2 संचार माध्यमों और संदेशों का अंत:संबंध

11.4.3 सांकेतिक रूपों के माध्यम से संचार

11.5 संचार की प्रकृति और विधि का अंत:संबंध

11.6 सारांश

11.7 शब्दावली

11.8 निबंधात्मक प्रश्न

11.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप जनसंचार के सिद्धांत पक्ष का अध्ययन करने जा रहे हैं । जनसंचार संबंधी सिद्धांतों का अध्ययन अत्यंत रोचक है । जैसे-जैसे जनसंचार की प्रक्रियाओं और माध्यमों का विकास हु आ है उसको लेकर वैचारिक बहसों में गति आई है । इन्हीं बहसों ने जनसंचार संबंधी सिद्धांतों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है । संचार के सिद्धांत का अध्ययन करने से पहले आपके लिए यह जानना जरूरी है कि संचार की विशेषत: जनसंचार की प्रकृति और विधि क्या है । इस इकाई में आप इन्हीं पक्षों का अध्ययन करने जा रहे हैं । इकाई का अध्ययन करने से आप-

- संचार और जनसंचार का तात्पर्य स्पष्ट कर सकेंगे;
- मानव संचार के विभिन्न तत्वों का विवेचन कर सकेंगे;
- जनसंचार के विकास के विभिन्न रूपों का विवरण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- जनसंचार की विभिन्न विधियों की व्याख्या कर सकेंगे और
- जनसंचार की प्रकृति और विधि के अंतसंबंधों को बता सकेंगे ।

11.1 प्रस्तावना

जनसंचार के सिद्धांत से संबंधित इस पाठ्यक्रम की यह ग्यारहवीं इकाई है । इस इकाई में आप जनसंचार की प्रकृति और विधि के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं । जनसंचार क्या है, यह अब तक के अध्ययन से आप समझ चुके होंगे । जनसंचार के बारे में कोई भी अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं है जब तक कि हम यह न समझ लें कि संचार क्या है । जनसंचार के सभी पक्षों का संबंध किसी न किस रूप में संचार की प्रकृति और विधि से जरूर होता है । संचार की प्रकृति के कुछ आधारभूत पक्ष होते हैं जो संचार की सभी तरह की प्रक्रियाओं में शामिल होते हैं । इस इकाई में आप इन सभी पक्षों पर विचार करेंगे । साथ ही संचार के अब तक के विकास की भी जानकारी हासिल करेंगे । संचार का अब तक का विकास यह बताता है कि इसमें एक ऐतिहासिक क्रम निहित है । संचार का विकास मनुष्य के अन्य क्षेत्रों के विकास से गहरे रूप में जुड़ा है । संचार की जरूरत तो मनुष्य को तब भी थी जब वह सभ्यता के आरंभिक चरण में था लेकिन तब उसके पास संचार के आधुनिक साधन मौजूद नहीं थे, यहां तक वह भाषा भी नहीं थी जो उसके पास विकसित रूप में मौजूद है । अगर हम अपने आसपास के पशुओं के जीवन के देखें तो क्या हम अनुमान नहीं लगा सकते कि मनुष्यों के बीच भी संचार का स्वरूप कितना आदिम रहा होगा । संचार की प्रकृति को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम इन पक्षों की भी जानकारी हासिल करें । लेकिन हमने यह भी देखा है कि संचार के विकास में उन बाहरी साधनों का भी गहरा हाथ होता है जिन्हें हम आजकल की भाषा में संचार प्रौद्योगिकी कहते हैं । संचार की प्रौद्योगिकी के बारे में आप अलग से अध्ययन करेंगे । हम यहां केवल संचार की प्रकृति और विधि को समझने के लिए ही इसका उल्लेख करेंगे ।

संचार की प्रकृति के साथ संचार की विधि का भी गहरा संबंध है । संचार की विधि से तात्पर्य है संचार की प्रक्रिया का स्वरूप । संचार के विभिन्न माध्यमों और रूपों से उसकी विधि का निर्धारण होता है । लेकिन सभी तरह के संचार माध्यमों में संचार की विधि का एक मानक स्वरूप अवश्य होता है जिसे समझना जरूरी है । इस इकाई में हम इस बारे में भी चर्चा करेंगे । संचार की विधि का संबंध उन सांकेतिक रूपों से बहुत गहरा है जिनके बिना संदेशों का संप्रेषण मुमकिन नहीं है । इन सांकेतिक रूपों के बारे में भी इकाई में चर्चा की जाएगी । इकाई के अध्ययन के बाद हम उम्मीद करते हैं कि आप संचार की प्रकृति और विधि के विभिन्न पक्षों और उनके पारस्परिक संबंधों को अच्छी तरह समझ सकेंगे ।

11.2 संचार की प्रकृति

संचार की प्रकृति के बारे में अध्ययन से पहले संचार और प्रकृति शब्दों का अर्थ समझ लेना जरूरी है । प्रकृति का मतलब होता है स्वभाव । जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति शांत प्रकृति का है तो इसका अर्थ होता है कि वह व्यक्ति शांत स्वभाव का है । और जब हम शांत स्वभाव कहते हैं तो इसका तात्पर्य यह भी है कि वह व्यक्ति हर तरह की स्थिति में भी अपने आचरण को संयमित रखता है, दूसरे के साथ अभद्रता से पेश नहीं आता, बात-बात पर गुस्सा नहीं करता । स्वभाव एक तरह से वस्तु का वह गुण है जिससे उस वस्तु की पहचान होती है । जैसे आग का स्वभाव गरम करना है और पत्थर का स्वभाव ठोसपन है । पत्थर तरल नहीं हो सकता और आग ठंडी नहीं हो सकती । ठंडी होने पर आग आग नहीं रहती । इसी प्रकार जब हम संचार की प्रकृति की बात करते हैं तो उसका

तात्पर्य यही है कि संचार का स्वभाव क्या है । यानी कि संचार का वे गुण कौन से हैं जिनसे संचार की पहचान होती है । संचार विभिन्न स्थितियों में किस तरह कार्य करता है । क्या स्थितियां बदलने से संचार की प्रकृति बदल जाती है । एक उदाहरण से हम इस बात को समझें । जब हम कॉलेज या स्कूल में पढ़ रहे होते हैं तब हम घंटे की आवाज सुनकर तरह-तरह का अर्थ निकालते हैं । किसी समय घंटा बजने का मतलब होता है, एक पीरियड समाप्त हो गया और दूसरा शुरू होने वाला है । कभी इसका मतलब होता है कि छुट्टी हो गई है और कभी मतलब होता है स्कूल शुरू हो गया है । कहने का तात्पर्य यह है कि एक ही वाक्य अलग-लग संदर्भों में अलग- अलग अर्थ देता है । घंटी की आवाज ने हम तक जो संचारित किया उस संदर्भ को हमने उसके साथ जोड़ दिया और उसी से हमने वह अर्थ निकाला जो हमारे विचार में सही अर्थ है । क्या इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जो संचारित किया जाता है उसका अर्थ निश्चित नहीं होता । क्या संचार में अर्थ की अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है? और संचार की इस विशेषता को हम संचार की प्रकृति कह सकते हैं? संचार की विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए हमें संचार के तात्पर्य को समझना होगा ।

11.2.1 संचार का तात्पर्य

संचार के लिए अंग्रेजी में 'कम्युनिकेशन' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है । अंग्रेजी में इसका अर्थ होता है विभिन्न स्थानों को आपस में जोड़ने वाले साधन, एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच परिवहन के साधन, सूचनाओं और संदेशों को भेजना आदि । हम यह कह सकते हैं कि 'कम्युनिकेशन' का अर्थ है किस भी वस्तु या संदेश को एक जगह से दूसरी जगह भेजना । जिस तरह हम सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान भेज सकते हैं उसी प्रकार हम एक जगह से दूसरी जगह संदेश भी भेज सकते हैं । 'कम्युनिकेशन' के लिए हिन्दी में आमतौर पर दो शब्दों का प्रचलन है - संचार और संप्रेषण । हिन्दी में संचार का अर्थ होता है, गमन या भ्रमण । जब हम संचार के साधन कहते हैं तो तात्पर्य होता है- दो या अधिक स्थानों या व्यक्तियों के बीच संबंध स्थापित करने के साधन । इसी प्रकार संप्रेषण का अर्थ है - एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या एक स्थान से दूसरे स्थान तक वस्तु या संदेश को भेजना। संप्रेषण अंग्रेजी शब्द 'ट्रांसमिशन' के लिए भी प्रयुक्त होता है । लेकिन चाहे अंग्रेजी शब्द हो या हिन्दी शब्द तात्पर्य यही है कि यहां भेजने का भाव निहित है । यह संदेश हो सकता है, वस्तु हो सकती है या और कुछ । यह भेजने की क्रिया दो या दो से अधिक स्थानों के बीच हो सकती है और दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हो सकती है । संचार के इस अर्थ से हम उसके तात्पर्य को अच्छी तरह समझ सकते हैं ।

संचार के जिस अर्थ से हमारा संबंध इस पाठ्यक्रम में है, उसमें संदेश ही एक स्थान से दूसरे स्थान और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचते हैं । यानी संचार के लिए कुछ बातों का होना जरूरी है । सबसे पहले तो संदेश जिसे भेजा जाना है । दूसरा, जो इस संदेश को भेज रहा है । तीसरा, जिस तक संदेश भेजा जा रहा है या जिसे संदेश प्राप्त करना है और चौथा वह माध्यम जो संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाता है । संचार की संपूर्ण प्रक्रिया इन चार बातों के योग से ही निर्मित होती है । इनमें से एक बात का भी अभाव संचार की प्रक्रिया को बाधित कर देगा या संचार की प्रक्रिया अधूरी रह जाएगी । संचार की यह बुनियादी पहचान है । इस बात को एक उदाहरण से आप समझ सकते हैं । यदि मैं अपने पिता को कोई सूचना पहुंचाना चाहता हूं और एक चिट्ठी लिखता

हूं तो आप देखेंगे कि मेरे इस कृत्य से संचार के ये चारों पक्ष शामिल हो जाएंगे । संदेश, भेजने वाला, संदेश प्राप्त करने वाला और संदेश को भेजने का माध्यम । लेकिन यदि मेरे पास कोई सूचना है और मुझे यह नहीं पता कि उसे किसके पास भेजना चाहिए तो मेरी सूचना कभी संचार की प्रक्रिया को पूरा नहीं करेगी । संचार की यह प्रक्रिया दो व्यक्तियों की आपसी बातचीत में भी निहित रहती है । रूबरू की जाने वाली बातचीत में भी संदेश भेजने वाला, पाने वाला, संदेश और उसका माध्यम मौजूद रहता है । बातचीत में संदेश भेजने वाले और पाने वाले की भूमिका में बदलाव होता रहता है । संचार की प्रक्रिया के इन पक्षों के बारे में आप अध्ययन कर चुके हैं । यहां इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। हम सिर्फ यह कहना चाहते हैं कि संचार की इस प्रक्रिया में ही उसकी प्रकृति निहित है और इस इकाई में हम उसे ही समझने का प्रयास करेंगे ।

11.2.2 मानव संचार के तत्व

संचार एक स्थान से दूसरे स्थान तक होता है लेकिन वस्तुतः यह एक स्थान के व्यक्ति या व्यक्तियों का दूसरे स्थान के व्यक्ति या व्यक्तियों के बीच ही घटित होता है । संचार की दूसरी महत्वपूर्ण पहचान यह है कि इसका संबंध मनुष्य-मनुष्य के बीच के संचार से ही है । इसलिए संचार का हम कोई माध्यम इस्तेमाल क्यों न करें उसमें मनुष्य के पारम्परिक संवाद की विशेषताएं मौजूद रहती है। मानव संचार की यह प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण भी है और जटिल भी । मनुष्य जब दूसरे तक अपने संदेश को पहुंचाता है, तब इस प्रक्रिया में कई चीजें शामिल होती है । मसलन, हम किसी को देखकर सिर को हल्के से झुकाकर और दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार कहते हैं, तो हम दूसरे व्यक्ति तक अपना अभिवादन कर रहे होते हैं । यह संचार सिर्फ नमस्कार बोलने में ही निहित नही है बल्कि सिर झुकाने, हाथ जोड़ने और नमस्कार कहने में निहित है । यानी हम अपने अभिवादन में आदर की भावना को भी शामिल करना चाहते हैं । हमारा हाथ जोड़ना और सिर झुकाना आदर का संकेत है । लेकिन इसके साथ ही हमारे नमस्कार बोलने के लहजे में भी आदर का पुट होगा । नमस्कार बोलने में हम अपनी भावना का भी स्पर्श देते हैं । यदि हम किसी को औपचारिकता के कारण ही नमस्कार करते हैं और उस व्यक्ति के लिए हमारे मन में आदर का भाव नहीं है तो हमारे सिर झुकाने, चेहरे के भाव और हमारे बोलने के लहजे में अंतर स्पष्ट ही अभिव्यक्त होगा ।

यदि इस प्रक्रिया पर विचार करें तो पाते हैं कि यह संचार सिर्फ कुछ सैंकडों में घटित हो जाता है लेकिन हम किस तरह अपने भाव को व्यक्त करेंगे, इसका निर्णय हमारा मस्तिष्क तत्काल ले लेता है । यानी कि उस दूसरे व्यक्ति को देखते ही हमारा दिमाग तेजी से सक्रिय होता है और वह हमारे शरीर के अन्य अंगों को हमारी इच्छा के अनुसार प्रतिक्रिया करने का आदेश देता है । संचार की यह प्रक्रिया हमारे मस्तिष्क और शरीर की पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया के बिना संभव नहीं है । हमारे नमस्कार के अनुसार वह व्यक्ति जिस तक हमने अपना संदेश पहुंचाया है, वह भी अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करेगा । हमारे संदेश को उस व्यक्ति का मस्तिष्क शरीर की कर्मेन्द्रियों के माध्यम ग्रहण करेगा और हमारे संदेश का जवाब देने के लिए अपने शरीर को आदेश देगा । यह प्रतिक्रिया भी कुछ ही क्षणों में घटित हो जाएगी ।

लेकिन यहां एक और बात ध्यान देने की है कि दोनों की प्रक्रियाएं तब तक संभव नहीं है. जब तक कि दोनों व्यक्ति पहले से यह न जानते हों कि नमस्कार शब्द का तात्पर्य क्या है और सिर

झुकाने या चेहरे पर खास तरह के भाव लाने का क्या मतलब है । यह बातें दोनों व्यक्तियों ने निश्चय ही पहले सीख रखी है और दोनों को इस आशिक भाषा का अर्थ मालूम है । यहां भाषा सिर्फ नमस्कार तक ही सीमित नहीं है, वह सिर झुकाने और चेहरे पर आदर का भाव लाने में भी निहित है । यह भाषा दोनों के लिए समान अर्थ देने वाली है और दोनों ने उसे सीखा है । बिना सीखे उनके लिए संदेशों का आदान-प्रदान करना संभव नहीं है ।

संचार की यह प्रक्रिया एक तरह से सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है । नमस्कार करने, सिर झुकाने के पीछे सांस्कृतिक नियम-कायदे काम कर रहे होते हैं । हम हर उस व्यक्ति को नमस्कार नहीं करते, जिनसे परिचित होते हैं । लेकिन इसका अर्थ यही नहीं है कि उसके प्रति हमारे मन में आदर का भाव नहीं होता । दोस्तों को नमस्कार करते हुए सिर झुकाने की आवश्यकता नहीं होती । इसी प्रकार हम अपने पति या पत्नी के प्रति प्रेम को उस रूप में व्यक्त नहीं करते जिस रूप में अपने माता-पिता या बचो के प्रति व्यक्त करते हैं । व्यक्ति के साथ हमारे संबंध, संचार के समय की स्थितियां और संदेश की अतंर्वस्तु से भी हमारी संचार प्रक्रिया प्रभावित होती है । इसके लिए मनुष्य ने एक अत्यंत विकसित भाषा निर्मित कर ली है । यह एक तरह से संकेतों की भाषा है ।

संचार के लिए व्यक्ति सिर्फ उस भाषा का ही इस्तेमाल कर सकता है जो उसे सामाजिक गतिविधियों के दौरान प्राप्त हुई होती है और वह यह जानतेसमझते हुए उसका संचार के लिए इस्तेमाल करता है कि उसे वह व्यक्ति या वे लोग समझ जाएंगे जिन तक वह अपना संदेश पहुंचाना चाहता है। हमारे इस कथन का तात्पर्य यही है कि संदेश ऐसे संकेतों के माध्यम से संप्रेषित होता है जिनके अर्थ को प्रेषक और ग्रहीता दोनों समझते हों । वस्तुत: संकेतों की यह भाषा युगों में निर्मित होती है और उनके अर्थ इतने निश्चित हो जाते हैं कि आमतौर पर उन्हें समझने में दिक्कत नहीं आती । हम बचपन से इस भाषा का इस्तेमाल करने के इतने आदी होते हैं कि हमारी इंद्रियाँ और मस्तिष्क उसके अनुसार तत्काल प्रतिक्रिया करने लगता है । हम जल्दी ही जान जाते हैं कि जिससे बात कर रहे हैं वह हमसे बात करते हुए प्रसन्नता महसूस कर रहा है या ऊब रहा है । हमें लोगों के गुस्से, प्यार, खीज, आदर आदि भावों को समझने में दिक्कत नहीं होती । यही नहीं हम भी लगातार इन संकेतों का प्रयोग करते रहते हैं । संचार की यह संपूर्ण भाषा संचार के लिए अपरिहार्य है और संचार की प्रकृति के निर्माण और उसके समझने में अत्यंत सहायक होती है ।

संकेतों की भाषा को हम अपने दिमाग की याद रखने की विशेषता के बिना प्रयोग में नहीं ला सकते । संकेतों को बारबार प्रयोग करने से हमारे मस्तिष्क में उनकी स्मृति अंकित हो जाती है। यह स्मृति स्वत: ही अनुकूल प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक संकेतों का निर्धारण करने लगती है । अब जिस व्यक्ति को हमने नमस्कार किया यदि वह हमारे पिता की उर्म का है तो वह हमारे संदेश में निहित भाव को समझकर सहज ही स्नेह के साथ आशीर्वाद देने की मुद्रा बनाते हुए हमें 'जीते रहो बेटा' कह सकता है । अब यदि वह ऐसा न करके हमारी जानबूझ कर अनदेखी करता है या अनुकूल प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता तो उसके पीछे कोई ऐसा कारण अवश्य होगा जो सामान्य नहीं कहा जा सकता । यह संभव है कि वह व्यक्ति हमारी किसी बात से नाराज हो या यह भी संभव है कि उन्होंने हमारे संचार को ग्रहण ही न किया हो, उसका ध्यान कहीं और हो और यह भी संभव है कि उसके मस्तिष्क और शरीर में पारस्परिक संबंधों में कोई ऐसा अवरोध आ गया हो, जिसने संचार को ग्रहण करने या

उसके अनुरूप प्रतिक्रिया करने में उस व्यक्ति को अक्षम बना दिया हो । यदि ऐसा नहीं है तो हम संदेश के संप्रेषण पर अनुकूल प्रत्युत्तर की ही अपेक्षा करते हैं और वैसी ही प्रतिक्रिया हमें प्राप्त भी होती है।

हमारी मस्तिष्क में ऐसे अनगिनत संकेत अंकित होते हैं जिनके आधार पर हम न सिर्फ दूसरों के संदेशों को समझ जाते हैं बल्कि दूसरों तक अपने संदेश को पहुंचा भी पाते है । संचार की इस प्रक्रिया को कितनी तीव्रता से मस्तिष्क ग्रहण करता है और कितनी तीव्रता से वह प्रत्युत्तर देता है वह हम नीचे दो व्यक्तियों की बातचीत से समझ सकते हैं ।

एक) मि: सुंदरम् आपके यहां इतना शोर क्यों हो रहा है ? क्या आपर दूसरों को सोने भी नहीं देंगे ?

दो: चिल्लाइए मत । यह कोई तरीका है बात करने का ?

एक: क्या मतलब ? मैं चिल्ला रहा हूं ? और आपके यहां क्या हो रहा है ? शांति पाठ हो रहा है ?

दो: जी हां, शांति पाठ हो रहा है और उसमें मेरे बेटे के साथ आपका लाडला भी शामिल है।

एक: संजय भी ? हे भगवान् । ये क्या हो रहा है इन बच्चों को ? ये कोई संगीत है, न राग, न लय, न आवाज ? एक हमारे जमाने का संगीत था, कितना मधुर । कितना सरस ।

दो: सही फरमाते हैं आप आजकल का संगीत तो शोर है, शोर । कान के परदे फट जाते है। लेकिन बच्चे है कि मानते ही नहीं

एक: बच्चों का भी क्या कसूर ? जमाने की हवा ही एसी चल रही है । अब तो हर तरफ बस यही शोर है पुरानी आवाज और पुराने गीत तो हमारे जैसे बूढों की पसदं रह गए हैं ।

दो: के: ए: सहगल की आवाज याद कीजिए- जब दिल ही टूट गया तो जी कर क्या करेंगे ? आजकल का कोई गायक गा सकता है, वैसा भला ?

एक: आपको सहगल पसदं है ?

दो: पसदं ? जान देता हूं साब, जान । उनके एक-एक गाने मेरे पास है

एक: तब तो बैठा जाए एक दिन मैं भी सहगल का दिवाना हूं- एक बंगला बने प्यारा...

दो: हां-हां क्यों नहीं बल्कि आज रात ही बैठते हैं ।

इन दो पड़ोसियों की बातचीत सिर्फ बारह संवादों में सीमित है और जिसे पूरा होने में मुश्किल से दो मिनट लगे होंगे । लेकिन हम देखते हैं कि ये दोनों व्यक्ति जिनके बीच बातचीत आपसी झगड़े और तनातनी के साथ शुरू हुई थी, पारस्परिक सौहार्द और आत्मीयता के साथ समाप्त होती है । हम आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि कौन-सा संवाद बोलते वक्त किस व्यक्ति के चेहरे पर कैसे भाव उत्पन्न हुए होंगे और किस संवाद को बोलते वक्त संवाद का लहजा कैसा रहा होगा । पहल व्यक्ति ने जो बात दूसरे को कही उसके दिमाग ने उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया की । लेकिन उस प्रतिक्रिया में ऐसी विशिष्टता भी निहित थी कि पूरी बात अंत तक पहुंचते-पहुंचते पूरी तरह बदल चुकी थी और इस वजह से उनके बीच का संबंध भी बदल गया था । मानव संचार में इन बातों का गहरा महत्व है और संचार की प्रकृति इन्हीं बातों से तय होती है ।

इसका अर्थ यह नहीं है कि संचार की प्रक्रिया हमेशा एक ही पैटर्न पर गतिशील होती है । उपर्युक्त संवाद में भी पहले व्यक्ति के जवाब में दूसरा व्यक्ति कुछ भिन्न ढंग से प्रतिक्रिया करता तो बात विपरीत दिशा में भी मुड़ सकती थी । आप स्वयं इस बातचीत में बदलाव के देख सकते हैं ।

11.2.8 संचार से जनसंचार तक

संचार की जरूरत हमेशा मनुष्य को रहती है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और इस कारण उसका लगातार दूसरे लोगों से संपर्क होता रहता है । इस संपर्क के लिए उसे संचार के विभिन्न साधनों की जरूरत होती है । आमतौर पर संचार एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से और कुछ लोगों से होता है। मसलन, हम अपने माता-पिता, भाई-बहिन, दोस्त आदि से व्यक्तिगत स्तर पर संवाद करते हैं । या तो रुबरु या फिर खत, तार, फोन, ई-मेल आदि के जरिए । ये सभी साधन वैयक्तिक संचार के साधन हैं । आप इनके बारे में पहले अध्ययन कर चुके हैं । लेकिन संचार की यह प्रक्रिया जब बड़े जनसमूह के साथ होती है तो वह संचार का भिन्न रूप होगा । मसलन, रेडियो पर समाचार सुनना । आकाशवाणी से संगीत कार्यक्रम सुनना, ऐसा ही संचार है । आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले समाचार उन सभी के लिए होते हैं जो उन्हें सुनना चाहते हैं । यह संचार कुछ विशेष लोगों के लिए नहीं होते । संचार के ऐसे रूप के जो व्यापाक जनसमूह के लिए होते हैं उन्हें जनसंचार कहते हैं । आमतौर पर जनसंचार के साधन एक तरफा होते हैं । जैसे टेलीफोन पर दो व्यक्ति आपस में बातचीत कर सकते हैं, लेकिन समाचारपत्र, सिनेमा, रेडियो या टेलीविजन ऐसे माध्यम हैं जिनमें दो तरफा संचार की गुंजाइश तो हो सकती है और कई बार कुछ प्रोग्राम ऐसे होते हैं लेकिन उनकी प्रकृति एक तरफा संचार की ही होती है । यह संचार किसी एक या छोटे से समूह के लिए नहीं होता बल्कि व्यापक जन समुदाय के लिए होता है । इसलिए जनसंचार की प्रकृति में वैयक्तिक संचार कसे कुछ भिन्नता आ जाती है ।

संचार के वैयक्तिक रूपों में हम जिस व्यक्ति या समूह से संवाद करते हैं । आमतौर पर वहां हमारा संचार दूसरे की प्रतिक्रिया पर बहुत कुछ निर्भर करता है । लेकिन जनसंचार को ग्रहण करने वाले के बारे में हमारी जानकारी बहुत सीमित होती है । ह्मारा उनसे व्यक्तिगत संपर्क नहीं होता । हमें पहले से यह मालूम नहीं होता कि वे हमारे संदेश को किस रूप में ग्रहण करेंगे । लेकिन हमारे पास जनसंचार की एक परंपरा होती है । यानी हमसे पहले जिन लोगों ने संचार के लिए प्रयत्न किया था, उन्होंने बारबार कोशिश द्वारा एक भाषा निर्मित कर ली होती है जिसका हमें लाभ मिलता है । हम भी भाषा का इस्तेमाल करते हैं । यह वह भाषा होती है जिसे हमारे ग्रहीता भी जानते और समझते हैं । जनसंचार की भाषा भी संकेतों की भाषा होती है, लेकिन हर जनसंचार माध्यम के संकेतों की भाषा दूसरे माध्यम से भिन्न होती है । अखबार, रेडियो, सिनेमा और टेलीविजन की भाषा एक-सी नहीं होती। मुद्रित, श्रव्य और दृश्य माध्यमों में संचार की प्रकृति संकेतों की भाषा की भिन्नता के कारण भिन्न हो जाती है । एक में शब्दों पर बल रहता है, दूसरे में ध्वनि पर और तीसरे में दृश्य पर । मुद्रित माध्यम में शब्दों द्वारा ही ध्वनि और दृश्य के चित्र निर्मित किए जाते हैं, जबकि श्रव्य माध्यम में उच्चरित शब्द और ध्वनि से दृश्यों को निर्मित करने की कोशिश की जाती है । दृश्य माध्यमों में यद्यपि शब्दों और ध्वनियों का भी इस्तेमाल किया जाता है लेकिन केंद्रीय महत्व दृश्य का ही होता है । जो बात दृश्य से कही जा सकती है, उसके लिए शब्दों और ध्वनियों का प्रयोग अपव्यय ही माना जाता है ।

ये बातें यहां लिखना आसान है लेकिन व्यवहार में इनका संचार के लिए उपयोग आसान नहीं होता। इस बात को कुछ हद तक हम अगले भाग में समझने का प्रयास करेंगे ।

बोध प्रश्न- 1

1. निम्नलिखित लोगों को अभिवादन करने का कौन सा तरीका उपयुक्त माना जा सकता है?
   क. बॉस को ....
   ख. दोस्त को ....
   ग. मौसी को ....
   घ. अध्यापक को ....
2. 'कहां जा रहे हो ?' पिता द्वारा बेटे को पूछा गया सवाल कितने तरह की भावनाओं को व्यक्त करते हुए पूछा जा सकता है ? कम-से-कम तीन भाव स्थितियों का उल्लेख जरूर कीजिए ।
3. 'बैठे', 'बैठिए', 'बैठो तो', 'बैठिए ना' इन चारों कथन का एक ही अर्थ है लेकिन इनमें व्यक्त होने वाली भावना अलग- अलग हैं । आपको यह बताना है कि इन्हें कौन किससे कह सकता है?

11.3 संचार का विकास

जनसमूह के लिए संचार की जरूरतों का विकास किया । जनसंचार की जरूरत आधुनिक पूंजीवादी युग में ज्यादा तेजी से बढ़ी । यही कारण है कि जनसंचार के साधनों का भी तेजी से विकास हुआ । आप जनसंचार के इन साधनों से भलीभांति परिचित हो चुके होंगे । हमारा मकसद इस भाग में जनसंचार के विभिन्न रूपों से परिचित कराना नहीं बल्कि इनके माध्यम से संचार की प्रकृति को समझना है । जनसंचार के तीन रूपों से हम आज परिचित हैं - मुद्रित, श्रव्य और दृश्य माध्यम । इनका विकास भी इसी क्रम से हुआ है । आज हम जनसंचार के विकास के ऐसे चरण में हैं जब ये तीनों माध्यय हमें एक ही जगह एक साथ प्राप्त हो सकते हैं । हमारा तात्पर्य इंटरनेट की सुविधा से है । इंटरनेट वस्तुत: जनसंचार के सभी साधनों को हमारे लिए उपलब्ध ही नहीं करा देता बल्कि वह वैयक्तिक संचार के साधनों को ही हमारे घर में हमारे कंप्यूटर पर उपलब्ध करा देता है । इसके बावजूद इन तीनों माध्यमों का फर्क अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

ये तीनों माध्यम क्रमश: शब्द, ध्वनि और चित्र पर निर्भर होते हैं । ये संकेत हैं और इन्हीं में वह अर्थ निहित होता है जिसे हम संप्रेषित करना चाहते हैं या जिसे हमें प्राप्त करना है । और जैसा कि पहले कह चुके है इन संकेतों के अर्थ पहले से निश्चित होते हैं, जिनका बारबार प्रयोग करे और जिनकी स्मृति मस्तिष्क में अंकित हो जाने से हमें इन संकेतों का अर्थ समझने में कठिनाई नहीं आती। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि संप्रेषण की प्रक्रिया आसान होती है । संकेतों का यह संसार बड़ा जटिल होता है और इनका प्रयोग करने के तरीकों की सामान्यीकृत और सर्वस्वीकृत विदित होने के बावजूद प्रत्येक व्यक्ति उसमें कुछ वैयक्तिक स्पर्श जरूर देता है । यह वैयक्तिक स्पर्श उस माध्यम के संरचनागत ढ़ांचे में ही रहकर किया जाता है लेकिन इसके बावजूद अर्थ संप्रेषण में जटिलता पैदा हो जाती है । जनसंचार माध्यमों में इस जटलिता के अनुभव से हम प्राय: गुजरते हैं । आइए, संचार की प्रकृति के इस पहलू पर हम इन तीनों तरह के माध्यमों के संदर्भ में विचार करें ।

11.3.1 मुद्रित माध्यम

जनसंचार का यह अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है । वे सभी लोग जो साक्षर होते हैं इस माध्यम के संपर्क में अवश्य आते हैं । समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और पुस्तकों द्वारा हमारा मुद्रित माध्यम से परिचय प्राप्त होता रहता है । आइए, हम 21 नवंबर 1999 के 'जनसत्ता' में प्रकाशित एक समाचार के शीर्षक पर विचार करें - 'राम प्रकाश गुप्ता ने अपने पास 19 विभाग रख लिए' । यदि इस समाचार शीर्षक को इस रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो क्या उसमें निहित अर्थ वही होता जो उपर्युक्त शीर्षक में है - 'रामप्रकाश गुप्ता ने अपने पास 19 विभाग रखे' । दोनों ही वाक्यों में तथ्यों की दृष्टि से कोई अंतर नहीं है लेकिन 'रख लिए' और 'रखे' में क्या तथ्य की प्रस्तुति एक सी है । 'जनसत्ता' में प्रकाशित शीर्षक में तथ्य की अभिव्यक्ति ही नहीं बल्कि मुख्यमंत्री के आचरण में निहित भाव के प्रति मूल्य निर्णय भी है । यदि यह मूल्य निर्णय तथ्य की सही अभिव्यक्ति है तो संशोधित वाक्य में उस पर जानबूझकर पर्दा डाला गया है । इसका मतलब यह हुआ कि मुद्रित माध्यम में शब्दों के अर्थ निश्चित होते हुए भी उनके प्रयोग में हलका-सा अंतर संकेत के अर्थ की अभिव्यक्ति में अंतर ला देता है ।

इसी दिन के समाचारपत्रों में प्रकाशित एक अन्य समाचार के दिए गए शीर्षक पर गौर करें: 'दि हिंदू, 'जेएनयु में वापंथी वर्चस्व बरकरार'; 'जनसत्ता'; 'जनेवि छात्रसंघ चुनाव में विद्यार्थी परिषद् की एक सीट जीत कर वापसी'; और, 'दि संडे टाइम्स' : 'जेनयू में सब तरफ वापमंथ नहीं' । जाहिर है कि एक ही चुनाव के परिणामों को देखने के ये भिन्न-भिन्न नजरिए उनके शीर्षकों से साफ जाहिर होते है । इसका मतलब यह है कि शब्द की सत्ता ऐसी नहीं है जो संकेतार्थोंको हमेशा वस्तुगत रूप में पेश कर सके । शब्दों का प्रयोग करने वाला अपने विचार और भाव के अनुसार उन्हें पेश करता है । शब्दों का प्रयोग करने वाला चाहे जैसा दावा क्यों न करे लेकिन वह पूर्णत: निरपेक्ष नही हो सकता। संचार की प्रकृति की यह महत्वपूर्ण विशेषता है जिसे जानना जरूरी है ।

इसे दूसरे संदर्भो में भी समझ सकते हैं । मसलन यह कहने में कि 'मेरे पिता बहुत कंजूस है' और 'मेरा बाप बहुत कंजूस है । में पिता के प्रति भावना में फर्क साफ देखा जा सकता है । पिता और बाप पर्यायवाची हैं, लेकिन हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार ने इनके अर्थ में जो फर्क पैदा किया है, उसे ध्वनित होने से हम रोक नहीं सकते । इसलिए प्रयोग करने वाली को शब्दों का अर्थ जानना ही पर्याप्त नहीं है बल्की उसकी सांस्कृतिक अर्थवत्ता को भी जानना जरूरी है । इसलिए मुद्रित शब्द वही ध्वनित नहीं करते जो उनके शब्दकोशीय अर्थ होते हैं, वे वह अर्थ भी व्यक्त करते हैं जो उनके बाहर सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवहार में प्रचलित होते हैं ।

11.3.2 श्रव्य माध्यम

श्रव्य माध्यमों में शब्दों के अर्थ को निर्धारित करने में अनुतान का एक पहलू और जुड़ जाता है । अनुतान यानी कि बोलने का लहजा । बोलते हुए हम शब्दों में जिस तरह का लहजा जोड़ते हैं उसके अनुसार उसका अर्थ भी व्यक्त होने लगता है । सहज ढंग से बोला गया 'जाओ' और आदेश के स्वर में बोला गया 'जाओ' में अंतर हम आसानी से महसूस कर सकते हैं । गुस्से में कहा गया 'जाओ' बिलकुल भिन्न ढंग से बोला जाएगा । बोलने के ये अंदाज पूरी तरह से ध्वनि पर निर्भर हैं । इन्हें हम मुद्रित रूप में व्यक्त नहीं कर सकते । हम जीवन में ध्वनियों की इस शक्ति का इतना ज्यादा

उपयोग करते हैं कि हमें उसको समझने में और ग्रहण करने में कठिनाई नहीं होती । लेकिन ध्वनियों की यह शक्ति सिर्फ शब्दों तक ही सीमित नहीं होती । अगर हम संगीत पर विचार करें तो उसमें भी हमें विभिन्न भावनाओं का अर्थ अभिव्यक्त होता नजर आता है । विभिन्न वाद्य यंत्र अलग-अलग ढंग से बजाए जाकर अलग-अलग अर्थ अभिव्यक्त करते हैं । हम खुशी, दुख, अकेलेपन, अवसाद के भावों को संगीत के द्वारा भी पहचान जाते हैं । यह भी हम लगातार अनुभव से सीखते हैं । रेडियो नाटकों और फिल्मों के पार्श्व संगीत में संगीत के इस उपयोग को सुनने के हम इनते आदी हो चुके होते हैं' कि हम सहज ही पहचान जाते हैं कि कौन-सा संगीत किस तरह के भाव को व्यक्त कर रह है । इसी तरह विभिन्न चीजों के साथ विभिन्न तरह की ध्वनियां जुड़ी होती है । शेर की दहाड़, हाथी का चिंघाड़ना, कुत्ते का भौंकना आदि से हम परिचित होते हैं । इन पशुओं को देखे बिना हम इनकी मौजूदगी को इनकी आवाज से पहचान जाते हैं । यहां तक कि कुत्ते की अलग-अलग तरह की आवाज से भी हम परिचित होते हैं कि वह कब किसी को देखकर भौंक रहा है और कब उसके भौंकने में अवसाद या भय का भाव निहित है ।

ध्वनियों का जनसंचार के माध्यमों में व्यापक उपयोग होता है । वह न सिर्फ संदेश में निहित अर्थ का विस्तार करते हैं बल्कि उनके प्रयोग द्वारा हम गतिशील स्थितियों को भी अभिव्यक्त करने में कामयाब हो जाते है । दूर से नजदीक आती और पास से दूर जाती पदचाप से हम किसी के आने का या किसी के दूर जाने को जान जाते हैं । ध्वनि में निहित इस अर्थ क्षमता को पहचान कर हम इनका जनसंचार के लिए प्रयोग कर सकते हैं ।

लेकिन इसके साथ ही की कठिनाइयां भी जुड़ जाती है । ध्वनियों के साथ जुड़े अर्थ को यदि हम ठीक से नहीं पहचान पाते हैं या उनका सही जगह सही ढंग से उपयोग नहीं कर पाते हैं तो हम जो अर्थ व्यक्त करना चाहते हैं उससे भिन्न अर्थ व्यक्त कर देंगे । इससे संदेश का अर्थ ही बदल जाएगा। विभिन्न तरह की ध्वनियों को शब्दों के साथ जोड़कर भी प्रस्तुत किया जाता है । इनमें वे मौन के क्षण भी शामिल होते हैं जब किसी भी तरह की ध्वनि का प्रयोग नहीं किया जाता । मसलन, इन संवादों को देखें -

पिता : क्या तुम स्कूल गए थे?

पुत्र : (चुप)

पिता : क्यों नहीं गए?

पुत्र : (चुप)

पिता : बोलते क्यों नहीं?

यहां पुत्र का चुप रहना सही अर्थ को ध्वनित कर देता है । पिता समझ जाता है कि बेटा स्कूल नहीं गया था । पुत्र की चुप्पी में यह अर्थ था जो पिता ने पहचान लिया लेकिन जब पिता ने पूछा 'क्यों नहीं गए?' तो इसके जबाव में पुत्र की चुप्पी का अर्थ पिता लगाने में असमर्थ है इसलिए वह पूछता है, 'बोलते क्यों नहीं?'

संचार की प्रकृति का अध्ययन करते हुए हम जनसंचार माध्यमों में शब्दों के साथ ध्वनियों में निहित अर्थ क्षमता को भी ध्यान में रखते हैं । इससे संचार की शक्ति का विस्तार होता है । लेकिन इसके साथ ही यह भी जानना जरूरी है कि जनसंचार में शब्दों और ध्वनियों के प्रयोग की एक सीमा भी है । हम अपनी अभिव्यक्तियों को पूरी तरह से शब्दों और ध्वनियों के माध्यम से अभिव्यक्त नहीं

कर सकते । इसके लिए हमें दृश्यों की जरूरत होती है । उपन्यास और कहानियों में या गद्‌य की अन्य विधाओं में किसी दृश्य स्थिति का वर्णन किया जा सकता है और यह वर्णन कई बार वास्तविकता के इतने नजदीक होता है कि हम उसे पढ़कर ही अनुमान लगा लेते हैं कि दृश्य किस तरह का होगा । एक तरह से शब्दों के माध्यम से चित्र ही उपस्थित हो जाता है । दृश्य संचार की प्रकृति को कैसे निर्धारित करते हैं इसका अध्ययन भी हमारे लिए जरूरी है ।

11.3.3 दृश्य माध्यम

दृश्य माध्यमों में केंद्रीय बल दृश्यों पर होता है, लेकिन दृश्यों के साथ शब्दों और ध्वनियों का भी प्रयोग किया जाता है । दृश्य में भी एक तरह की प्रतिकात्मकता निहित होती है और हम उसे देखते हुए आसानी से पहचान जाते हैं । मसलन, हम बसों में, सार्वजनिक स्थानों पर 'धूम्रपान निषेध' लिखा हुआ देखते हैं । जिसका अर्थ होता है उस स्थान पर सिगरेट, बीड़ी आदि पीने की मनाही । लेकिन हम कई स्थानों पर इसकी जगह निम्नलिखित संकेत भी देखते हैं -

इसमें एक वृत्त में एक जलती हुई सिगरेट का चित्र बना हुआ है और उसे एक रेखा द्‌वारा काटा हुआ है, जिसका मतलब है सिगरेट पीने की मनाही । इस संकेत का कोई भी व्यक्ति अर्थ समझ सकता है जो सिगरेट, बीड़ी आदि से परिचित हो । इस चित्र में संकेत को समझने के लिए शब्दों का ज्ञान जरूरी नहीं है । यहां सिगरेट, उसमें से निकलता धुआं और उसे काटती रेखा सारी बात को साफ कर देती है । आमतौर पर किसी चीज को रद्द करना हो तो हम उसे तिरछी रेखा से काट देते हैं 1 इस तरह से काटने से लोग परिचित होते हैं । इसी तरह जलती सिगरेट दिखाने के लिए धुएं का आकार जरूरी है अन्यथा यह संकेतित नहीं होगा कि सिगरेट जल रही है । अगर धुआं नहीं है तो इसका अर्थ होगा सिगरेट रखने की ही मनाही । यह उपर्युक्त चित्र में निहित संकेत से भिन्न संकेत होगा और वह अर्थ भी भिन्न देने लगेगा । अब यदि इस रेखा को हटा दिया जाए और वृत्त में सिर्फ जलती सिगरेट का चित्र हो तो इसका अर्थ होगा यहां सिगरेट पी जा सकती है । कहने का तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त चित्र में सभी आकृतियां मिलकर एक खास अर्थ व्यक्त कर रही है । इस चित्र में हम सिगरेट की जगह शराब की बोतल का चित्र बना सकते हैं, या किसी भी ऐसी वस्तु का जिसका निषेध किया जाना हो। अब हम यहां दो चित्र ओर दे रहे हैं क्या आप इन्हें देखकर पहचान सकते हैं कि इनमें किस तरह के भाव व्यक्त हुए हैं और उनमें अंतर बताने के लिए आकृति में क्या-क्या परिवर्तन किए गए हैं?

इनको देखकर हम बहुत सी बातों को समझ जाते हैं । पहले चित्र में व्यक्ति सोच रहा है । इसके लिए उस व्यक्ति के चित्र के ऊपर बने प्रश्न चिन्ह के संकेत (?) के निशान से हम आसानी से समझ सकते हैं । उसके बाएं हाथ की एक अंगुली का सिर पर होना, दूसरा कमर पर होना और नाक

सीधी होना । यह व्यक्ति के सोचने की मुद्रा को बताता है । चित्र देखकर प्रतीत होता है कि व्यक्ति को कोई प्रश्न परेशान कर रहा है । दूसरे चित्र में व्यक्ति के सिर पर जलता बल्व है । यह इस बात का संकेत है कि उसे प्रश्न का हल मिल गया है । उसका दिमाग रोशन हो गया है । लेकिन इस बात का संकेत उसकी आकृति में भी निहित है । मसलन, अब उसका बायां हाथ कमर पर है, दायां हाथ ऊपर उठा हुआ है और उसी हाथ की दो अंगुलियां चौड़ी है । नाक भी ऊपर की तरफ उठी नजर आ रही है । आकृति में यह फर्क इस बात के संकेत है कि उस व्यक्ति को सवाल का जबाव मिल गया है और उसकी परेशानी समाप्त हो गयी है ।

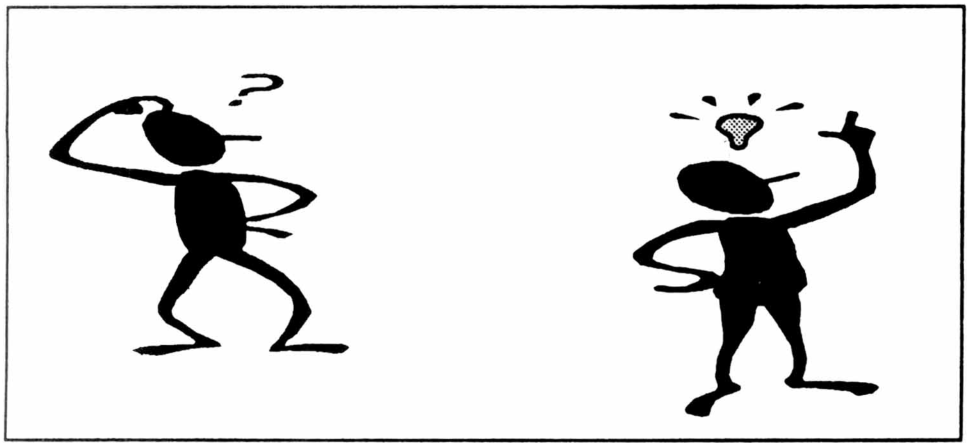

शरीर की आकृतियों मे जो अंतर हमने उपर्युक्त चित्रों में देखे वे ये बताने के लिए पर्याप्त हैं कि चित्रों में थोड़ा बदलाव भी अर्थ में कितना बड़ा अंतर कर देता है । फिल्मों और टेलीविजन में हम दृश्यों को महज यथार्थ के यथावत गतिशील अंकन के रूप में नहीं बल्कि संकेतों की अनवरत श्रृंखला के रूप में देखते हैं । ये संकेत लगातार दर्शकों को अर्थ अभिव्यक्त करते रहते है । नजरों का झुका होना, होंठों का फड़फड़ाना, कदमों का लड़खड़ाना, हाथों को मसलना ये सभी अर्थ देते हैं । यही नहीं दिए का बुझना, पंछी का उड़ना, समुद्र के उफनने के भी अर्थ होते है । यदि फिल्मकार फिल्म में कोई शॉट डालते हुए उसमें निहित अर्थ के प्रति सजग नहीं हुआ तो उसका वह शॉट पूरी कथा को कोई भिन्न अर्थ दे सकता है । दृश्य माध्यमों में फ्रेम के अंदर जो कुछ भी दिखाया जाता है, वह अपने में एक अर्थ ध्वनित करता है । उस फ्रेम में हल्का सा अंतर उसके अर्थ में भारी बदलाव कर सकता है । इसलिए यह जरूरी है कि हम दृश्य की इस शक्ति को समझें ।

दृश्य को हम हमेशा एक फ्रेम के अंदर देखते हैं । थियेटर से यह इस अर्थ में भिन्न होता है कि प्रत्येक से उनकी दूरी स्थिर नहीं होती है । क्लोज अप, मिट शॉट, लांग शॉट आदि भिन्न-भिन्न तरह के शॉटस के इस्तेमाल से दृश्यों के प्रभाव में अंतर पैदा किया जाता है । निर्देशक प्रेक्षक को किसी खास वस्तु या स्थिति पर अपना ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित कर सकता है । मसलन, किसी दृश्य में सड़क पर जाती हुई नायिका को देखते हुए बहुत से लोगों में से किसी एक व्यक्ति को क्लोज अप में पेश करके यह संकेतित किया जा सकता है कि इस व्यक्ति का नायिका से कुछ संबंध है या कहानी में उस व्यक्ति की कुछ भूमिका है । इसी तरह किसी कमरे में टंगी हुई तस्वीर को यदि निर्देशक बारबार क्लोज अप में दिखा रहा है तो इसका अर्थ यह है कि उस कहानी में तस्वीर की कुछ भूमिका जरूर है । इसी प्रकार पार्श्व संगीत के प्रयोग से यह संकेतित किया जाता है कि पात्र विशेष पर किस तरह की मानसिक प्रतिक्रिया हुई है । दृश्य माध्यमों में महत्वपूर्ण यही नहीं होता कि क्या दिखाया जा

रहा है, बल्कि यह भी कि कैसे दिखाया जा रहा है । क्या का निर्धारण कैसे से ही होता है । दृश्य माध्यमों की भाषा की इस विशिष्टता से ही उसकी प्रकृति का निर्माण होता है ।

बोध प्रश्न-2

1. निम्नलिखित संचार माध्यमों की प्रकृति के निर्धारण केंद्रीय महत्व किस बात का होता है?
   क. फिल्म ....
   ख. टेलीविजन ....
   ग. रेडियो ....
   घ. पत्रिका ....
2. 'मुझे तुमसे यह आशा नहीं थी' और 'तुमसे और क्या आशा की जा सकती है' इनमें से किस वाक्य में कहने वाले की निराशा ज्यादा झलकती है?
3. निम्नलिखित मुखाकृतियों मे देखकर बताइए कि इनमें किस तरह के भावों की अभिव्यक्ति हो रही है? भावों में अंतर के लिए मुखाकृतियों के किन अंगों में बदलाव किया गया है ?

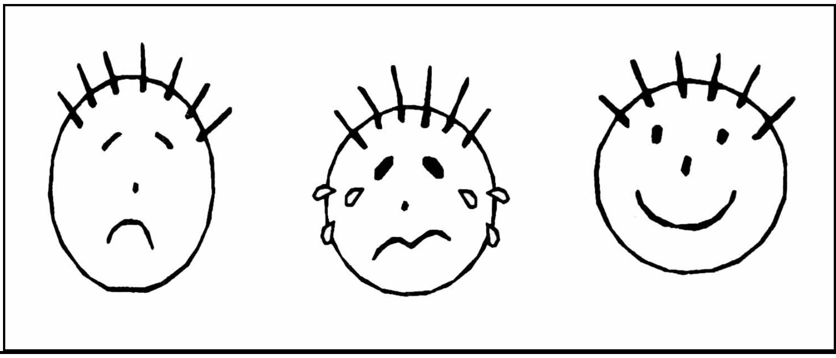

11.4 संचार की विधि

संचार की विधि संचार की प्रकृति और जरूरत से तय होता है । संचार की जरूरत ने संचार के विभिन्न माध्यमों का विकास किया । ये माध्यम खास तरह की प्रौद्योगिकी पर निर्भर होते हैं जो खास तरह के सांकेतिक रूपों के माध्यम से अपन संदेशों का संप्रेषण करते हैं । इसलिए संचार की विधि को समझने के लिए यह समझना जरूरी है कि संचार के विभिन्न माध्यम किस तरह की जरूरतों को पूरा करते हैं, इन माध्यमों की तकनीकी विशेषताएं कौन सी हैं और इन विशेषताओं ने किस तरह के सांकेतिक रूपों को विकसित किया है ।

11.4.1 संचार की नई प्रौद्योगिकी

सूचना प्रौद्योगिकी की तात्पर्य उस प्रौद्योगिकी से हैं जिसके द्वारा सूचना का उत्पादन, प्रसंस्करण, वितरण, पुनरात्पादन और परावर्तन संभव होता है । संचार प्रौद्योगिकी वह प्रौद्योगिकी है जिसका संबंध संचार की प्रक्रियाओं से हैं । संचार की प्रक्रियाओं में संचार उत्पादों का निर्माण, प्रसंस्करण, पुनरुत्थान और परावर्तन से है । संचार और सूचना प्रौद्योगिकी दोनों का आपस में गहरा संबंध है । मसलन, प्रिंटिंग प्रेस सूचना और संचार दोनों के लिए उपयोगी प्रौद्योगिकी है । रेडियो तरंगों की खोज ने जहां बिना तार के टेलिग्राम और टेलिफोन की शुरुआत की वही उसने रेडियो के रूप में एक ऐसा माध्यय भी दिया जिसके द्वारा श्रव्य आधारित जनसंचार का आरम्भ हुआ । प्रौद्योगिकी

का तात्पर्य यंत्रों से ही नहीं है । हालांकि आमतौर पर प्रौद्योगिकी का प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता है । किसी काम को संपन्न करने के लिए प्रयुक्त विशेष प्रविधि जिसे कि उक्त काम को निश्चित तौर पर संपन्न किया जा सकता है, प्रौद्योगिकी कहलाता है । (एवरेट्ट एम. रोजर्स, कम्युनिकेशन टेक्नोलोजी, दि फ्री प्रेस, न्यूयार्क, 1986, पृ. 1) उदाहरण के लिए, लिखने के लिए कागज, कलम और स्याही का प्रयोग करना एक विशेष प्रौद्योगिकी है तो बिना भाषा की जानकारी के भी नहीं लिखा जा सकता । इसलिए भाषा भी एक तरह की प्रौद्योगिकी ही है । भाषा में अक्षरों की विशेष ध्वनि, शब्दों का विशेष अर्थ और वाक्यों से निकलने वाले अर्थ से ही हम संदेश का संप्रेषण करने के लिए भाषा का प्रयोग करते है । इस प्रयोग के अपने नियम और अपनी पद्धतियां हैं और इनका विकास भी होता रहता है । प्रौद्योगिकी के ये दोनों रूप सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं ।

टेक्नोलोजी की भाषा में कागज, कलम और स्याही को हार्डवेयर और भाषा को सोफ्टवेयर कह सकते हैं । आमतौर पर कंप्यूटर के संदर्भ में इस शब्दावली का ज्यादा प्रयोग किया जाता है । कंप्यूटर प्रद्यौगिकी में प्रयुक्त होने वाले उपकरण जैसे, हार्ड डिस्क, मॉनीटर, मेडेम की बोर्ड और अन्य विद्युत और इलेक्ट्रानिक उपकरण हार्डवेयर के अंतर्गत आएंगे जबकि कंप्यूटर में प्रयुक्त सांकेतिक निर्देश जिनके आधार पर हम उपकरणों का प्रयोग करते हैं, सोफ्टवेयर कहलाता है । एक मायने में टेक्नोलोजी के दोनों रूप एक दूसरे से जुड़े होते हैं और इनमें पारस्परिक निर्भरता होती है । टेक्नोलोजी कोई ऐसी स्वायत्त वस्तु भी नहीं है जिसे हम शेष समाज से अलग कर सकें । (एवरेट्ट एम. रोजर्स, पृ. 1) समाज की संरचना के आरम्भ से ही प्रौद्योगिकी का विकास होता रहा है । यह मानव श्रम है जिसने मनुष्य को वानर से मनुष्य और आदिम मनुष्य से आधुनिक मनुष्य बनाया है ।

11.4.2 संचार माध्यमों और संदेशों का अंत: संबंध

प्रौद्योगिकी का असर संदेश पर भी पड़ता है । संदेश को हम जिस माध्यम से भेजते हैं उस माध्यम की तकनीकी विशेषताओं के दायरे में रहते हुए हमारा संदेश संप्रेषित होता है । जो संदेश हम शब्दों के माध्यम से भेजना चाहते हैं वह दृश्य माध्यम से उतना प्रभावशाली नहीं हो सकता । विचार और विश्लेषण प्रधान सामग्री हमेशा मुद्रित रूप में ही बेहतर का से संप्रेषित हो सकती है । कोई अत्यंत गंभीर लेख यदि हम रेडियो पर सुने या टेलीविजन पर देखें तो उसे ग्रहण करने में हमें उतनी आसानी नही होगी जितना कि उसे पढ़कर समझने में । क्या इस इकाई को यथावत रेडियों पर सुनना पसंद करेंगे या टीवी पर देखना जाहिर है कि इसके वे अंश जिसमें व्याख्या और विश्लेषण अधिक है आपको पढ़कर ही समझना होगा । एक बार पढ़ने पर भी समझ न आने पर दुबारा पढ़ने, तिबारा पढ़ने की सुविधा सामग्री के साथ जुड़ी हुई है । लेकिन यदि हम विभिन्न गायन शैली और संगीत वाद्यों के बारे में जानना चाहते हैं और इस बारे में सारी सामग्री हमें मुद्रित रूप में ही प्राप्त होती है तो हम सिर्फ पढ़कर उनका सही ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते । इसी तरह कई बातें हम दृश्य रूप में ही ज्यादा अच्छी तरह से ग्रहण करते हैं । कहानी और उपन्यास में मनुष्य मन के अंत:संघर्ष का चित्रण करने की जो सुविधा होती है उसे श्रव्य माध्यमों से व्यक्त करना संभव नहीं तो मुश्किल अवश्य होता है । लेकिन इस अंत:संघर्ष को ऐसे बिंबों के द्वारा दृश्य माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है, जिसका शब्द में चित्रण करना कई बार अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है ।

प्रत्येक माध्यम संदेशों को अपनी विशेषताओं के अनुसार समायोजित करता है । ऐसा करते हुए एक ही संदेश का कुछ हद तक स्वरूप बदल जाता है । इससे संदेश के मूल अर्थ में भी परिवर्तन आता है । मसलन, जब हम अखबार में पढ़ते हैं कि उड़ीसा के तूफान में दस हजार लोग मारे गए तो हमारे लिए उसका अर्थ वहीं नहीं होगा जो अर्थ हम उन्हीं में से दस-बीस लोगों की लाशों को टेलीविजन पर देखने पर होता है । लगभग नग्न, कुली और सड़ी हुई लाशें हादसे की भयावहता को हमारे सामने जिंदा कर देती है और उसका असर दस हजार लोगों की संख्या पढ़ने के असर से कहीं ज्यादा गहरा होता है । 'अपने मासूम बचे की लाश देखकर मां चीख-चीख कर रोने लगी ।' इसको पढ़ने से कहीं ज्यादा असर उसी दृश्य को देखने और मां के चीखने और बिलखने को सुनकर होता है ।

जनसंचार ही नहीं संचार के वैयक्तिक रूपों में भी इन विशेषताओं का असर देख सकते हैं । अमरीका में बसी अपनी बेटी से टेलीफोन पर बात करके मां को जो संतोष और खुशी मिलती है वह उसके हाथ की चिट्ठी भी नहीं दे सकती । यह आकस्मिक नहीं है कि टेलीफोन के विस्तार ने चिट्ठियों के आदान-प्रदान पर असर डाला है । कहने का तात्पर्य यह है कि संचार की विधि का निर्धारण उसकी माध्यमगत विशेषताओं से होता है और प्रत्येक माध्यम में ऐसा कुछ है जो दूसरे में नहीं होता । यही कारण है कि मुद्रण से रेडियो और रेडियो से टेलीविजन अधिक अग्रगामी प्रौद्योगिकी पर आधारित होने के बावजूद इनमें से कोई भी माध्यम दूसरे को अप्रासंगिक नहीं बना सका है । यहां तक कि जिनके साथ हमारा आत्मीय संबंध होता है उन्हें हम हाथ से लिखकर पत्र भेजना पसंद करते हैं, न कि टंकित या मुद्रित करके । संचार माध्यमों का संदेशों के साथ संबंधों की इस प्रकृति को समझने की प्रक्रिया में ही हम इस बात को समझ पाते हैं कि संदेश किस तरह अपना अर्थ बदल देते है । यह बदला हुआ अर्थ उन सांकेतिक रूपों में निर्धारित होता है जिन्हें संदेश के संप्रेषण के लिए चुना जाता है ।

11.4.3 सांकेतिक रूपों के माध्यम से संचार

संचार माध्यमों में संदेश के माध्यम से ही संप्रेषित होते हैं, यह हम आपको बता चुके हैं । संदेश पहले संकेत में बदलते हैं और फिर उन संकेतों को वापस विसंकेतित किया जाता है । यह विसंकेतीकरण दो स्तरों पर होता है । एक तकनीकी स्तर पर और दूसरा भाषा के स्तर पर । मसलन, रेडियो या टेलीविजन पर हम जिन गानों को सुनते या देखते हैं, उनका संप्रेषण एक स्थान से दूसरे स्थान तक विद्युत तरंगों के रूप में होता है । वह गीत जिसे हम अपने रेडियो सेट पर सुनते हैं उसने रेडियो स्टेशन से रेडियो सेट तक की यात्रा विद्युत तरंग रूप में ही की होती है । पहले वह गीत यंत्रों के मदद से विद्युत तरंगों में बदलता है और वायुमंडल में फैल जाता है, रेडियो सेट उन विद्युत तरंगों को पकड़ता है और उसे दुबारा गीत में बदल देता है । गीत का विद्युत तरंगों में बदलना उसकी संकेतीकरण की ही प्रक्रिया है और गीत का यह संकेतीकृत रूप ही विसंकेतीकृत होकर हमें रेडियो पर सुनाई देता है । यही बात टेलीविजन पर लागू होती है ।

लेकिन संकेतीकरण का दूसरा रूप माध्यमों में संदेशों को प्रसारित करने के लिए अंतर्वस्तु की प्रस्तुति में होने वाले बदलाव में दिखाई देता है । मसलन, टीवी पर हम दृश्य को फ्रेम में नहीं देखते। जबकि वास्तविकता में हम चीजों को ऐसे किसी फ्रेम में नहीं देखते । इसी तरह हम सिर्फ उन्हीं चीजों को देखते हैं जो हमें दिखाई जाती है । यानी कि दृश्य माध्यम में हमेशा हम उन्हीं दृश्य बिंबों को देखते हैं जिन्हें दिखाने के लिए चुना जाता है । ये बिंब वस्तुत प्रतिनिधिक होते है और उन्हें हम हमेशा

वास्तविकता के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकारते हैं । उड़ीसा के तूफान का ही उदाहरण ले । लाशों का जो दृश्य हमारे सामने प्रस्तुत हुआ उसे हमने तूफान की विनाश लीला के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया । यह दृश्य एक अर्थ में पूरे तूफान का प्रतिनिधि चित्र बनकर ही वहां उपस्थित हुआ । यह प्रतिनिधिकता और प्रतीकात्मकता ही संचार माध्यमों में संभव होती है । संपूर्ण यथार्थ अपनी पूर्णता में कभी भी संचार माध्यम में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता । लेकिन इसका अर्थ यह है कि पूर्णता का जो अंश इस प्रतिनिधिकता के बाहर रह जाता है वह संप्रेषित होने से भी छूट जाता है ।

यह बात सिर्फ दृश्य माध्यमों पर ही लागू नहीं होती । उडीसा का ही उदाहरण लें । समाचार पत्र में पढ़ा हुआ यह समाचार कि वहां तूफान से दस हजार लोग मारे गए । यह दस हजार की संख्या मारे गए लोगों के विशाल समूह का ही प्रतिनिधित्व करता है । दस हजार से हमें यह ज्ञात हो जाता है कि मरने वाले लोग कितने थे । लेकिन यह संख्या हमें एक सीमा के बाद घटना की भयावहता को महसूस करने से रोकती भी है । तूफान में मरे व्यक्तियों का यह समूह सिर्फ संख्या नहीं है । वे जीते जागते आदमी थे । कोई किसी का पिता था, कोई मां थी, कोई बेटा था और कोई बेटी । हरेक का मरना उस परिवार के लिए भी वह हादसा था । यदि इस तूफान में सिर्फ दस हजार नहीं दस लोग भी मारे जाते तो मारे गए व्यक्तियों के लिए तो वह उतना ही भयानक होता जितना कि आज वह दस हजार लोगों के परिवारों के लिए हुआ है । लोगों की पीडा के इस पहलू को प्रतिनिधिकता का यह सांकेतिक रूप अपने में समाहित करने में कामयाब नहीं होता । इसी प्रकार जो लोग इस तूफान में मरे तो नहीं लेकिन जिनका सब कुछ बर्बाद हो गया उनकी पीड़ा का एहसास भी इस संख्या से बाहर रह जाता है । इसके लिए यह जरूरी हो जाता है कि प्रतिनिधिकता के ऐसे कई सांकेतिक रूप चुने जाएं और उनके संयोजन के दारा संपूर्ण वास्तविकता को प्रस्तुत किया जाए ।

सांकेतिक रूप में ही संपूर्ण को प्रस्तुत करने की माध्यमों की अनिवार्यता से ही यह जरूरी हो जाता है कि प्रस्तोता पहले यह तय करे कि कौन-से सांकेतिक रूप संपूर्ण के सर्वाधिक प्रातिनिधिक रूप होंगे । प्रतिनिधिक रूप की यह खोज कई बातों पर निर्भर करती है । एक, प्रस्तोता संपूर्ण को समझने में किस हद तक सफल हुआ है । दो, माध्यम की उसकी समझ और उसके प्रयोग की उसकी क्षमता कितनी है । तीन सम्पूर्ण को सांकेतिक रूप में ढालने में वह कितना सक्षम है, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वह सांकेतिक रूप वापस ग्रहीता द्वारा संपूर्ण में बदला जाना है । संचार की विधि एक ही संपूर्ण के कई प्रातिनिधिक रूपों,की संभावना उत्पन्न करती है । इसी पूरी प्रक्रिया में प्रस्तोता की विश्व दृष्टि की अहम् भूमिका होती है । उसकी यह विश्व दृष्टि न सिर्फ संपूर्ण को समझने में बल्कि उसके लिए सांकेतिक रूपों को चुनने में भी भूमिका अदा करती है । यह जरूरी नहीं कि प्रस्तोता का मानस इसके प्रति सजग हो, लेकिन किसी भी स्थिति में संचार के लिए संदेशों के सांकेतिक रूपों के निर्माण की प्रक्रिया दृष्टि निरपेक्ष नहीं होती ।

सांकेतिक रूप प्रतिनिधिक होने के कारण उसकी ग्रहण क्षमता में भी विविधता आ जाती है। जब सांकेतिक रूप संपूर्ण को सांकेतिक रूप में ही प्रस्तुत करता है तो यह बहुत कुछ ग्रहीता पर निर्भर करने लगता है कि वह संपूर्ण के कितने और किन अंशों को उसका प्रतिनिधि माने । इसी से एक ही संदेश की भिन्न-भिन्न व्याख्या सामने आती है । और प्रत्येक की व्याख्या का यह दावा होता है कि वही संपूर्ण की आधिकारिक व्याख्या है । इस व्याख्या में स्वयं ग्रहीता की माध्यम की समझ, सांकेतिक रूपों को विसंकेतीकरण करने की उसकी क्षमता और उसमें प्रस्तुत संदेशों के समझने में उसकी विश्व

दृष्टि की भूमिका होती है । इसी वजह से अलग-अलग व्याख्याओं का जन्म होता है । संचार माध्यमों की विधि को समझने में इन बातों का बहुत महत्व है । वस्तुतः ये बातें ही विधि का निर्माण करते हैं ।

11.5 संचार की प्रकृति और विधि का अंत:संबंध

संचार की प्रकृति को समझने के लिए हमने संचार की प्रक्रिया और उसके विकास पर विचार किया था । आज जब संचार की प्रक्रिया संचार प्रौद्योगिकी पर बहुत कुछ निर्भर है । इसके बावजूद इस बात को समझना जरूरी है कि यह प्रौद्योगिकी मनुष्य से मनुष्य के बीच संचार के लिए ही विकसित हुई है । मनुष्य-मनुष्य के बीच लिए आपस में संवाद स्थापित करना जरूरी था और वह ऐसा करने में कामयाब हो सका । इस दिशा में भाषा की खोज संचार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । भाषा वस्तुत: वस्तुओं, स्थितियों, विचारों और भावों को व्यक्त करने की सांकेतिक प्रणाली है । भाषा से पहले और भाषा के बाद जो भी संचार माध्यम विकसित हुए हैं वे सभी वास्तविक संदेशों के सांकेतिक रूप में ही व्यक्त करते हैं । लेकिन इन सांकेतिक रूपों को समझने और उन्हें वास्तविक संदेश में रूपांतरित करने की क्षमता मनुष्य के मस्तिष्क में होती है ।

मनुष्य का मस्तिष्क एक तरह का विकसित कंप्यूटर है जो सूचनाओं को सांकेतिक रूप में ग्रहण करता है, उन्हें भंडारित करता है, उनकी प्रोसेसिंग करता है और उनको संदेश में रूपांतरित करता है ।यही नहीं मस्तिष्क इन सांकेतिक रूपों को भविष्य के लिए भी स्मृति के रूप में भंडारित किए रहता है ताकी वक्त जरूरत उनको अन्य सांकेतिक रूपों को समझने या उनका प्रत्युक्तर देने के लिए सक्रिय कर सके । कह सकते है की संचार की जो प्रक्रिया बाहर घटित होती है वह मस्तिष्क की इस जटिल प्रक्रिया के बिना व्यर्थ है । मस्तिष्क की क्षमता ने ही व्यक्ति को प्रेरित किया है वह संचार के ऐसे साधनों को विकसित करे जिससे कि वह बाहरी दुनिया में अपनी गतिविधियों को ज्यादा सक्षम रूप में अंजाम दे सके ।

संचार के सभी साधन मनुष्य की भौतिक और बौद्धिक क्षमताओं का विस्तार है । भाषा और गणित से लेकर कंप्यूटर तक की मनुष्य की यात्रा मानवीय गतिविधियों को अधिक व्यापक और तीव्र गति से अंजाम देने के लिए ही खोजे गए हैं । इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि संचार माध्यमों से संप्रेषित होने वाला संदेश अपने सबसे प्रामाणिक रूप में ग्रहीता तक पहुंचे । जाहिर है कि इसके लिए जिन माध्यमों और विधियों की खोज हुई उन्होंने यदि संप्रेषण को अधिक सक्षम बनाया तो नई तरह की चुनौतियां भी पैदा की । संचार का प्रत्येक नया माध्यम संचार की प्रकृति को अपने-अपने ढंग से प्रभावित करता है । संचार की मूल प्रकृति तो सब जगह एक ही रहती है लेकिन उसकी आंतरिक और बाहरी संरचना में ऐसे भेद जरूर उत्पन्न हो जाते हैं जिसके कारण संचार की प्रक्रिया प्रभावित होती है । मसलन, हिन्दी में फल शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है । यदि संदर्भ बदल जाएगा तो फल का अर्थ बदल जाएगा । अब फल शब्द अपने अर्थ के लिए पूरी तरह संदर्भ पर निर्भर करेगा । इसी प्रकार आंसू दुख व्यक्त करने का माध्यम है । लेकिन जब किसी व्यक्ति को अप्रत्याशित सफलता मिलती है तो भी वह रो पडता है । उसका रोना किस दुख का प्रतीक नहीं है । यहां खुशी को व्यक्त करने के लिए आंसू की जगह हंसी का प्रयोग नहीं किया जा सकता । इसी प्रकार 'मैं तुमसे प्यार करता हूं कथन इस बात का प्रमाण नहीं है कि कहने वाला व्यक्ति अपने मन की सच्ची भावनाओं को व्यक्त कर रहा है । जाहिर है कि इस वाक्य का जो भी अर्थ संप्रेषित होगा वह इन गतिविधियों के संदर्भ में

ही होगा जो उक्त दो व्यक्तियों के बीच घटित होता है । अब इन गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करने वाले सांकेतिक रूपों का क्रमबद्ध संयोजन ही उक्त कथन के अर्थ को निर्धारित करेगा ।

इस प्रकार सांकेतिक रूप ही संचार की प्रकृति और विधि को निर्धारित करने के माध्यम है। इन सांकेतिक रूपों के संचार की प्रौद्योगिकी न सिर्फ वहन करती है, उनको अपनी विशिष्टता के अनुसार निश्चित आकार भी देती है और उसे वापस संदेश में भी बदलती है । संदेश का संकेत में रूपांतरण और संकेत का संदेश में रूपांतरण की प्रक्रियाएं एक दूसरे पर आश्रित होते हुए भी संदेश अपना रूप बदल देता है । जिस हद तक वह रूप बदलता है उस हद तक उसका अर्थ बदल जाता है । इस प्रकार एक ही संदेश चार स्तर पर यात्रा करता है और हर स्तर पर उसका रूप कुछ न कुछ परिवर्तित होता है । सबसे पहले वह रचनाकार के मस्तिष्क में उत्पन्न होता है जो इस संदेश को संप्रेषित करना चाहता है । यह संदेश का मूल रूप है । इस मूल रूप को रचनाकार उस सांकेतिक रूप में बदलता है जिसके द्वारा वह संचार प्रौद्योगिकी से संप्रेषित होते हुए वह तकनीकी संकेतों में बदल जाता है । मसलन, विद्युत तरंगों के रूप में । जिस ग्रहीत तक पहुंच कर फिर उसी सांकेतिक रूपों बदल दिया जाता है जिस रूप में रचनाकार ने उसे निर्मित किया था । यह संदेश का तीसरा रूप है । यह पहले दोनों रूपों से कुछ भिन्न होता है । काफी हद तक संदेश का तीसरा रूप दूसरे रूप की प्रति लिपि होना चाहिए। लेकिन इन दोनों रूपों में कुछ हद तक फर्क आ जाता है । यह फर्क प्रौद्योगिकी की जगह से आता है । इस तीसरे रूप को ग्रहीत ग्रहण करता है और अपने मस्तिष्क में वह उसको विसंकेतीकृत करके संदेश में रूपांतरित करता है । संदेश का यह चौथा रूप है । स्पष्ट ही संदेश का पहला रूप ही चौथे रूप में व्यक्त होना चाहिए । लेकिन ऐसा होता नहीं । यह सारी प्रक्रिया जो आंतरिक और बाहरी दोनों स्तरों पर घटित होती है, संदेश को कुछ हद तक बदल देती है और रूपांतरित संदेश अर्थ को भी भिन्न रूप में पहुंचता है ।

तब यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि संदेश अपने मूल रूप में संप्रेषित हो ही नहीं सकता तो क्या संचार की पूरी प्रक्रिया मिथ्या प्रक्रिया है? इसका उत्तर है, नहीं । जैसा कि हम बता चुके हैं, संदेश का संप्रेषण संकेतों के रूप में ही होगा, चाहे वह रूबरु संचार ही क्यों न हो, इसलिए संचार की यह प्रकृति उसकी प्रक्रिया में अंतग्रंथित है और उससे बचाव सिर्फ एक स्थिति में संभव है जब संचार ही न किया जाए । दूसरी बात यह है कि संचार की विधियों की सीमा जो उसकी प्रकृति से निर्धारित होती है, उससे सभी लोग जो इसमें किसी-न-किसी रूप में शामिल होते हैं, सजग होते हैं । मनुष्य की सोचने, समझने और ग्रहण करने की क्षमताओं ने संचार की प्रक्रियों की सीमाओं के प्रति सावधान बनाया है । यही वजह है कि संचार के माध्यम मनुष्य के पारस्परिक संवाद के लिए सकारात्मक भूमिका निभाते रहे हैं । यदि कुछ नकारात्मक पहलू हैं भी तो वह संचार की प्रकृति और विधि में निहित है, वह इसके इस्तेमाल में है जिसका नियमन और निर्धारण मनुष्य ही करता है ।

बोध प्रश्न-3

1. संदेश की अभिव्यक्ति में कौन-कौन सी बातें प्रमुख भूमिका निभाती है? केवल उल्लेख कीजिए।
2. सांकेतिक रूपों के ऐसे दो उदाहरण दीजिए जिन्हें मृत्यु के प्रतीक के रूप में दृश्य माध्यमों में आमतौर पर दिखाया जाता है ।
3. संदेश के चार स्तर कौन-कौन से हैं?
4. मनुष्य का मतिष्क एक तरह का विकसित कंप्यूटर है । 'विवेचना करें ।'

11.6 सारांश

संकट की प्रकृति का अर्थ है, संचार का स्वभाव । संचार के स्वभाव का मतलब है उसके वे गुण जिनसे संचार की पहचान होती है संचार की पहचान होती है । संचार की जरूरत मनुष्य को आरम्भ से रही है । इसके लिए कुछ बुनियादी बातें जरूरी है । संचार की प्रक्रिया तब तक संभव नहीं है जब तक कि संचार के लिए कोई संदेश न हो, संदेश को भेजने वाला न हो संदेश को पाने वाला न हो और संदेश को भेजने का माध्यम न हो । संचार कि जरूरत मनुष्य के सामाजिक होने की पहचान है । यह मनुष्यों के बीच पारस्परिक संवाद और संबंध का माध्यम है । इसलिए संचार कि प्रक्रिया में मनुष्य कि भौतिक और बौद्धिक क्षमताओं का गहरा हाथ होता है संचार इसके बिना न तो संभव है और न ही उसकी कोई उपयोगिता है । संचार की प्रक्रिया ले लिए जिन माध्यमों की जरूरत होती है वे भी संचार की प्रकृति और विधि को प्रभावित करते है इनमें उनकी तकनीकी विशेषताओं की भूमिका भी होती है। संचार प्रौद्योगिकी के विकास का अध्ययन इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । मुद्रित, श्रव्य, और दृश्य माध्यमों में उनकी तकनीकी विशेषताओं के साथ-साथ शब्दों, ध्वनियों और दृश्यों की शक्ति और सीमा को भी समझना जरूरी होता है । संचार हमेशा सांकेतिक रूपों में होता है । सांकेतिक रूप यथार्थ के प्रतिनिधिक रूप होते है । ये प्रतिनिधिक रूप संदेश के अर्थ को प्रभावित करते है। संचार की प्रकृति और विधि को हम उक्त बातों के संदर्भ में समझ सकते है और इस इकाई में हम इन सभी बातों की चर्चा कर चुके है ।

11.7 शब्दावली

संकेत-संकेत के लिए संचार के क्षेत्र में अंग्रेजी शब्द 'कोड' शब्द का प्रचलन है । प्रत्येक शब्द किसी न किसी वस्तु, स्थिति, भाव या विचार का संकेत होता है । जब कोई कहता है, शेर । इस शब्द के कहने से हम समझ जाते है कि यह शेर नामक जानवर का उल्लेख कर रहा है । शब्द का अर्थ समझना उसके विसंकेतीकरण करना है । संचार में संकेतीकरण और विसंकेतीकरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है ।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति -संचार के लिए जिन सांकेतिक रूपों का प्रयोग किया जाता है, उसका एक सामाजिक इतिहास होता है । हम शब्दों, ध्वनियों और दृश्यों को सिर्फ इस बात से नहीं पहचानते कि वे किस प्रतिनिधित्व करते हैं बल्कि इस बात से भी कि उसके प्रतिनिधित्व का इतिहास क्या है। अंग्रेजी शब्द 'यु' के लिए हिन्दी में तुम, आप और तू तीन प्रयोग होते है । इन प्रयोगों के पीछे इन शब्दों से जुड़ी सांस्कृतिक परंपरा है जिसको ध्यान में रखकर ही हम यह निर्णय लेते हैं कि कौन से शब्द का इस्तेमाल कब करना चाहिए ।

11.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. संचार की प्रकृति को निर्धारित करने वाली प्रमुख बातों का उल्लेख कीजिए, जिनका संबंध सभी तरह के संचार माध्यमों से हो ।
2. श्रव्य माध्यम की ऐसी कौन-सी विशेषताएं हैं जिनका अभाव मुद्रित माध्यमों में साफ दिखाई देता है । क्या इन विशेषताओं की पूर्ति की जा सकती है? कारण भी बताइए ।
3. संचार की विधि से क्या तात्पर्य है और उसके विभिन्न पक्षों का उल्लेख कीजिए ।

4. भारतीय नारी की परंपरागत तस्वीर पेश करने के लिए भारतीय फिल्में किन सांकेतिक रूपों का इस्तेमाल करती है? आप एक सूची बनाइए। यदि आपको एक स्वतंत्र, स्वावलंबी और स्वाभिमानी स्त्री का चित्र निर्मित करना हो तो आप किन सांकेतिक रूपों का इस्तेमाल करेंगे?
5. किसी रेडियो नाटक को आधार बनाकर बताइए कि उसमें ऐसी कौन सी विशेषताएं है जो सिनेमा या टेलीविजन पर प्रस्तुत कथा फिल्मों में नहीं होती।
6. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए (किन्हीं दो पर)

   (अ) संचार की प्रकृति और विधि का अंत संबंध

   (ब) संचार की नई प्रौद्योगिकी

   (स) संचार से जनसंचार तक

   (द) सांकेतिक रूपों के माध्यम से संचार

इकाई 12 संचार के प्रकार, व्यक्ति और जनसंचार

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 संचार के प्रकार

12.2.1 संप्रेषण की प्रकृति के आधार पर

12.2.2 माध्यम के आधार पर

12.2.3 मानव संचार के आधार पर

12.2.4 उद्देश्य के आधार पर

12.3 व्यक्ति और जनसंचार

12.3.1 जनसंचार का विकास और मनुष्य

12.3.2 जनसंचार और समाज

12.3.3 जनसंचार और व्यक्ति

12.4 सारांश

12.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.0 उद्देश्य

'जनसंचार के सिद्धांत पाठ्क्रम की यह इकाई 12 है । इससे पहले की इकाई में आपने संचार की प्रकृति और विधि का अध्ययन किया था । हमने इस बात पर विचार किया था कि संचार की प्रकृति किस तरह की होती है । वे कौन सी बातें है जो संचार की प्रकृति को प्रभावित करती है और संचार किस विधि से संप्रेषित होता है । इस इकाई में हम संचार के प्रकार और व्यक्ति से संचार के संबंध का अध्ययन करेंगे । इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- संचार के विभिन्न प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- संचार और व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों को समझ सकेंगे ।
- जनसंचार और समाज एक दूसरे से किस तरह जुड़े हुए इस तथ्य को आसानी से जान पाएंगे ।
- मनुष्य के विकास के साथ ही जनसंचार का विकास होता है । इस तथ्य से परिचित हो सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

जनसंचार के सिद्धांत का अध्ययन करते हुए हम संचार से संबंधित कई पहलुओं का अध्ययन करते हैं । इनमें से दो पहलू प्रकृति और विधि के बारे में आप अन्य इकाई में पद चुके है । जनसंचार के बारे में कोई भी अध्ययन तब तक अधूरा है जब तक कि आप उसकी प्रकृति को न समझें । इसी प्रकार यह भी जरूरी है कि हम संचार की विधि, क्या है इसको भी अच्छी तरह समझ लें । हमने पूर्व की इकाई में बताया था कि संचार की प्रकृति का अर्थ है, संचार का स्वभाव । संचार के स्वभाव का मतलब है उसके वे गुण जिनसे संचार की पहचान होती है । संचार की जरूरत मनुष्य को आरंभ से रही है । इसके लिए कुछ बुनियादी बातें जरूरी है । संचार की प्रक्रिया तब तक संभव नहीं है जब तक

कि संचार के लिए कोई संदेश न हो, संदेश को भेजने वाला न हो, संदेश को पाने वाला न हो और संदेश को भेजने का माध्यम न हो । संचार की जरूरत मनुष्य के सामाजिक होने की पहचान है । यह मनुष्यों के बीच पारस्परिक संवाद और संबंध का माध्यम है । इसलिए संचार की प्रक्रिया में मनुष्य की भौतिक और बौद्धिक क्षमताओं का गहरा हाथ होता है । संचार इसके बिना न तो संभव है न उसकी कोई उपयोगिता है । संचार की प्रक्रिया के लिए जिन माध्यमों की जरूरत होती है वे भी संचार की प्रकृति और विधि को प्रभावित करते हैं । इनमें उनकी तकनीकी विशेषताओं की भूमिका भी होती है । 'संचार प्रौद्योगिकी का विकास अध्ययन' इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । मुद्रित, श्रव्य और दृश्य माध्यमों में उनकी तकनीकी विशेषताओं के साथ-साथ शब्दों, ध्वनियों और दृश्यों की शक्ति और सीमा को भी समझना जरूरी होता है । संचार हमेशा सांकेतिक रूपों में होता है । सांकेतिक रूप यथार्थ के प्रतिनिधिक रूप होते हैं । ये प्रतिनिधिक रूप संदेश के अर्थ को प्रभावित करते हैं ।

संचार की प्रकृति और विधि से संबंधित इन बातों के बाद अब हम इस इकाई में हम संचार के प्रकार और संचार और व्यक्ति के संबंधों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे । संचार के प्रकार का निर्धारण कई आधारों पर किया जा सकता है । आमतौर पर संचार दो तरह के होते हैं । एक तरह का संचार वह होता है जो एकतरफा होता है जैसे टेलीविजन, रेडियो सिनेमा, अखबार आदि ऐसे माध्यम है जो आमतौर पर एकतरफा माध्यम है जबकि टेलीफोन, ई-मेल, फैक्स आदि ऐसे माध्यम हैं जिन्हें हम दुतरफा माध्यम कह सकते हैं । इस प्रकार विभाजन का एक आधार यह हो सकता है कि वह किसी रूप में हमें संदेश को संप्रेषित करता है । मुद्रित सामग्री के रूप में, ध्वनि के रूप में या दृश्य और ध्वनि दोनों रूपों में । इसी से संचार की प्रौद्योगिकी का भी निर्धारण होता है । संचार के प्रकार का तीसरा आधार यह हो सकता है कि उसमें किस तरह का मानव संचार व्यक्त हो रहा है । अगर हम मानव संचार के अब तक के विकास पर रोशनी डालें तो हम समझ सकते हैं कि मानव संचार में लगातार विकास होता है और उसमें ऐसे परिवर्तन होते रहे हैं जिन्हें हम अलग से पहचान सकते हैं । संचार के प्रकार का चौथा आधार यह हो सकता है कि वह किन उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त हो रहा है । इस प्रकार संचार के प्रकार के कई आधार हो सकते हैं । हम यहां इन आधारों की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

संचार मनुष्य के लिए है और मानव सभ्यता का आज तक का इतिहास मनुष्य की बौद्धिक और शारीरिक क्षमता का परिणाम है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है लेकिन वह अपने में एक स्वतंत्र इकाई भी है । संचार का मनुष्य के साथ संबंध दोनों रूपों में होता है - व्यक्ति के रूप में भी और सामाजिक रूप में भी । इस इकाई में हम इन दोनों पक्षों के बारे में और उनके पारस्परिक प्रभावों के बारे में विचार करेंगे ।

12.2 संचार के प्रकार

संचार के बारे में अध्ययन करते हुए आपने यह जरूर जानकारी हासिल की होगी कि संचार की आवश्यकता मनुष्य को इसलिए हुई क्योंकि वह अपनी ही तरह के दूसरे लोगों से संवाद करना चाहता था । भाषा की खोज इसी प्रक्रिया में हुई । लेकिन मनुष्य की गतिविधियां जैसे-जैसे बढ़ती गई उसको अंजाम देने के लिए उसके पास साधन भी बढ़ते गए । ये साधन उत्पादन से संबंधित थे, परिवहन से संबंधित थे, रहन-सहन से संबंधित थे । कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन के हर क्षेत्र से संबंधित थे । मानव गतिविधियों के विस्तार ने संचार की जरूरत को बढ़ा दिया । इसी क्रम में कई तरह के

संचार के साधन सामने आए । मानव गतिविधियों में विस्तार का संबंध संचार के विकास से है । एक तो मनुष्य का एक स्थान से दूसरे स्थान आना-जाना । दूसरा, वस्तुओं का एक स्थान से दूसरे स्थान भेजा जाना । जब व्यक्ति एक जगह से दूसरी जगह जाता है और अपने घर लौटना उसके लिए जल्दी संभव नहीं होता तो उसके लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह अपने घर के लोगों से और घर के लोग उससे संपर्क कर सकें ताकि दोनों को एक दूसरे की कुशलक्षेम की जानकारी मिलती रहे । इसी प्रकार जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर सामान भेजा जाता है तो उससे व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार होता है । इन गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि संचार के ऐसे साधन उपलब्ध हों जो उनमें मदद करे । व्यावसायिक गतिविधियों के विस्तार का संबंध राजनीति से भी होता है और संचार के साधनों के विकास में राजनीतिक गतिविधियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

मनुष्य की सांस्कृतिक गतिविधियों का संबंध भी संचार से बहुत गहरा है । शिक्षा, मनोरंजन और रचनात्मक गतिविधियों में संचार के साधनों के उपयोग से हम सभी परिचित हैं । आज प्रिंट मीडिया ही नहीं रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, इंटरनेट आदि का भी शिक्षा प्रदान करने के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होता है । इसी प्रकार मनोरंजन के साधन के रूप में सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन आदि की भूमिका से कौन अपरिचित है । कहने का तात्पर्य यह है कि संचार के साधनों के जो विविध रूप आज उपलब्ध हैं वे उन नई जरूरतों के परिणाम हैं जिन्हें इस नए युग ने पैदा किया है । लेकिन संचार के विविध प्रकार इसीलिए संभव हो सके क्योंकि विज्ञान और तकनीकी के विकास ने इन्हें संभव बनाया ।

12.2.1 संप्रेषण की प्रकृति के आधार पर

संचार के प्रकार का निर्धारण सबसे पहले हम संप्रेषण की प्रकृति के आधार पर कर सकते हैं। संप्रेषण की प्रकृति से तात्पर्य यह है कि वह किन के बीच और किस तरह से किया जा रहा है । हमने 'संचार-जनसंचार : अवधारणा एवं स्वरूप ' इकाई में संप्रेषण या संचार की चार तरह की प्रकृति का उल्लेख किया था । **अंतवैयक्तिक संचार, अंतर वैयक्तिक संचार, लघु संचार और जनसंचार ।** अंतवैयक्तिक संचार (Intrapersonal Communication) उस संचार को कहते हैं जो बाहरी संचार से पूर्व मनुष्य अपने आप से करता है । जब वह किसी तरह की बात दूसरे से कहता है या वह कुछ करना चाहता है तो उससे पहले उसके मस्तिष्क में एक तरह की संचार प्रक्रिया चलती है । वह अपने आप से पूछता है कि उसे यह काम करना चाहिए या नहीं और क्यों । इसी तरह से काम को कैसे अंजाम देना है इसके बारे में भी वह तय करता है । यह सब काम अंतवैयक्तिक संचार कहलाता है । लेकिन जैसे ही वह दूसरे व्यक्ति के साथ संवाद स्थापित करता है और उस तक अपना संदेश पहुंचता है और उसके संदेश को प्राप्त कर वह वापस अपना जबाव उस तक पहुंचाता है, तो उसे हम अंतर वैयक्तिक संचार (Intra personal Communication) कहते हैं । लेकिन सचार जब दो से ज्यादा लोगों के बीच हो, मसलन, ऐसी संगोष्ठी जिसमें दस-बीस या तीस तक लोग हों और वे किसी विषय पर बातचीत कर रहे हों तो इस तरह का संचार लघु समूह संचार कहलाएगा । इस तरह के संचार में आमतौर पर एक समय में एक व्यक्ति ही बोलता है और दूसरे लोग सुनते हैं । एक के चुप रहने पर दूसरे व्यक्ति बोलते हैं । लेकिन जब संचार की प्रक्रिया में सैकड़ों, हजारों लाखों या करोड़ों लोग शामिल हों तो उसे हम जनसंचार कहेंगे । आमतौर पर संचार का यह प्रकार एक तरफा होता है । इसमें संदेश संप्रेषित

करने वाला संदेश प्राप्त करने वाले के व्यक्तिगत संपर्क में नहीं आता और इसी कारण इसे निवैयक्तिक संचार (Impersonal Communication) भी कहते हैं । इस प्रकार संप्रेषण की प्रकृति के आधार पर हम संचार का विभाजन कर सकते हैं ।

संचार के इन चारों प्रकारों को हम दो भागों में बांट सकते हैं । **वैयक्तिक संचार** और **निवैयक्तिक** संचार । वैयक्तिक संचार का अर्थ है वह संचार जिसमें संचार में शामिल लोगों का एक दूसरे के साथ निजी संवाद और संपर्क होता है । मसलन, टेलीफोन पर जब हम अपने भाई या दोस्त से बात करते हैं तो वह वैयक्तिक संचार के अंतर्गत ही आएगा क्योंकि यहां दोनों व्यक्ति एक दूसरे से व्यक्तिगत रूप में परिचित हैं । लेकिन जब हम रेडियो से समाचार सुनते हैं या टेलीविजन पर धारावाहिक देखते हैं या सिनेमाघर में फिल्म देखते हैं तो यह संचार निवैयक्तिक होता है । क्योंकि यहां संदेश का प्रेषक यह नहीं जानता कि उसका संदेश किन तक पहुंचा रहा है और वे कौन लोग हैं ।सभी तरह के जनसंचार माध्यम निवैयक्तिक संचार के प्रकार के अंतर्गत आते । लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि इनमें व्यक्तिगत संपर्क की संभावना नहीं होती । अब रेडियो और टेलीविजन पर ऐसे कार्यक्रम आने लगे हैं जिनमें लोग कार्यक्रम के बीच फोन करके संदेश का प्रेषण करने वाले से संपर्क कर सकते हैं । इस सुविधा के बावजूद हम इन्हें निवैयक्तिक माध्यम ही मानेंगे क्योंकि यहां वैयक्तिक संपर्क अत्यंत सीमित होता है । और साथ ही दोनों पक्षों में वैसी निकटता नहीं होती जो वैयक्तिक संचार में होती

12.2.2 माध्यम के आधार पर

संचार के प्रकार का निर्धारण का दूसरा आधार माध्यम हो सकता है । माध्यम से तात्पर्य यह है कि संचार को किस रूप में भेजा जा रहा है । लिखित रूप में, आवाज के रूप में या दृश्य के रूप में । संचार के ये तीनों रूप प्राक् आधुनिक युग में भी मौजूद थे लेकिन आधुनिक युग में इनके ऐसे रूप सामने आए जिसके कारण संचार के साधन व्यापक जन तक एक साथ संप्रेषित हो सके । लिपि के इस्तेमाल के साथ लिखकर संदेश भेजने का चलन आरंभ हो गया था । इसी प्रकार चित्रों का प्रयोग भी संदेश को भेजने और आगे के युगों के लोगों के लिए सुरक्षित रखने के लिए किया जाने लगा था। यह एक माने में दृश्य माध्यम का ही प्राक् रूप था और बातचीत के जरिए संदेश का आदान- प्रदान तो इन दोनों से पहले से प्रचलित है जिसे संचार का श्रव्य रूप कहा जा सकता है । लेकिन आज जब हम मुद्रित, श्रव्य और दृश्य की बात करते हैं तो हम उन नए माध्यमों की बात कर रहे हैं जो आधुनिक युग में अन्वेषित हुए । हम तीनों माध्यमों की चर्चा संक्षेप में यहां करेंगे ।

मुद्रित माध्यम

मुद्रित माध्यम की शुरुआत इसलिए मुमकिन हो सकी क्योंकि छापाखाने के यंत्र की खोज कर ली गई थी । छापने की शुरूआत सबसे पहले ग्यारहवीं सदी में चीन में हुई थी लेकिन व्यापक पैमाने पर छपाई का काम उन्नीसवीं सदी में शुरु हुआ । मुद्रण की इस नई प्रणाली का लाभ यह था कि लिखी हुई सामग्री की कम समय में कई गुना अधिक प्रतियां बनाई जा सकती थी और उन्हें लंबे समय के लिए सुरक्षित रखा जा सकता था । इसमें कम मानव श्रम व्यय करके अधिक उत्पाद प्राप्त किया जा सकता था । प्रिंटिंग प्रेस के आगमन ने ही यह संभव बनाया कि समाचारपत्रों का प्रकाशन आरंभ हो। लेकिन इसके साथ दो और चीजों ने भी समाचारपत्र के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाई । एक तो परिवहन के तेज साधनों का आगमन और दूसरे तार द्वारा एक स्थान के समाचारों को दूसरे स्थान अधिक तीव्रता और कम समय में भेज सकना । यही वजह है कि समाचारपत्रों को दूर-दूर के समाचार

तेजी से प्राप्त होने लगे । साथ ही, मुद्रित समाचारपत्रों को परिवहन के तेज साधनों (रेलगाड़ी, मोटरकार, भाप इंजन से चलने वाले जहाज आदि) द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान भेजा जाना मुमकिन हुआ।

समाचारपत्र, पत्रिकाएं, किताबें आदि का प्रकाशन होने से भाषा के स्वरूप पर भी असर पड़ा। लेखन के लिए अब पद्य के स्थान पर गद्य का अधिक प्रयोग किया जाने लगा क्योंकि अब लिखे हुए को रट कर याद रखने की जरूरत नहीं रही । गद्य के अधिक प्रयोग ने गद्य की नई विधाओं के लिए जमीन तैयार की । कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, जीवनी आदि कई गद्य विधाएं सामने आई । यही नहीं कविताओं का शिल्पगत ढांचा भी बदला । अब कविता में छंदबद्धता की बजाए छंद मुक्ति पर जोर दिया जाने लगा ।

पत्र-पत्रिका और किताब के व्यापक प्रसार ने सूचना, शिक्षा, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान के प्रसार में अहम भूमिका निभाई है । जो चीजें पहले समाज के बहुत छोटे से हिस्से तक ही सीमित थी वे अब व्यापक जन समुदाय तक पहुंचने लगी । लोकतान्त्रिक समाज की सफलता ऐसे समाज में ही संभव हो सकती है जहां जनता जागरूक हो और जिसे यह पता हो कि उसके देश में और दुनिया में क्या और क्यों हो रहा है । जनता को जागरूक बनाने में समाचार पत्रों कि कितनी भूमिका रही है इसे यहाँ दोहराने कि जरूरत नहीं है । भारत में भी अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में प्रेस कि भूमिका का ऐतिहासिक महत्व रहा है ।

मुद्रण की तकनीक में अब काफी परिवर्तन आ चुका है । मुद्रण की तकनीक की शुरुआत सबसे पहले सांचों के रूप में हुई थी । बाद में टाइप अक्षरों का प्रयोग किया जाने लगा । छापने की मशीन को पैर से चलाया जाता था । बाद में उसे बिजली से चलाया जाने लगा आज प्रिंटिंग की पूरी प्रक्रिया बदल चुकी है । अब लेसर विधि का प्रयोग होता है और छापने की गुणवत्ता और गति दोनों में कई गुना ज्यादा तरक्की हो चुकी ही । मुद्रण में उपग्रह की जो भूमिका है उससे आप अच्छी तरह परिचित हैं ? इंटरनेट, इमेल ने आज भूगोल की सीमा को समाप्त कर एक देश को दूसरे देश से जोड़ दिया है।

श्रव्य माध्यम

श्रव्य माध्यम की शुराआत रेडियो के रूप में ही हुई । विद्युत तरंगों के माध्यम से एक स्थान पर को भंडारित कर उसे दूसरे स्थान पर भेजा जाता है जहां ये विद्युत तरंगें वापस आवाज में रूपांतरित होती है । यही तकनीक टेलीफोन में भी इस्तेमाल होती है । आवाज के माध्यम से संदेश को एक खास दूरी तक ही भेजा जा सकता है । लेकिन रेडियो ने अब आवाज को मनचाही दूरियों पर भेजना मुमकिन बना दिया । यह काम तत्काल भी किया जा सकता है और लंबे समय तक आवाज को भंडारित किया जा सकता है । मसलन, जब हम रेडियो पर समाचार सुनते हैं तो आमतौर पर वे समाचार उसी समय पढ़े जा होते हैं । और रेडियो स्टेशन से हमारे रेडियो सेट तक पहुंचते है । हम ठीक उसी समय उस समाचार को साथ-साथ सुन रहे होते हैं । लेकिन जो फिल्मी गीत हम अपने रेडियो पर सुनते हैं वह काफी पहले रिकार्ड किया गया होता है । यह रिकार्ड एक खास विधि से किया जाता है । जिस टेप या डिस्क पर आवाज को रिकार्ड किया जाता है, उसे जब चलाया जाता है तो उसमें अंकित आवाज हमें सुनाई देने लगती है । यह टेप और डिस्क लंबे समय तक उस अंकित आवाज को सुरक्षित रखती है । इस प्रकार नए श्रव्य माध्यमों ने आवाज को हजारों मील दूरी तक भेजना, उसे लंबे समय तक सुरक्षित रखना और उस आवाज की प्रतिलिपियां तैयार करना संभव बनाया ।

आवाज को संप्रेषित करने और सुरक्षित रखने की इन तकनीकी खोजों ने संचार के क्षेत्र पर जबर्दस्त असर डाला । वैयक्तिक संचार के क्षेत्र में टेलीफोन ने ही यह मुमकिन बनाया है कि कोई भी व्यक्ति अपने परिचित, संगे-संबंधी और मित्र से सीधे बात कर सकता है । वह चाहे जितनी दूरी पर क्यों न हो । टेलीफोन के कारण ही एक स्थान से दूसरे स्थान संदेशों का भेजा जाना इतना आसान हो गया कि उसका असर व्यावसायिक और राजनीतिक जगत पर देखा जा सकता है । एक जगह की राजनीतिक-आर्थिक गतिविधियों का असर दूसरी जगह पर लगभग साथ-साथ पड़ने लगा है । शेयर मार्केट की गतिविधियां आज पूरी दुनिया में लगभग एक दूसरे पर अपना असर डालते हुए तय होती है । रेडियो और टेलीफोन का उपयोग युद्ध के समय, प्राकृतिक विपदा के समय और ऐसे किसी भी समय किया जाता है जब जल्दी से जल्दी सूचना पहुंचाना जरूरी हो ।

ग्राहम बेल ने 1876 में पहली बार टेलीफोन का उपयोग संदेश भेजने के लिए किया था और मार्कोनी ने 1 छ 95 में रेडियो से संदेश संप्रेषित किया था । आज सौ साल बाद टेलीफोन और रेडियो की तकनीक में काफी बदलाव आ गया है । अब टेलीफोन के लिए तारों की जरूरत किसी भी स्तर पर नहीं रही । टेलीफोन को अब कहीं पर भी उपयोग में लाया जा सकता है । यही नहीं अब टेलीफोन के माध्यम का उपयोग सिर्फ आवाज को भेजने के लिए ही नहीं बल्कि मुद्रित सामग्री और दृश्य को भेजने के लिए भी किया जा सकता है । इसी प्रकार रेडियो का संजाल भी काफी फैल चुका है । बिना बिजली से चलने वाले ट्रांजिस्टर को कहीं भी ले जाया जा सकता है । श्रव्य माध्यमों की इसी विशेषता के कारण वायुयानों का परिवहन विकसित हो सका है । वायुयानों के लिए यह जरूरी है कि वे रेडियो के माध्यम से अपनी गतिविधियों की सूचना भू-स्थित स्टेशन पर भेजते रहें और उनसे जरूरी संदेश प्राप्त करते रहें । यही नहीं पृथ्वी से लाखों मील दूर उड़ कर जाने वाले अंतरिक्ष यानों के लिए भी रेडियो के दारा पृथ्वी से संपर्क बनाये रखना जरूरी होता है ।

रेडियो एक जनसंचार माध्यम है । इसने सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र को काफी दूर तक प्रभावित किया है । रेडियों द्वारा समाचार को ज्यादा जल्दी और ज्यादा बडी आबादी तक पहुंचाना संभव हो सका है । रेडियो ने ही गीतों और संगीत के विविध रूपों को जन-जन तक पहुंचाया है । रेडियो ने साहित्य की नई विधाओं को जन्म दिया है । मसलन, नाटक की एक विधा रेडियो नाटक रेडियो के कारण ही मुमकिन हो सकी है । इसी प्रकार रेडियो से विभिन्न विषयों पर वार्ताएं, महत्वपूर्ण लोगों के साक्षात्कार और महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी आम आदमी तक पहुंचाई जा सकती है । रेडियो के कारण वे स्थानीय प्रतिभाएं सामने आई हैं जिनको अन्यथा अपनी प्रतिभा को प्रकट करने के लिए मंच मिलना मुश्किल था । रेडियो ने अनौपचारिक शिक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान किया है । स्वास्थ्य, नागरिक सेवाओं, सामाजिक समस्याओं और दूसरे मसलों पर लोगों को जागरूक और शिक्षित करने में रेडियो महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । हालांकि टेलीविजन के आगमन ने रेडियो के प्रसारण को प्रभावित किया है । लेकिन भारत जैसे तीसरी दुनिया के देशों में यह अब भी संचार का अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है ।

दृश्य माध्यम

माध्यम की दृष्टि से संचार का तीसरा प्रकार दृश्य माध्यम है । इसके अंतर्गत दो माध्यम अत्यंत लोकप्रिय हैं - सिनेमा और टेलीविजन । सिनेमा का आविष्कार उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशक में हुआ था और टेलीविजन बीसवीं सदी के चौथे दशक में । सिनेमा से पहले फोटोग्राफी का आविष्कार

हो चुका था और जिसका इस्तेमाल अखबारों में किया जाने लगा था। इसी स्थिर फोटोग्राफी को गतिशील फोटोग्राफी में विकसित करने के क्रम में ही सिनेमा माध्यम की खोज हुई। सिनेमा लगभग तीस सालों तक बिना आवाज का रहा। लेकिन बाद में उसमें आवाज को शामिल करना संभव हो गया। इसी प्रकार पहले फिल्में सिर्फ श्वेत- श्याम होती थी लेकिन बाद में वह रंगीन होने लगी। फिल्म बनाने में काफी पैसा लगता है और उसके प्रदर्शन के लिए खास तरह के थिएटर की जरूरत होती है जिसमें प्रोजेक्टर के माध्यम से फिल्में दिखाई जाती है। इसलिए फिल्मों का उपयोग मनोरंजन के लिए अधिक किया गया और सूचना व शिक्षा के लिए कम। हालांकि वृत्तचित्रों, समाचार फिल्मों और कार्टून फिल्मों के माध्यम से इसने सूचना और शिक्षा के कार्य में भी योगदान किया। सिनेमा का माध्यम महंगा होते हुए भी उसका सार्वजनिक प्रदर्शन उतना महंगा नहीं होता। प्रति व्यक्ति एक निश्चित राशि का टिकट लेकर फिल्म प्रदर्शन के सिलसिले ने उसे आम आदमी के लिए मनोरंजन का सुलभ साधन बना दिया।

सिनेमा का प्रदर्शन सार्वजनिक रूप मे ही संभव होने के कारण उसको देखने के लिए लोगों को समय निकालकर सिनेमा घर तक जाना होता है। लेकिन टेलीविजन के आविष्कार ने उसे रेडियो की तरह घर-घर में सुलभ बना दिया। टेलीविजन के छोटे से सेट पर लोग अपने घर के ड्राइंग रूम में बैठकर दृश्य माध्यमों का आनन्द लेने लगे। टेलीविजन ने सिनेमा की सीमाओं को भी तोड़ा। अब आवाज की तरह विद्युत तरंगों के माध्यम से दृश्य भी समय और स्थान की सीमा लांघकर दुनिया के किसी भी हिस्से में पहुंचने लगे। हॉकी, क्रिकेट या किसी भी महत्वपूर्ण खेल घटना को जिसका लोग पहले आंखों देखा विवरण रेडियो के माध्यम से सुनते थे, अब वे उन्हें वैसे ही देखने लगे जैसे वे उनके आंखों के सामने घटित हो रही हों। टेलीविजन का उपयोग सूचना और शिक्षा के लिए भी किया जाने लगा। आज टेलीविजन के सैकड़ों चैनल उपलब्ध हैं। ये अलग- अलग भाषाओं में और अलग-अलग विषयों से संबंधित हैं। समाचारों के लिए अलग, खेलकूद के लिए अलग, मनोरंजन के लिए अलग, शिक्षा और ज्ञान के लिए अलग।

सिनेमा ने यदि कथात्मक फिल्मों की एक अत्यंत महत्वपूर्ण दृश्य विधा की शुरुआत की जो रंगमंच पर प्रस्तुत किए जाने वाले नाटकों का समय, स्थान और क्रिया तीनों दृष्टियों से क्रांतिकारी रूपांतरण था तो टेलीविजन ने महीनों और सालों तक लगातार चलने वाले धारावाहिक कथानकों की शुरूआत की जो नाटकों और फिल्मों से काफी अलग है। आज ये धारावाहिक दुनिया भर में मनोरंजन की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा बन गयी है। टेलीविजन अब महंगा माध्यम नहीं रहा है। भारत जैसे देश में वह लगभग सभी निम्न मध्यवर्गीय परिवारों तक अपनी पहुंच बना चुका है।

मुद्रित, श्रव्य और दृश्य तीनों माध्यम जो आधुनिक पूंजीवादी विकास के दौर में जन माध्यमों के रूप में विकसित हुए आज एक नए युग में प्रवेश कर चुके हैं। कंप्यूटर और इंटरनेट ने इन तीनों माध्यम को एक ही जगह उपलब्ध करा दिया है। उपग्रह और डिजिटल प्रणाली ने इन तीनों माध्यमों में अब तक जो भी तकनीकी उपलब्धियां हुई हैं उन तक मनुष्य की पहुंच आसानबना दी है। अब टेलीफोन के माध्यम से इंटरनेट से कंप्यूटर और टेलीविजन को जोड़ा जा सकता है और इनके द्वारा मुद्रित, श्रव्य और दृश्य तीनों तरह के संदेशों का आदान-प्रदान दुनिया के किसी भी हिस्से में किया जा सकता है। यही नहीं अब ऐसे सोफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति स्वयं भी अपना संदेश तीनों रूपों में भेज सकता है।

12.2.3 मानव संचार के आधार पर

मानव संचार के आधार पर संचार को चार प्रकारों में बांटा जा सकता है - लेखन, मुद्रण, दूरसंचार और अंतक्रियात्मक संचार । संचार के सभी माध्यमों को इन चारों प्रकार में विभाजित किया जा सकता है । मानव संचार से तात्पर्य है कि मनुष्य ने संचार के साधनों की खोज इन चार रूपों में की जिनके दारा मनुष्य ने अपने संदेशों को सुरक्षित रखने और उनकी प्रतिलिपियां बनाने और दूसरों तक पहुंचाने में कामयाबी हासिल की । इन चारों प्रकार के माध्यमों में मनुष्य पहले से ज्यादा तरह के संदेश ज्यादा तरह के तरीकों के माध्यम से ज्यादा तेजी के साथ और ज्यादा दूरी तक भेजना और प्राप्त करना संभव बना सका है । इस प्रकार इन्हें हम चार युगों में विभाजित कर सकते हैं जिनमें एक ऐतिहासिक क्रम भी है ।

लेखन

लिखना और चित्र बनाना संचार के ऐसे पहले माध्यम है जिनके द्वारा संदेशों को भौतिक रूप में सुरक्षित रखना संभव हो सका । जंगली जानवरों का शिकार करते हुए मनुष्य के गुहा चित्रों के माध्यम से हम आज यह जान सके है कि आदिम मनुष्य किस तरह के हथियार और किस तरह के औजारों का प्रयोग करता था । भाषा के आविष्कार के बाद लिपि की खोज एक तरह से संकेत प्रणाली का आविष्कार ही थी जिसके द्वारा संदेशों को सुरक्षित रखा जाने लगा । लेकिन लिखा किस पर जाए और लिखे हुए को कितने समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, यह प्रश्न भी था । शिलाओं पर लेखन स्थाई तो हो सकता था लेकिन उसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना संभव नहीं था । इसी प्रकार भोजपत्र या दूसरी तरह के पत्तों पर लिखकर सुरक्षित रखने की कोशिश की गई जो जल्दी खराब नहीं होते थे। फिर उनकी प्रतिलिपि का भी सवाल था । हर नई प्रतिलिपि के रखने लिखने में उतना ही श्रम और समय खर्च होता था जो पहली प्रतिलिपि के लिए हुआ था । इसलिए एक ग्रंथ की बहुत अधिक प्रतियां बनाना संभव नहीं था । ग्रंथ के हर पृष्ठ को बांध कर रखा जाता था ताकि वे एक साथ सुरक्षित रह सकें । संदेशों को सुरक्षित रखने का यह श्रमसाध्य तरीका कई सदियों तक अपनाया जाता रहा क्योंकि यही उस समय तक मानव संचार का सर्वोत्तम साधन था ।

मुद्रण

मुद्रण की विधि की खोज लेखन कार्य को अधिक स्थाई बनाने का साधन बनकर उपस्थित हुई । इसकी शुरूआत लगभग एक हजार साल पहले चीन में हुई थी । उस समय धातु के सांचे बनाकर उस पर संदेश को अंकित किया जाता था । यही विधि बाद मे यूरोप में भी अजमाई गई । मुद्रण की तकनीक में आज काफी अंतर आ गया है । लेकिन मुद्रण की खोज ज्ञान को सुरक्षित रखने में काफी सहायक सिद्ध हुई । मुद्रण का अर्थ था, किताबों की बड़ी संख्या में प्रकाशन । यानी कि वह ज्ञान जो पुस्तकों में सुरक्षित है और जो बहुत कम लोगों को ही उपलब्ध हो पाता था, वह अब मुद्रण की वजह से कहीं बड़ी संख्या में उपलब्ध हो सकता था । पुस्तकों ने साक्षरता बढ़ाने में भी मदद की । लोगों को पढ़ाने-लिखने की सामग्री आसानी से उपलब्ध होने लगी । इस तरह शिक्षा और ज्ञान दोनों क्षेत्रों में अधिक लोकतांत्रिक माहौल बना । अब शिक्षा और ज्ञान किसी खास वर्ग की बपौती नहीं रहे ।

मुद्रण अकेले ही लोकतांत्रिक माहौल बनाने मे सहायक नहीं हुआ और भी बहुत सारे नयेपरिवर्तन हो रहे थे । लेकिन इन परिवर्तनों को दूर-दूर तक पहुंचाने में मुद्रण की तकनीक ने काफी मदद की। उन्नीसवीं सदी में विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति. दर्शन, धर्म, समाजशास्त्र और साहित्य

के क्षेत्र में जो नए विचार आए और बहुत से ग्रंथ लिखे गये वे प्रिंटिंग प्रेस के जरिए ही लोगों तक पहुंचे और सामंती समाज की जंजीरों को तोड़ने में कामयाब हुए । प्रिंटिंग प्रेस ने ही किताबों के अलावा समाचारपत्र और पत्रिकाओं, पैंफ्लेट और दूसरी तरह की प्रचार सामग्री के जरिए लोगों और देशों को एक दूसरे के नजदीक लाने में मदद की । यह प्रेस ही था जिसने उन्नीसवीं सदी के मध्य में जब भारत अपना पहला स्वतंत्रता संग्राम लड़ रहा था, उसके बारे में लंदन बैठे मार्क्स के लिए यह मुमकिन बनाया था कि वे न्यूयार्क ट्रिब्यून में लगातार उसके बारे में लिखे । हमारे लिए आज ऐसी दुनिया की कल्पना करना मुश्किल है जिसमें किताबें न हो, समाचारपत्र न हो और पत्रिकाएं न हों ।

दूरसंचार

दूरसंचार जैसा कि शब्द से ही जाहिर है दूर से संचार । अभी हमने जिन दो संचार के प्रकारों की चर्चा की है, लेखन और मुद्रण वे दूर से संचार के अंतर्गत नहीं आते । लेकिन दूरसंचार यह नए युग की एक तकनीकी क्रांति है जिसमें संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान किसी मध्यम के जरिए भेजा जा सकता है । यहां माध्यम का मतलब तकनीकी माध्यम से है । वैसे तो पहले भी संदेशों को दूर-दूर भेजा जाता था । लोगों के जरिए, पक्षियों के जरिए. तेज वाहनों के जरिए । लेकिन दूरसंचार में तकनीकी माध्यम का उपयोग किया जाता है । दूरसंचार की शुरुआत टेलीग्राफ से हुई । टेलीग्राफ जिसे हिंदी में तार कहने का चलन है, तारों के माध्यम से संदेश भेजने का माध्यम था । दो स्थानों के बाद बिछे तारों के माध्यम से संदेश को भेजा और प्राप्त किया जाता था । इसमें संदेश विद्युत तरंगों के माध्यम से जाता था । संदेश तरंगों में संकेतित हो जाता था जिसे जहां प्राप्त किया जाता था वहां दुबारा उसे विसंकेतित किया जाता था । तारों का यह प्रयोग बहुत समय तक कायम नही रहा और बाद में बिना तारों की मदद से भी संदेश को भेजा जाने लगा ।

दूरसंचार के अंतर्गत दो तरह के संचार माध्यम आते हैं - एक वे जो अंतर्क्रियात्मक हैं जैसे टेलीफोन और तार; और दूसरे वे जो एकतरफा संचार के माध्यम है जैसे रेडियो, फिल्म और टेलीविजन। पहले प्रकार के संचार में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से संपर्क साधता है । तार में लिखित संदेश भेजा जाता है और लिखित संदेश ही प्राप्त होता है जबकि टेलीफोन में आवाज एक स्थान से दूसरे स्थान तक सफर करती है । टेलीफोन के जरिए दो व्यक्ति आपस में बात कर सकते हैं, बिल्कुल उसी तरह से जिस तरह आमने-सामने बैठकर बात करते हैं । रेडियो, फिल्म और टेलीविजन में संदेश एक से अनेक के पास पहुंचता है । आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित होने वाला समाचार सारे भारत में सुना जा सकता है । यह समाचार एक व्यक्ति पढ रहा है लेकिन उसे गांव और शहर हर कहीं जहां भी रेडियो और ट्रांजिस्टर उपलब्ध है सुना जा सकता है । यही बात फिल्म के बारे में सही है । बंबई में बनाई गई फिल्म को किसी भी शहर के सिनेमाघर में बैठकर देखा जा सकता है और टेलीविजन के कार्यक्रम भी वे सभी लोग देख सकते हैं जिनके पास टीवी सेट हैं और जिस पर वह चैनल देखने की सुविधा उपलब्ध है । दूरसंचार के ये माध्यम लिखित, श्रव्य और दृश्य तीनों रूपों में संदेशों को दूसरे स्थानों पर ले जाने में सक्षम हैं ।

अंतर्क्रियात्मक संचार

दूरसंचार के माध्यम की चर्चा करते हुए हमने अंतर्क्रियात्मक माध्यमों के बारे में बताया था। रेडियो, फिल्म और टेलीविजन के बारे में हमने कहा कि ये एक तरफा माध्यम है । मतलब यह है कि इसके माध्यम से संदेश भेजने वाला संदेशों को वापस प्राप्त नहीं कर सकता । इसलिए ये माध्यम

अंतवैयक्तिक या अंतर्क्रियात्मक नहीं है लेकिन टेलीफोन और तार में संदेश को प्राप्त भी किया जा सकता है । दूरसंचार के क्षेत्र में अब ऐसा कोई माध्यम नहीं है जो एकतरफा हो । अब रेडियो और टेलिविजन के माध्यम से भी दुतरफा संचार संभव है । ऐसा इसलिए संभव हुआ क्योंकि संचार प्रौद्योगिकी में दो ऐसे आविष्कार हुए जिसने संचार में एक नई क्रांति को जन्म दिया। पहला उपग्रह प्रणाली की शुरुआत। अब संदेशों को उन कृत्रिम उपग्रह के द्वार भेजा जाने लगा जिसे विभिन्न देशों ने अंतरिक्ष में एक खास चक्र में पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाने के लिए स्थिर रखा है । ये उपग्रह पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान बिना किसी बाधा के और कहीं अधिक बड़ी संख्या और तीव्रतम गति से भेजना संभव बनाते हैं । दूसरा आविष्कार कंप्यूटर का है । कंप्यूटर के जरिए संदेशों को असंख्य गुना भंडारित करना और उन्हें प्रसंस्कारित करना मुमकिन हो गया है । यह सारा परिवर्तन बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ है । इसने हर तरह के संचार माध्यमों की स्वायत्तता को समाप्त कर दिया है । अब उपग्रह प्रणाली के जरिए टेलीफोन के संदेशों को पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने पर सरलता से भेजना संभव हो गया है । केवल के माध्यम से किसी भी टेलीविजन के चैनल को कहीं पर भी देखा जा सकता है । फैक्स और ई-मेल जरिए लिखित संदेशों को दुनिया के किसी कोने में तत्काल भेजा जा सकता है । कंप्यूटर के मॉनीटर पर वे सब माध्यम उपलब्ध हो सकते है जिनका उल्लेख हमने किया है । कंप्यूटर के साथ टेलीफोन लाइन और मॉडम जोडकर हम दुनिया के किसी कोने से संपर्क साध सकते हैं । लिखित और मौखिक अंश भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं । इसने समाचारपत्रों पर असर डाला है । कंप्यूटर के मॉनीटर का टेलीविजन की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं । अब रेडियो और टेलीविजन के जरिए आपस में बातचीत की जा सकती है । इन्हें रेडियो काउंसलिंग और टेलीकान्फ्रेंसिंग नाम दिया गया है और इसका उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में होने लगा है ।

12.2.4 उद्देश्य के आधार पर

जनसंचार के माध्यम के आमतौर पर तीन तरह के उपयोग हैं । सूचना, शिक्षा और मनोरंजन। सूचना दोनों तरह की हो सकती है, वैयक्तिक भी और सामूहिक भी । मसलन, अपने संगे-संबंधी और मित्र को भेजा जाने वाला संदेश भी एक तरह की सूचना है लेकिन यह सूचना सामूहिक या जन महत्व की नहीं है । भले ही सूचना भेजने और पाने वाले के लिए इसका कितना ही महत्व क्यों न हो । ऐसी सूचनाएं जो व्यक्ति से व्यक्ति के पास जानी होती है संचार माध्यमों के विकास में उनका भी बड़ा महत्व होता है । आखिर डाक व्यवस्था का आरंभ इसी वजह से हुआ क्योंकि लोगों को अपने संदेश अपने प्रियजनों और परिचितों तक भिजवाने थे । संदेशों को भेजने और पाने के आज चिट्ठी-पत्री के अलावा तार, टेलीफोन, फैक्स, ई-मेल आदि कई माध्यम हो गए हैं ।

सूचना

सूचना के क्षेत्र में सामूहिक और जन महत्व की सूचनाओं का महत्व बहुत अधिक है । लोकतांत्रिक समाजों में जहां लोगों में राज्य व्यवस्था चलाने में सीधे भागीदारी करने का अधिकार हासिल होता है वहां यह भी जरूरी है कि वे यह जाने कि उन के देश और दुनिया में क्या घटित हो रहा है। सूचना का अधिकार और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अधिकार लोकतंत्र के बुनियादी अधिकार में शामिल किए गए हैं । सूचनाओं का यह अधिकार तभी संभव है जब संचार के माध्यमों का उपयोग सार्वजनिक महत्व की सूचनाओं को बिना किसी कानूनी अड़चन के लोगों तक पहुंचा सके। आज समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविजन सूचनाओं को निर्बाध संप्रेषित करने के तीन प्रमुख माध्यम है ।

लेकिन यह भी सही है कि ये तीनों माध्यम आज भी सभी लोगों तक पहुंच नहीं बना सके हैं । भारत जैसे देश मे जहां आबादी का चालीस फीसदी अभी भी गरीबी रेखा से जीवन यापन के लिए मजबूर हो और लगभग इतनी ही संख्या निरक्षर हो वहां सूचनाओं को पहुंचाने वाले साधन सभी लोगों तक कैसे पहुंच सकते हैं ।

शिक्षा

संचार माध्यमों का दूसरा मकसद शिक्षा के प्रसार में मदद करना है । लेखन, मुद्रण की प्रणालियों का विकास शिक्षा के विकास में किस तरह सहायक हुआ है, यह यहां दोहराने की जरूरत नहीं है । यही बात आधुनिक संचार साधनों पर भी लागू होती है । रेडियो और टेलीविजन ही नहीं टेलीफोन और सिनेमा ने भी शिक्षा के प्रसार में भूमिका निभाई है और निभा रहे हैं । शिक्षा दो तरह से प्रदान की जाती है - औपचारिक और अनौपचारिक । अनौपचारिक शिक्षा में तो इन माध्यमों की भूमिका सर्वविदित है लेकिन औपचारिक शिक्षा में भी अब इनका उपयोग होने लगा है । ऑडियो और विडियो कैसेटो में श्रव्य दृश्य कार्यक्रमों को भंडारित करने और उन्हें टेपरिकार्डर और विडियो रिकार्डर के माध्यम से वापस सुनने और देखने की सुविधा ने यह मुमकिन बनाया है कि शैक्षिक कार्यक्रमों को रिकार्ड करके उनका बार-बार उपयोग किया जाए । इसने रूबरू शिक्षा के तरीके पर निर्भरता को कम किया है यद्यपि उसके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता । जनसंचार के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकी के ज्ञान के प्रसार पर भौगोलिक और कालिक बाधाओं को लगभग खत्म कर दिया है । इंटरनेट के जरिए अब कोई भी ज्ञान किसी भी व्यक्ति के लिए जिसकी इंटरनेट तक पहुंच है असंभव नहीं रही है ।

मनोरंजन

मनोरंजन संचार माध्यमों का तीसरा लेकिन सर्वाधिक लोकप्रिय उपयोग है । इस दृष्टि से रेडियो, सिनेमा और टेलीविजन ने जनसंचार के क्षेत्र के व्यापक प्रसार में अहम् भूमिका निभाई है । दूसरी ओर इन माध्यमों के व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए भी द्वार खोले हैं । मनोरंजन जीवन की ऐसी जरूरत है जिसके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता । लोगों के जीवन में बहुत कुछ ऐसा होता है जो उसके लिए पीड़ादायक होता है । यदि कुछ पीड़ादायक नही है तो भी जीवन की एकरसता को तोड़ने की जरूरत होती है । यह एक रसता ऐसे अवसरों से टूटती है जो जीवन में आनन्द की सृष्टि करे । जनसंचार के माध्यमों में ऐसे बहुत से कार्यक्रम प्रसारित होते हैं जो लोगों को आनन्द प्रदान करते हैं। ऐसे ही कार्यक्रम मनोरंजन कार्यक्रम कहलाते हैं । कथात्मक फिल्में, धारावाहिक, रेडियो पर फिल्मी गीत और हास्य के अन्य कार्यक्रम मनोरंजन के अवसर प्रदान करते हैं । मनोरंजन का संबंध सभी तरह के माध्यमों से है । मुद्रित माध्यमों में किताबों में हर तरह का साहित्य प्रसारित होता है जो गंभीर और रचनात्मक भी होता है और सस्ता और लोकप्रिय भी । इसी तरह रेडियो से सस्ते, बाजारु गीत भी प्रसारित होते हैं और शास्त्रीय संगीत भी । इसी तरह फिल्मों में भी दोनों तरह की फिल्में बनती है । कहने का मतलब यह है कि मनोरंजन का कोई एक स्वरूप नहीं होता और न ही सभी लोग एक से कार्यक्रमों से मनोरंजन प्राप्त करते हैं । लोगों की अभिरुचियों की भिन्नता से मनोरंजन के अलग-अलग रूप विकसित हुए हैं । लेकिन माध्यमों के अंतर से मनोरंजन का स्वरूप बदल जाता है । दृश्य पर निर्भर करता है और श्रव्य माध्यम में आवाज और ध्वनि पर ।

मनोरंजन के इन माध्यमों ने एक उद्योग का रूप ले लिया है । फिल्म, टेलीविजन और रेडियो से प्राप्त होने वाले मनोरंजन के लिए इन माध्यमों के प्रसारण करने वाली संस्थाओं पर निर्भरता रहती

है । लेकिन अब ऐसे साधन आ गए हैं जिसके कारण लोग अपनी पसंद के मनोरंजक उत्पादक की प्रतिलिपि अपने पास रख सकता है । यह प्रतिलिपि कैसेट के रूप में या कोम्पेक्ट डिस्क के रूप में उपलब्ध होती है । संगीत और गीतों के ये कैसेट जिन्हें लोग घरों में टेपरिकार्डर और वी.सी.आर या सी.डी प्लेयर के माध्यम से देख और सुन सकते हैं । मल्टी मीडिया कंप्यूटर ने इन सब सुविधाओं को एक ही जगह उपलब्ध करा दिया है ।

बोध प्रश्न-1

1. संचार के माध्यम पर आधारित किसी एक माध्यम के विभिन्न रूपों का उल्लेख कीजिए ।
2. मानक संचार के नवीनतम प्रकार का उल्लेख कीजिए ।
3. श्रव्य माध्यमों का शिक्षा में किन क्षेत्रों में उपयोग किया जा सकता है ?
4. मुद्रण के विकास ने संचार को किस तरह प्रभावित किया?
5. अतंवैयक्तिक संचार का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।
6. संचार के माध्यमों की कौन- सी भूमिका आपको ज्यादा प्रासंगिक लगती है और क्यों?

12.3 व्यक्ति और जनसंचार

संचार का विकास मनुष्य ने दूसरे मनुष्यों के साथ संपर्क और संवाद के लिए किया । मनुष्य विभिन्न समाजों और समुदायों के रूप में अपने को संगठित कर सका यह इसीलिए संभव हुआ क्योंकि वह अपने ही तरह के दूसरे मनुष्यों के साथ संवाद करने में कामयाब हो सका था । यह संवाद स्थापित करने में उसकी मदद उन माध्यमों ने की जिन्हें हम आज संचार माध्यम के रूप में परिभाषित करते हैं । यह हम बता चुके हैं कि भाषा इसी तरह का एक माध्यम है जिससे संचार संभव होता है । मनुष्य कई रूपों में अपना जीवन जीता है । सबसे पहले वह एक व्यक्ति है जो दूसरे किसी भी मनुष्य से अलग उसका अस्तित्व है । वह किसी परिवार का सदस्य है । किसी का बेटी, किसी पत्नी, किसी की मां और किसी की बहन है । इसी प्रकार वह विभिन्न समुदायों का हिस्सा है । वह किसी देश का नागरिक है, स्त्री या पुरुष है, अधिकारी या क्लर्क है । उद्योगपति या मजदूर किसान या भूस्वामी है । राजनेता या पुरोहित है । हिंदू या मुसलमान है । आस्तिक या नास्तिक है । इन सभी रूपों में उसका व्यवहार और उसका सोच अलग-अलग होता है । मनुष्य एक जटिल प्राणी है । एक साथ कई तरह की भूमिका निभाता हुआ वह अपना जीवन जीता है । मनुष्य का संचार से संबंध इन सभी रूपों के साथ होता है। यहां हम संचार और मनुष्य के अंत:संबंधों को इसी परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करेंगे ।

12.3.1 जनसंचार का विकास और मनुष्य

संचार का विकास जैसा कि हम बता चुके हैं मनुष्य इसीलिए कर सका क्योंकि उसे दूसरों के साथ संवाद की जरूरत महसूस हुई । इसलिए संचार का विकास सामाजिक प्रक्रिया के रूप में हुआ न कि वैयक्तिक प्रक्रिया के रूप में । संचार के सभी माध्यम संकेतों की भाषा पर आधारित हैं । संकेतों का प्रयोग मनुष्य तभी कर सकता है जब एक संकेत का अर्थ सभी के लिए वही हो । अगर प्रत्येक व्यक्ति भिन्न-भिन्न सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है तो उसे समझना किसी के लिए भी मुश्किल हो जाएगा । संचार के लिए यह जरूरी है कि हम जो भी सांकेतिक भाषा इस्तेमाल करें वह सबकी समझ में आए ।

संचार के लिए माध्यमों का प्रयोग सामाजिक होते हुए भी वह विभिन्न समुदायोंऔर व्यक्तियों के लिए एक समान रूप में उपलब्ध होता । सामाजिक स्तर पर मनुष्य के जितने स्तर हैं संचार के माध्यमों के प्रयोग में भी उसका प्रभाव दिखाई देता है । मसलन, भाषा का ही प्रश्न लें । हमारे देश में कई भाषाएं इस्तेमाल होती हैं । हिंदी, उर्दू बंगला, तमिल, अंग्रेजी आदि । प्रत्येक व्यक्ति अपनी मां की गोद से कोई न कोई भाषा सीखकर बड़ा होता है । वह अपनी मातृभाषा का चयन नहीं करता बल्कि वह उसे अपने परिवार से विरासत में मिलती है । लेकिन बड़ा होने पर उसे मालूम पडता है कि समाज में सभी भाषाओं का दर्जा समान नहीं है । अंग्रेजी को समाज के अभिजात वर्ग की भाषा होने का गौरव प्राप्त है और उसकी अपनी मातृभाषा को भाषा का ही दर्जा नहीं दिया गया है । इसी प्रकार संचार के सभी साधन सभी को उपलब्ध नहीं है । किसी के पास रेडियो भी नहीं है तो किसी के पास 29 इंच का रंगीन टीवी है । किसी के पास इतना पैसा नही है कि पोस्टकार्ड खरीद सके और किसी के घर के इंटरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है । कहने का तात्पर्य यही है कि संचार का विकास के क्षेत्र में जो भी उपलब्धि अब तक अर्जित की जा चुकी है उसका लाभ सभी को समान रूप में नहीं मिल सका है ।

संचार के इन साधनों के उपयोग का ही नहीं उनके माध्यम से अभिव्यक्ति होने वाले संदेश में भी हमें यह अंतर नजर आता है । सूचना, शिक्षा और मनोरंजन सभी क्षेत्रों में जो सामग्री संप्रेषित होती है उसका संबंध आम आदमी के जीवन से बहुत कम होता है । संचार के नवीनतम साधनों का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग का लाभ आम आदमी को कैसे मिल सकता है जब उनका एक बड़ा हिस्सा बुनियादी शिक्षा सुविधाओं से ही वंचित है । ऐसे में कंप्यूटर या इंटरनेट की शिक्षा के लिए उपयोग और उनको विश्वविद्यालयों में उपलब्ध कराने के लिए शिक्षा के बजट का एक हिस्सा उपलब्ध कराने का लाभ उन मुट्ठी भर लोगों को ही मिल पाता है जो पहले से ही सब तरह की सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं । इन सबके बावजूद सूचना और अभिव्यक्ति के अधिकारों की बात बहुत जोर शोर से की जाती है । संचार के प्राय: सभी साधनों पर समाज के प्रभुवर्ग का अधिकार है । वे उनका उपयोग अपने हित के लिए करते हैं और बताते यह है कि वे समाज और लोगों के पक्ष में ऐसा कर रहे हैं । दूसरी तरफ वे व्यक्ति के अधिकारों की बात भी करते हैं । ऐसे में इस बात पर विचार करने की जरूरत है कि संचार और व्यक्ति के संबंधों का वास्तविक स्वरूप क्या है और क्या होना चाहिए । संचार के साधनों के साथ वह जो संबंध स्थापित करता है उसको कौन-सी बातें प्रभावित करती है? क्या वह सामाजिक प्राणी के रूप में ही संचार के साथ अपने संबंध बनाता है या उसमें उसकी वैयक्तिकता का भी हाथ होता है?

12.3.2 जनसंचार और सामाजिक

मनुष्य संचार के माध्यमों का सबसे पहला उपयोग अपने परिवार में करता है । वह भाषा का उपयोग अपने परिवार जनों को बोलते हुए देखकर करता है और उसी भाषा का इस्तेमाल करता है जो परिवार के दूसरे सदस्य करते हैं । वह वहीं भाषा सबसे पहले सीखता है जो उसके घर में बोली जाती है । लेकिन भाषा का प्रयोग सिर्फ संदेशों का आदान-प्रदान ही नहीं है वह सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है । उसमें लोगों के व्यवहार का सांस्कृतिक ढांचा भी व्यक्त होता है और बालक उसे भी इस प्रक्रिया में सीखता है । वह यह समझने लगता है कि किसको आदर देकर संबोधित करना चाहिए और किसको आदर देने की जरूरत नहीं है । वह यह भी सीखता है कि अपने भावों और विचारों को कब छुपाना चाहिए और कब उसे बनावटी ढंग से व्यक्त करना चाहिए । बालक घर में ही यह सीखता

है कि टेलीविजन पर कौन से कार्यक्रम बड़ों को देखने के लिए होता है और कौन से बच्चों के लिए। कौन से प्रोग्राम अच्छे हैं और कौन से बुरे। जैसे-जैसे वह बडा होता जाता है संचार के साधनों के प्रति उसके नजरिये को प्रभावित करने वाले कई और तत्व भी शामिल हो जाते हैं। स्कूल, अडोस-पडौस, दोस्त आदि भी उसके नजरिये को प्रभावित करने लगते हैं। यही नहीं उसके अनुभवों का जैसे-जैसे विस्तार होता जाता है वह स्वयं अपने विवेक का भी इस्तेमाल करने लगता है। वह सिर्फ दूसरों के नजरिए को अपनाता ही नहीं उनके आगे सवालिया निशान भी लगाता है।

जनसंचार के साधन किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं होते वह व्यापक जन समूह के लिए होते हैं। यह व्यापक जन समूह कौन-सा होगा इसका निर्धारण इस बात से होता है कि संदेश को किस भाषा में प्रस्तुत किया जा रहा है। प्राय: सभी माध्यमों में भाषा का इस्तेमाल जरूर होता है। यहां तक कि दृश्य माध्यम में भी भाषा ही विभाजन का आधार होती है। भाषा शेष चीजों को भी निर्धारित करती है। यानी जो कार्यक्रम जिस भाषा में है वह उस भाषाई समुदाय को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इससे यह तय होता है कि वह कार्यक्रम उस भाषाई समुदाय को संबोधित है। लेकिन कोई भी भाषाई समुदाय एक स्तरीय नहीं होता। वह विभिन्न वर्गो और विभिन्न स्तरों में बंटा होता है। उसमें आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वैविध्य होता है। इन कार्यक्रमों में उन सभी को एक साथ शामिल करना संभव नहीं होता। जनसंचार में विविधता का समावेश समाज में व्याप्त विविधता से ही होता है। जनसंचार माध्यमों की कोशिश होती है कि वे अपने ग्रहीता समुदाय के बीच अधिक से अधिक लोकप्रिय हों इसलिए वे उनके बीच ऐसे संदेशों को लेकर ही उपस्थित होते हैं जिससे कि उसको स्वीकार करने में किसी तरह की वैचारिक और भावनात्मक बाधा उपस्थित न हो। इसलिए जनसंचार माध्यम जहां एक तरफ उन विविधताओं को स्वीकार करता है वहीं उनको ऐसे सांचे में ढालने की कोशिश भी करता है जिसमें यह विविधता नष्ट होने लगती है।

संचार माध्यमों में विभिन्न तरह के कार्यक्रमों के प्रति अभिरुचि का विकास व्यक्ति अपने सामाजिक और वर्गीय स्तर क अनुसार ही करता है। आमतौर पर उसकी अभिरुचियों को समाज के प्रभुवर्ग द्वारा नियंत्रित किया जाता है। वह उसे ही सबसे शिष्ट और ग्राह्य अभिरुचि मानने लगता है और उन्हें सीखने और उनका अनुकरण करने की कोशिश करने लगता है। आमतौर पर उसकी वैयक्तिक अभिरुचियां जो दूसरे से अलग नजर आती है वे प्राय: किसी-न-किसी सामुदायिक ढांचे से मेल खाती है। उसकी अभिरुचियों में कुछ भी ऐसा नहीं होता जो दूसरों में अनुपस्थित हो। इस प्रकार हम एक खास दौर में लोगों की अभिरुचियों में एक खास तरह का पैटर्न देख सकते हैं और उनके अध्ययन द्वारा हम यह पता लगा सकते हैं कि समाज की गतिशीलता किस तरफ है।

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का आस्वादन लोग सामूहिक रूप से भी करते हैं और वैयक्तिक रूप से भी। रेडियो और ट्रांजिस्टर को लोग निजी तौर पर भी सुन सकते हैं और सामूहिक रूप में भी। लेकिन फिल्में थियेटर में दूसरे लोगों के साथ ही देखते हैं और टेलीविजन के साथ ही देखते हैं और टेलीविजन को हम परिवार के सदस्यों के साथ देखते हैं। फिल्म देखने के लिए हमें घर से बाहर जाना पड़ता है और टेलीविजन के लिए हमें घर में रहना पड़ता है। टेलीविजन हमारी सामाजिक गतिविधियों को बाधित करता है। हमें घर में ही मनोरंजन और सूचना का साधन उपलब्ध करा देने के कारण हमें अन्य तरह की सामाजिक गतिविधियों में जाने से रोकता है। टेलीविजन पर फिल्मों का प्रदर्शन भी किए जा सकने के कारण मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम भी अब घर में ही उपलब्ध हो गया है। इसने भी सामाजिक गतिविधियों पर असर डाला है।

टेलीविजन और रेडियो जैसे माध्यम जो आमतौर पर परिवार के सदस्यों के साथ देखे और सुने जाते हैं, उनमें कार्यक्रमों का निर्माण करने से पहले इस बात का ध्यान रखना पडता है कि उनको लोग परिवार के सदस्यों के साथ देख और सुन सके। कई बार इस आधार पर भी कार्यक्रमों की आलोचना की जाती है । कहने का तात्पर्य यह है कि जनसंचार के विभिन्न कार्यक्रमों की अंतर्वस्तु का निर्धारण इस बात से भी होता है कि उसका आस्वादन कहां और किस रूप में किया जाने वाला है ।

12.3.3 जनसंचार और व्यक्ति

जनसंचार का मकसद जनसमूह तक पहुंचना होता है लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उसका आस्वादन व्यक्ति के रूप में ही करता है । यही नहीं उसके लिए कार्यक्रम के निर्माण में भी सामूहिकता रहती है । रेडियो, फिल्म और टेलीविजन के कार्यक्रम कोई एक अकेला व्यक्ति नहीं बनाता जैसे कि कोई एक व्यक्ति कविता लिख सकता है, चित्र बना सकता है या कोई संगीत वाद्य बजा सकता है या गाना गा सकता है । लेकिन जब यह जनसंचार के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उसके लिए सामूहिक रूप से काम करना जरूरी हो जाता है । यही नहीं उसके लिए यंत्रों पर निर्भर रहना भी जरूरी हो जाता है । इन सबके बावजूद वहां प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भूमिका वैयक्तिक स्तर पर ही निभानी होती है । फिल्म की पटकथा लिखने वाला लेखक, उसका निर्देशन करने वाला निर्देशक, उसमें अभिनय करने वाले अभिनेता और कैमरामेन, संगीतकार, साउडरिकार्डिस्ट सभी के कार्यों में सामंजस्य और अपने क्षेत्र के सर्वोत्तम ज्ञान और कौशल की अभिव्यक्ति करनी होती है । ऐसा न होने पर फिल्म का संपूर्ण प्रभाव कमजोर पड़ सकता है । इन सभी लोगों के लिए फिल्म का अपना अर्थ होता है । वे अपने- अपने ढंग से फिल्म की काल्पनिक संरचना अपने मानस में निर्मित करते हैं और उसी को वास्तविक रूप देन की कोशिश करते हैं । उनकी यह काल्पनिक संरचना फिल्म की पटकथा और निर्देशक की समझ से उत्पन्न होती है । उसी के अनुसार वह अपनी भूमिका तय करता है । इसलिए यह समझना उचित नहीं है कि जनसंचार माध्यमों में व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण नहीं होती । मसलन, हम अभिनय पक्ष को ही लें । यदि अच्छी पटकथा और अच्छा निर्देशन है लेकिन अभिनेता में उन्हें भावपूर्ण ढंग से अभिनीत की क्षमता नही है तो फिल्म अपना प्रभाव नहीं छोड़ सकेगी । संवाद की उत्कृष्टता उसके कथ्य और भाषा में ही नहीं उसके बोले जाने के अंदाज में भी निहित होती है । यही नहीं सही बात सही जगह पर कही गई हो । इसलिए यह जरूरी है कि फिल्म या कोई भी जनसंचार माध्यम उनमें व्यक्ति की भूमिका की अवहेलना नहीं कर सकता ।

आस्वादन के स्तर पर भी यह बात लागू होती है यह सही है कि व्यक्ति की अभिरुचियों का निर्माण समाज में ही होता है लेकिन उसके आस्वादन की प्रक्रिया उसके मानस में नितांत वैयक्तिक रूप में चलती है । वह संदेश के अर्थ को सामाजिक प्रक्रिया के रूप में ही ग्रहण करता है लेकिन सामाजिक प्रक्रिया प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न ढंग से चलती है । एक ही परिवार में और एक से सामाजिक परिवेश में पले-बढे व्यक्ति की अभिराचियां एक-सी नहीं होती । वे एक ही तरह के अनुभवों पर भिन्न-भिन्न ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं क्योंकि परिवेश, संस्कार और शिक्षा की एकता के बावजूद वे व्यक्ति पर यांत्रिक ढंग से अपना प्रभाव नही छोड़ते । वे इन प्रभावों को अपने ढंग से ग्रहण करते हैं । उन पर उनकी प्रतिक्रिया उनके वैयक्तिक स्वभाव और विचार से तय होती है ।

जनसंचार की रचना को व्यक्ति किस रूप में ग्रहण कर रहा है यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस उम्मीद के साथ रचना को ग्रहण कर रहा है । एक फिल्मी गीत एक साथ ही कई तत्वों को अपने में समाए हुए होता है । उसमें जो शब्द होते हैं उनका एक अर्थ होता है । उसे संगीत की किसी बंदिश में बांधा गया है और उसे किसी गायक या / और गायिका ने गाया होता है। अब उस गीत को सुनने वाले पर निर्भर करता है कि वह किस पक्ष को पसंद करता है । कुछ लोगों के लिए उसका संगीत महत्वपूर्ण होता है, कुछ के लिए उसकी गायकी और कुछ के लिए उसके बोल। लेकिन ये सभी बातें भी इस बात पर निर्भर करती है कि जिस पक्ष को वह पसंद कर रहा है उसकी समझ उसकी किस तरह की है और उस पक्ष के बारे में उसकी अभिरुचि का स्तर किस तरह का है।

रचना के साथ व्यक्ति अपना तादात्मय स्थापित करने की कोशिश करता है । वह किस पक्ष के साथ तादात्मय स्थापित करेगा यह उसकी अपनी अभिरुचि और आस्वादन स्तर से तय होगा । प्रत्येक के लिए रचना का अपना अर्थ होता है । यह बात सिर्फ मनोरंजन के कार्यक्रमों पर ही लागू नहीं होती। बीमा क्षेत्र को विदेशी कंपनियों के लिए खोले जाने की सूचना जिसे वह अखबार, रेडियो या टेलीविजन से प्राप्त करता है उसके प्रति उसका वैचारिक रुख इस बात से तय होगा कि उसका राजनीतिक - आर्थिक दृष्टिकोण क्या है । यदि वह ऐसे मामले के बारे में कोई राय नहीं बनाता तो यह भी उसके राजनीतिक-आर्थिक दृष्टिकोण को व्यक्त करेगा । लेकिन यह दृष्टिकोण ऐसी कई बातों से तय हो रहा है कि जिसके आधार पर वह इस सूचना का अर्थ ग्रहण करता है । इसलिए संचार माध्यमों से प्रसारित होने वाला प्रत्येक संदेश प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न अर्थ रखता है और उसके लिए उसका अर्थ ही सही अर्थ है क्योंकि उसे उसने स्वयं अर्जित किया है ।

रचना के अर्थ में भिन्नता का आना ही यह बताने के लिए पर्याप्त है कि प्रत्येक रचना सिर्फ वही नहीं व्यक्त करती जो उसमें समाहित है बल्कि वह भी व्यक्त करती है जो आस्वादन की प्रक्रिया के दौरान ग्रहिता के मानस में उत्पन्न हुई है । यह नया अर्थ रचना और ग्रहीता के पारस्परिक संवाद से उत्पन्न हुआ है । लेकिन यह नया अर्थ इतना विशिष्ट भी नहीं होता कि किसी अन्य के अर्थ से उसका कोई संबंध नहीं होता । सच्चाई इसके विपरीत है । ग्रहिताओ का बडा समूह अपने- अपने ढंग से प्रतिक्रिया करता हुआ कुछ सामान्य निष्कर्षो पर पहुंचते हैं । ये सामान्य निष्कर्ष किसी मनोरंजक कार्यक्रम को सफल या असफल बनाते हैं और किसी सूचना के प्रति जनमत की राय का निर्माण करते है और स्वयं व्यक्ति की वैचारिकता का बोध कराता है ।

टेलीविजन जैसे माध्यमों ने एक काम यह भी किया है कि बहुत से ऐसे अनुभव जो पहले वयस्कों के लिए थे, उसको अब बच्चे भी देखते हैं । यहा तात्पर्य सिर्फ यौन संबंधी अनुभवों के दृश्यांकन से नहीं है । टेलीविजन में ऐसे बहुत से अनुभवों और गतिविधियों को दिखाया जाता है जिन्हें देखकर समझने योग्य मानसिक क्षमता बच्चों में नहीं होती । मसलन, हिंसा के दृश्यों को लिया जा सकता है । इनका बारबार दिखाया जाना अपरिपक्व मानस पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है । लगातार चलती गोलियां और बमवर्षा और मरते हुए लोगों के दृश्य से जुड़ी भयावहता को वे रोमांचकारी और आनंददायक मानकर कई बार जीवन में भी उसका अनुकरण करने की कोशिश करते हैं । इसी प्रकार टेलीविजन पर बहुत अधिक विलासपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति से युवा वर्ग में सामाजिक दायित्व के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण पनपने लगता है । वस्तुत: जनसंचार माध्यमों के साथ व्यक्ति बहुत जटिल होता है । वह अनजाने ढंग से इन माध्यमों के प्रभाव में आ जाता है, खासकर वे लोग जिनमें इन माध्यमों के प्रति

विवेकपूर्ण और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की कोशिश नहीं दिखाई देती । जनसंचार और व्यक्ति के इन जटिल और परस्पर प्रभाव डालने वाले संबंधों को समझना बहु त जरूरी है अन्यथा हम जनसंचार के सामाजिक पक्ष को पूरी तरह नहीं समझ सकते ।

बोध प्रश्न-2

1. जनसंचार माध्यमों को जनसंचार क्यों कहा जाता है ?
2. टेलीविजन पर समाचार वाचन की प्रक्रिया वैयक्तिक होती है या सामूहिक ?
3. आस्वादन की प्रक्रिया पर किन-किन बातों का प्रभाव पड़ता है ?

12.4 सारांश

इस इकाई में हमने संचार के विभिन्न प्रकारों और जनसंचार और व्यक्ति के परस्पर संबंधों पर विचार किया है । संचार को हम कई आधारों पर विभाजित कर सकते हैं इस इकाई में संचार को हमने चार प्रकार से विभाजित किया है संप्रेषण की प्रकृति के आधार पर माध्यम के आधार पर मानक संचार के आधार पर और उद्देश्य के आधार पर । संप्रेषण की प्रकृति के आधार पर संचार के कई उपविभाजन किए जा सकते हैं सबसे पहला विभाजन व्यक्ति के अतंर्मन में चलने वाली संचार प्रक्रिया से है, जिसे हम अतंवैयक्तिक संचार कह सकते हैं दूसरे प्रकार का विभाजन अंतर वैयक्तिक विभाजन है जिसमें दो व्यक्ति परस्पर संवाद द्वारा संचार करते हैं तीसरे प्रकार का विभाजन लघु समूह संचार और चौथे प्रकार का विभाजन जनसंचार है ।

संचार के प्रकार का दूसरा आधार माध्यम है । संचार माध्यम की दृष्टि से तीन तरह के हैं। मुद्रित माध्यम श्रव्य माध्यम और दृश्य माध्यम ये तीनों माध्यम आधुनिक प्रौद्योगिकी के विकास के कारण अस्तित्व में आए हैं आधुनिक पूंजीवादी समाजों की जरूरतों ने नए तरह के संचार माध्यमों को पैदा किया । इनमें समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि प्रमुख हैं । ये सभी माध्यम मुद्रित श्रव्य और दृश्य माध्यमों में विभाजित किए जा सकते हैं

संचार के प्रकार का तीसरा आधार मानव संचार है । मानव संचार को चार उपभागों में विभाजित किया जा सकता है - लेखन मुद्रण दूरसंचार और अतंर्क्रियात्मक संचार । लेकन संचार का सर्वाधिक पुराना प्रकार है और उसकी उपयोगिता आज भी बनी हु ई है मुद्रण का आरंभ वैसे तो एक हजार साल पहले हो गया था लेकिन इसकी जनसंचार के रूप में शुरुआत आधुनिक युग में ही हु ई है । दूरसंचार के सभी साधनों का आविष्कार तो उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की देन है और इनके पीछे विज्ञान के क्षेत्र में और इलेक्ट्रानिक का आगमन है । इसने संचार की को बदल दिया है संचार के क्षेत्र में चौथा महत्वपूर्ण विकास ऐसे माध्यमों की खोज है जिन्हें हम अंतर्क्रियात्मक कह सकते हैं ये दुतरफा संचार है और अब संचार का कोई माध्यम ऐसा नहीं है जिसे दुतरफा ढंग से इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है ।

संचार के प्रकार का चौथा आधार उद्देश्य है संचार के माध्यमों के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं : सूचना का संप्रेषण, शिक्षा का प्रसार और मनोरजंन उपलब्ध कराना । संचार के प्रकार को हर आधारों पर भी विभाजित किया जा सकता है आमतौर पर जनसंचार के सभी साधन इन तीनों उद्देश्यों के लिए उपयोगी साबित हो सकते हैं । इस इकाई में हमने इस पक्ष पर विस्तार से विचार नहीं किया है क्योंकि हमारा मकसद संचार के प्रकारों की चर्चा करना ही है ।

संचार और व्यक्ति के पारस्परिक संबंध पर भी इस इकाई में विचार किया गया है । संचार के साधनों का विकास मनुष्य की जरुरत के लिए हुआ है। मनुष्य को दूसरे मनुष्य के साथ संवाद और सपर्क की जरुरत आरंभ से ही रही है । संचार का माध्यम तभी संचार के लिए उपयोगी है जब वह एक से अधिक लोगों के बीच संवाद में सक्षम हो सके । संचार में संकेतों की भाषा का इस्तेमाल होता है । यह संकेतों की भाषा तभी उपयोगी होती है जब वह भेजने वाले और पाने वाले दोनों के लिए बोधगम्य हो । संचार के साधनों का उपयोग मनुष्य सामाजिक के रूप में करता है इसलिए उसके निर्माण और आस्वादन में उसकी इस सामाजिक स्थिति की अहम भूमिका होती है । लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उसके साथ अपने संबंधों का निर्णय व्यक्ति के स्तर पर करता है यदि वह उसके निर्माण पक्ष में जुड़ा है तो वह व्यक्ति के रूप में ही अपना योगदान करता है जो अन्य व्यक्तियों के योगदान के साथ मिलकर संचार के लिए संदेश का निर्माण करता है । इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति जनसंचार के उत्पाद का आस्वादन व्यक्ति के रुप में करता है और उसका प्रभाव भी सभी व्यक्तियों पर अलग-अलग ढंग से पड़ता है । एक ही रचना के बारे में लोगों की मिन्न-मिन्न राय का कारण यही होता है कि लोगों के सोच, संस्कार और शिक्षा के साथ-साथ उसका विवेक भी भिन्न राय बनाने में भूमिका निभाते हैं ।

जनसंचार का निर्माण और आस्वादन में व्यक्ति की निजी समझ की अहमियत के बावजूद उसका आस्वादन करने वाले सभी लोग प्राय: एक से निष्कर्षो पर पहुंचते हैं । इसका कारण यही है कि व्यक्ति चाहे कितने ही निराले या विशिष्ट ढंग से क्यों न सोचे लेकिन यह सोचना सामाजिक दायरे में रहकर ही है ।

जनसंचार के व्यक्ति के साथ संबंधों की बात करते हुए हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि सभी उम्र के लोगों पर संचार का असर एक सा नहीं होता । बच्चे के अपरिपक्व मस्तिष्क पर यदि ऐसी बातों को बार-बार डाला जाता है जिसे समझने की उसमें सभी क्षमता विकसित नहीं हुई है तो वह उसके व्यक्तित्व निर्माण पर नकारात्मक असर भी डाल सकता है । इसी प्रकार युवा वर्ग के सामने भी मीडिया जीवन की ऐसी तस्वीर पेश कर सकता है जो उसके व्यक्तित्व को गलत दिशा की ओर मोड़ सकती है । इसलिए संचार और व्यक्ति के अतं:संबंधों को सही परिप्रेक्ष्य और समाज के विकास को मद्देनजर रखते हुए विचार करना चाहिए ।

12.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

देवेन्द्र इस्सर (1995) : जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास, इद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली

जवरीमल्ल पारख (1996) : जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली

ब्रजमोहन गुप्त : जनसंचार माध्यम : विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

James Curran, Michael Gurevitch and Janet Woollacott (eds) Mass Communication and Society (1987), Edward Arnold and The Open University Press, Londan

12.6 निबंधात्मक प्रश्न

1. जनसंचार के ऐसे माध्यम का उल्लेख कीजिए जिसने अंतर वैयक्तिक संचार में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया है? भारत में ये माध्यम सभी को समान रूप से उपलब्ध न होने के क्या कारण है और उसने संचार के क्षेत्र में विषमता को कैसे बढ़ावा दिया है?

2. मानव संचार के आधार पर संचार के विभिन्न प्रकारों का विवेचन कीजिए ।
3. टेलीविजन पर कई ऐसे चैनल हैं जो सिर्फ संगीत के कार्यक्रमों का ही प्रसारण करते हैं । इन कार्यक्रमों को कुछ दिन ध्यानपूर्वक देखिए और फिर इस बात पर विचार कीजिए कि
   क. क्या इन चैनलों से संगीत को बढ़ावा मिलता है?
   ख. क्या इनसे भारतीय संगीत की शास्त्रीय और लोक परंपराएं सुरक्षित रह सकेंगी?
   ग. ये युवा पीढ़ी को किस तरह के जीवन मूल्य की ओर प्रेरित करते हैं?
   घ. अगर इन चैनलों का असर आपकी दृष्टि में नकारात्मक है तो उससे कैसे बचा जा सकता है?
   ङ. आपका यह सुझाव लोकतांत्रिक है या अलोकतांत्रिक?
4. समाचारपत्रों और दूसरे माध्यमों में विज्ञापनों को पर्याप्त जगह दी जाती है । विज्ञापन जिस वस्तु का प्रचार करते हैं उसके अलावा भी क्या वे कोई प्रभाव छोड़ते हैं? कोई ठोस उदाहरण देकर अपने मत को स्पष्ट कीजिए ।
5. अपने मित्र या भाई के साथ किसी ऐसी कहानी, फिल्म या धारावाहिक पर विचार कीजिए और ध्यान दीजिए कि आपके और उसके नजरिये में क्या अंतर है और इसका कारण क्या है?

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की सूची

	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
1.	स्नातक उपाधि प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
2.	भोजन एवं पोषण में सर्टिफिकेट	6 माह
3.	कम्प्यूटर ज्ञान एवं प्रशिक्षण का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
4.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग	6 माह
5.	पंचायती राज प्रोजेक्ट में प्रमाण-पत्र	6 माह
6.	संस्कृति एवं पर्यटन में प्रमाण-पत्र	6 माह
7.	महिलाओं में वैद्यानिक बोध में प्रमाण-पत्र	6 माह
8.	राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति में प्रमाण-पत्र	6 माह
9.	बी.ए.एफ./बी.सी.एफ. (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)	1 वर्ष
10.	एम.ए.(अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी)	2 वर्ष
11.	एम.बी.ए.	3 वर्ष
12.	पी.जी.डी.एच.आर.एम.	1 वर्ष
13.	पी.जी.डी.एफ.एम.	1 वर्ष
14.	पी.जी.डी.एम.एम.	1 वर्ष
15.	पी.जी.डी.एल.एल.	1 वर्ष
16.	टी.एच.एम.	1 वर्ष
17.	डी.एन.एच.ई.	1 वर्ष
18.	डी.सी.ओ.	1 वर्ष
19.	डी.एल.एस.	1 वर्ष
20.	डी.सी.सी.टी.	18 माह
21.	बी.जे.(एम.सी.)	1 वर्ष
22.	एम.जे.(एम.सी.)	2 वर्ष
23.	बी.लिब.	1 वर्ष
24.	पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष
25.	बी.एड.	2 वर्ष
26.	पी.एच.डी.	3 वर्ष
27.	पी.जी.डी.ई.एस.डी.	1 वर्ष